भूमिका ।

या पोथी तुलसीकृत रामायण, वाल्मीकीय योगवासिष्ठ, और महावीर चरित्र रो आशरो ले'ने के'णी (उपन्यास) री नांई लिखी है। भगवान् मर्यादा पुरुषोत्तम रो चरित्र लिखतां, वड़ा वड़ा मुनिराजां ने भी के'णो पड़े के, र्हे, नी, के' शका हां। जदी मामूली. कई, के,' शके। पण भगवान्, तो भाव रा भूखा है। अणी में आपणी वोली रा नाम याद नी आया वठे दूसरी वोली लिखणी पड़ी है, सो सज्जन सुधार लेवे। कतरा ही मेवाड़ रा लोग हीज मेवाड़ी वोली शूँ शुग करे है, या वणारी समझणी महिमा है, कतराक पराई वोली भणवारा अवगुण भी बतावता जावे ने आपणी वोली री वुराई करता जावे! जठे जठे आपणी वोली में भणावे वठे वठे भणया गुणया वत्ता लाधे है, ने या वात पतवाण ने भी देख लेणी चावे। कतरा ही केवे के राम, भगवान नी हा, ने कतरा ही केवे है के श्रीराम भगवान, हा। म्हने तो जणी में राम भगवान रा गुण व्हे' वींने भी भगवान केतां अबकाई नी आवे, ने राम भगवान रा गुण भी व्हे' तो अश्या भगवान ने भी म्हारा तो छेटी शूँ ही प्रणाम है। यूं ही या आखी रामायण लखायगी है, सो लोगांरे लाभ व्हे'तो दीदेगा तो यूँ ही वारा वोरी आखी छपावारो विचार है।

चतुरसिंह।

॥ श्री हरिः ॥

निवेदन ।

यो मानव मित्र राम चरित्र महाराज साहब रा समय में होज एक दाण छप चुको हो। अब यो दूजी दाण फेर छपायो गयो है। अणी में भी छापा री कुछ अशुद्धियां रह गई है। कारण, पुस्तक बनारस में छपी है—जठे मेवाड़ी भाषा रो नाम तक नी जाणे।

अणीरे साथ अंत में उत्तर चरित्र भी जोड़ दियो है, यो भारी गल्ती म्हारी हुय गई है। सो भक्त गण क्षमा करे। म्हे तो भगवान् रो गुणगान समझने यो काम कीधो है।

भूमिका तो खुद ही महाराज साहब बांध गया हा, सो अब भूमिका लिखवारी जरूरत-नी रही है।

अणी में जी जी गलत्यां व्हेवे, वी म्हारी समझे और आछा पणो सब महाराज साहब रो है।

संपादक—
गिरिधरलाल शास्त्री।

श्रीरामचतुष्टय

RESS GORAKHPUR

No 1009

॥ श्रीएकलिंगजी ॥ ॥ श्रीरामजी ॥

अथ

मानवमित्र श्रीरामचरित्र

में

बालचरित्र प्रारंभः ।

मङ्गलाचरण ।

दोहा–नमो अलख गुरु प्रगटरी, दयादृष्टि विन अंत ।
घणां कलपरो उलटज्या, करे पलकरो पंथ ॥ १ ॥

कथा प्रारम्भः ।

आगे एक चड़ा आछा गुणवान राजा व्हिया हा । वणांरो नाम दशरथजी हो । वी अयोध्या नाम री नगरी रो राज करता हा । वणांरे सब तरे'रा सुख हा । कणी बातरो घाटो नी हो । घाटो हो, तो एक हीज हो, के वणां रे पुत्र नी व्हे'तो हो । अणी बातरी राजारा मनमें उदासी चणी रे'ती ही । वणां तीन तीन व्याव कर लीधा, पण पुत्र एक रे भी नी व्हियो । राजाने ने राणियां ने तो ईंरो सोच रे'तो हीज,

पण रैत ने भी ईंरो पूरो पूरो विचार हो। मनख वातां करता हा, के अश्या धर्मात्मा राजा रे पुत्र क्यूं नीव्हे'। कोई तो के'तो, के अणां राजा शिकार में एक दाण अणजाण शूँ कणीं मनख ने मार न्हाख्यो जणीं पाप शूँ पुत्र नी व्हे'तो व्हे'गा। कतराई के'ता, ई राजा तो आपां ने बेटा बेटी ज्यूँ पालये फ़ुलाय रियाहै, पछे कजाणां कँई व्हे'गा। कतराई केता, परमेशर अणा राजा रे मूंडा आगे मौत दे दीजो, पण अणारी खोटी कानां शंभलावो मती। यूं सारा ही राजा पे जीव छांटता हा। अश्याँ तरे' शूँ नराई वर्ष बीत गिया। सेवट में भगवान सारांरो ही हेलो शुण्यो, ने राजारे तीन ही राण्यां न्हाई री'। ई समाचार शुणने तो लोग हरप बावला व्हे'ज्यूं व्हे'गिया। जाणे एकरे ने एकरे तो कुँवर व्हे'गा ही ज, पण भगवान री दया शूँ तीन ही राण्यां रे कुँवर जनम्यां ने फेर छोटा राणीजी रे तो एक साथे दो कुँवर जनम्या अणा बधायां ने शुण शुण ने तो सुख री पार ही नी रियो। अश्या प्रजा पालक धर्मात्मा राजा रे पुत्र क्यूं नी व्हे, शेवट में मोड़ो वेगो आछा रो फळ आछो हीज व्हे'। आपाणा भी आछा भाग है, जो आपणा अन्नदाता रे चार कुँवर जनम्या, परमेशर अणांने करोड़ दिवाली चरंजीव राखो, ने ई घड़ी बधता पल बधो। धन है, वणी राजाने, जणी ऊपरे रैत रो

अश्यो मोह व्हे,' ने व्हे' क्यूंनी। राजा भी तो वणाने हतेळी रा छाला ज्यूं अछन अछन करता हा। वणारे वास्ते आधी पाछली भी नी गणता हा। अबे तो चारही कुँवर दनोदन म्होटा व्हेवा लागा। राजारा कुँवरॉं ने वधता कई देर लागे। आज देख्या जश्या काले नी ने काले जश्या परशूँ नी ने ज्यूं ज्यूं शरीरमें वधता, ज्यूं ज्यूं वी गुणां में भी वधता जाता हा' अबे तो चार ही भाई घोड़ा फेरवा लागा, ने रैत रे सुख दुखरी खबर लेवा लागा। चारां में ही महाराणी कौशल्याजी रा कुँवर राम वड़ा हा वणॉं शूँ छोटा राणी कैकईजी रा कुँवर भरत हा, ने सबशूँ छोटा राणी सुमित्राजी रे लच्मण और शत्रुघ्न दो कुँवर व्हिया। आणॉं में लच्मणजी भरतजी शूँ छोटा ने शत्रुघ्नजी शूँ वड़ा हा। महाराजा दशरथजी रे तो कदकीही या हीज लालशा लागरीं ही के म्हारे बालक व्हे' तो म्हूं वणी ने राजधर्म आछो तरे' शिखाय देउं। जणी शूँ अबे राजा शघला भायाँ ने नरी तरे शूँ या वात शिखावा लागा के रैत ने यूं पालणी ने यूं राखणी ने वींरो योही सार है, के राजा रैत रे वास्ते हीज है, यूं राजा के ता शिखावता, वणी वचे भी राजकुँवर वत्ती समझ लेता हा, जाणे ह्मारा पेट शूंहीज या प्रजा पालवारो धर्म शीखने आयाहे। वणां में भी वडा राजकुँवर राम तो सांचो ही सारी वातांमें वडा हीज हा। वी वड़ा नतमंत हा पर वणारा वलरो वखाने हो जाण ही नी पड़ती-

हीं। क्यूंके वी मारीखमा घणा हा। सुहावणा तो अश्या हा, के देखाताँही आखां ठंडी व्हे'जाती ही, जणीज शूँ लोग वां ने रामचन्द्र के ता'हा, ने रैत रे वास्ते तो, परसेवारो जगा लोही छांटवाने त्यार रे'ताहा। झूँठ तो वणांने वोलताही नी आवतो हो। राम तो गुणाँरी खान हा ही ज, पण छोटा भाई भी घणा गुणी हा। यूं तो दशरथजीरा चार ही कुँवराँरी दूसरो तो कोई होड़ नीं कर शकतो हो, पण वड़ाने तो सांचो ही भगवान विचारने हीज वड़ा कीधा हा, ने यूं हीज एक दूसरा शूँ उतार हा, भरतजी तो एक शूधा सादा सरदार हा, लक्ष्मणजी रो कईक आकरो सुभावहो वी विना वाजवी कणीरी भी नी खमता हा। एक री जगा चार परखावता हा, पण वड़ा भाई रा तो थूंकपाने भी नी उलांघता हा, ने भरत शत्रुघ्न अणादोही भायां में घणो हेत हो, ने रामचन्द्रजीरा तो शाराही दाम हा, यूं चार ही भायांमें मोह देख, आछा मनख तो घणा राजी व्हेता, पण अणी शूं खोडीला तो विनाही वामदी बळता हा। रामचन्द्रजी रो यो विचार हो के संसार में कोई दुखी रे'णो नी चावे। वणांने विचारतां विचारतां या वात लाधी के मनुजी री बांधी रीत पे नी चालवा शूँ मनख दुखी व्हे' है, जींशूँ वणा सारांने ही मनुजी री रीत पे चलावारी निश्चय करलीधी। जदी वणाँने खबर पड़ी के अणी तरे' रा मनख भी व्हे' है के वी मनखांने मनुजी रा धर्म पे नी

चालवा देवे, ने चोरी जारी झूंठ शिखावे है, ने अधर्म पे चाल दूजारी लुगायांने जोरी शूँ पकड़ ले' जावे, ने कीने ही मार न्हाखे, बुराई सिवाय वणांने शुहावे ही नी, वो रागश वाजे है। अश्या रागशां रा राजा रो नाम रावण है, वो समुद्र रे वच्चे एक लंकानाम री नगरी में रेवे है। वठारा रागश संसार में अधर्म फैलावता फिरे है, ई वातां राम भगवान् ने नी खटती ही जीशूँ रावण शूं मोड़ी वेगी लड़ाई व्हे' णी नक्कीज है। क्यूंके रागश तो नीति नी चलावा देवे, ने राम अनीति नो चलावा देवे। ईशूँ साराही भाई आवध वावणा शीखवा-लागा, ने कसरतां करवा लागा। धोरे धोरे या वात नराई लोग जाण गिया। वणां दिनाँ में लोगां ने रागशां रो घणो दुख हो। क्यूं के अधर्मी वधे जदी धर्मी दुख पावे ही ज। वणी समय में विश्वामित्र नाम रा एक वड़ा धर्मी साधु हा। वणाँ राज-पाट छोड़ ने जोग ले लीधो हो। कांकड़ में भगवान् रो भजन करता हा, कणीं ने ही दुख नी देता हा। पण रागशां वणाँने भी नी छोड़्या। गेले चालताँ ही वणांने तरे तरे रा दुख देवा लागा, जदी तो नराही आछा आछा मनखाँ मिल विश्वामित्रजी ने अयोध्या रा कुँवराने लावा ने अयोध्या मेल्या। वणी वगत में राजा लोग साधुवां रो घणो मान राखता हा, ने साधु भी अवाणु व्हे' जश्या नी व्हे' ता हा, ने विश्वामित्रजी तो वड़ा नामी माधु हा। अश्या महात्मा रो

आवणो शुणताँही राजा मामा पधारथा। पगां धोक दीधी, ने मेलां में वराजाया, जीमाया, ने पछे बडी नम्माई शूं हाथ जोड ने अरज कीधी, के म्हने जो आज्ञा व्हे' या चाकरी उठाउं। यो राज पाट ज्यो कॅई दीखे वो शागे आप रोहीज समझना में आवे, यूं राजा रा वचन शुण विश्वामित्रजी घणा राजी व्हे ने कियो के वाह वाह राजा अश्या हळागेळ मम्यां में थारे विना अशो वात कूंण कॅवे। जश्यो थने जाणता हा वश्यो ही थूं निकल्यो। थूं अश्यो क्यूं नी व्हे। वशिष्ठजी जश्या तो थारे गुरु है, ने रघु रा वंश में ज्यो थारो जन्म व्हियो है। जणी वंश में एक एक शूं वध वधता धर्मात्मा ने टणका राजा व्हिया है। आज काल रागशां, लोगों ने घणा तळ राग्या है। वी धर्म रा वेरी है, ने थें धर्म रा रखवाला हो। अणी वास्ते आपरा पाटनी कुॅवर रामने म्हारे साथे करदो सो वी रागशांने मारने म्हाँरो दुख मिटाय देवे। दाना राजा दशरथ या वात शुणनांही घवराय गिया। क्यूं के राजा जाणता हा के रागशां शूँ वेर वांधणो शेल वात नी है। वणाॅ नरी देर ताँई विचार में पड ने, मुनि ने कियो के महाराज, राम तो हाल वाळक है। भलां राग शां शूं वीने कई लडताँ आवे। अधर्मी रागशांरो सुभाव ने चळ म्हूं जाणू हूं। आज वणॉरो दिन धरे है। लंका जश्यो तो गढ वणांरे पगॉ नीचे है, ने रावण जश्यो राजा वणॉरे साथे

तप रियो है। वणा शूँ वैर बांधणो जाणे भाटो उछाळ ने करम मांडणो है। फेर म्हारी भी वरध अवस्था आय गी' है, ने बाळक जो छोटा छोटा रे'गिया है। गेले चालतां वैर वशावणो म्हूं नी चावु' हूं। आपने अवकाई व्हे'तो अयोध्या रा सीमाड़ा में पधार जावो, सो वी आपने अठे दुख नी देवेगा। क्यूं के वी भी रघुवंशियाँ ने छेड़णो नी चावे हैं। या बात शुण विश्वामित्रजी ने पे'ली तो वड़ो अचंमो आयो। क्यूंके यूं सूरजवंशी राजा ने वचन शूँ फिरतो वणा पे'ली पे'ल हीज देख्यो हो। आगे अणा विश्वामित्रजी राजा हरिश्चंद्र ने वचन शूँ फेरवारी नरी कीधी हो, पण बेटाने ने राणीने वेचने आप भी भंगीरे विकागियो, पण वचन शूँ नी फिरयो। आज वणीज हरिश्चंद्र रा वंशीने यूं के'ने फिरतो देख विश्वामित्रजी ने रीश आयगी, वणॉ कियो के हे राजा, बेटो मांगवारी रीत नी है, पण म्हें थने वणी वंश रो जाण ने बेटो मांग्यो के जणी वंश रा रत रे वास्ते, ने धर्म रे वास्ते केवे ज्यो देशके हैं। म्हे साधु कणी रा ही वाल वचां ने मरानां नी हां, पण नी व्हे'जणीरे भगवान् शूँ अरजाश करने देवावां हॉ। थारा जश्या राजा ही जदी आपणा वड़ावां रा धर्मने छोड़-देगा, जदी बापड़ा दूसरा कई करेगा। घणो आछो'म्हें तो आया ज्यूंही परा जावांगा, थें राजी रेवो। काले रावण थाणां मेलां में भी अधर्म फेलावे तो भी वणी शूँ वगाड़ो मतो।

म्हनें रे'ने यो अचंमो आवे के आज एक देंतण एक बामणरा घर में घुशी, वणी रा बेटा रावण री रघुवंशो राजा काण मानें है, ने वणीरा अधर्म शुण ने भी काना में तेल घाल ने शूवणो चावे है, ने फेर वणाँने सूरजवँशी वणता लाज नी आवे, ने भगवान् रो भय छोड़ रागशाँरो भय राखवा लागा है । यूं विश्वामित्रजी ने केतां देख राजा रा गुरु वशिष्ठजी कियो के ई राजा वचन शूं फिरे जश्या नी है । अणाँ तो राजनीति री बात कीधी है, आपनें यूं वैराजी नी व्हे'णो चावे । पछे वणा राजा ने भी कियो के विश्वामित्रजी निना विचारयांही आपरा वड़ा कुँवर ने नी मांगे है, ई शूं वड़ा राजनीति वाळा है, ने अश्या ही करामाती भी है । अणॉरे साथे जावा में लाभ हीज है, ईशूं विना ही विचारयां अणाँरे साथे वड़ा वापू ने करदेणा चावे । जदी तो राजा राजी व्हे'ने महाराज कुँवार ने बुलाया, सो राम लक्ष्मण दोही भाई हाजिर व्हिया और दोही भायां ने विश्वामित्रजी साथे ले लीधा । वयूं के वी जाणता हा के अणाँ दोही भायां में मोह घणो है, ने रामचन्द्र रो संकोच रो सुभाव है, सो आपांने कई केवेगा नी, ने अवखाई पावेगा, ने दोही भाई व्हे'गा तो अणाँरे भी ठीक, ने आपणे भी ठीक है । अवे माता पिता री आज्ञा पाय ने सारा शूं ही अशीश पाय दोही भाई मुनिराज रे साथे साथे पधारवा लागा । लोग केवा लागा के

देखो राजा रो धर्म कठ्यो दोरो है के आपणा लाडला बेटा ने रागशां शूं लडवा एक साधुरे साथे कर दीधा ने फेर दोही राजकुँमरां ने भी देखो के जाणे परणवा जाने ज्यूं राजी राजी मुनिराज रे साथे साथे पधार रिया है। भाई रामचन्द्र तो सदा ही प्रसन्न हीज रेवे है, पण आज तो मुखारविंद पे अनोखो हीज आनन्द झलक रियो है। जाणे यूं तो पिता सीख नी बगशेगा, ने मुनिराज रो कियो ज्यो लोपेगा नी, यूं जाण जाणे मुनिने आप हीज केनाय ने बुलाया व्हे'ज्यूं दीखे है, ने साधु रे साथे जाणे ठेठरा ही साधु व्हे'ज्यूं पधार रिया है। कणी कियो भाई ईतो साधुनां वचे भी वत्ता है। साधु तो सब छोड छोड ने पछे मनने रोके है, ने ईतो सब तरे'रा सुख व्हेना पे भी सब दूसरा रा हीज गणे है। ईतो सॉस लेवे सो भी परायारा भलारे वासते हीज लेवे है। मनख राम लक्ष्मण ने देख देख ने यूं बातां करता, ने आशीश देता के आपरा वैरियां रो नाश व्हीजो, ने आपरो ईडा पीडा सारी मिट जाज्यो। आपने परमेश्वर जीत दीज्यो। कतराक विश्वामित्रजी रे नखे जाय आखां में तळायां भरने के'ता के बावजी म्हॉरा अन्नदाता रा कुँवरां ने कँई अबकाई पडवा देवो मती। ई म्हॉरा प्राण है। कतराई बस्ती गामरा लोग यूं केता के भणावजो भलेई, पण देवा लेवो करो मती। कोई के'तो अणॉने साधु करो मती। ई बातां लोगा रा मूंडारी शुण शुण ने दोही भाई मुळकता

हा, ने विश्वामित्रजी के'ता हा के भाई थांरा वच्चे ने महाराज वच्चे म्हारो अणोपे घणो मोह है। थें कई चिन्ता करो मती। ई अयोध्या वचे भी म्हारे नखे वत्ता सुखी रेवेगा। थां ही केवो नी, ई म्हारे नखे थाँने राजी दीखे के उदास ? थोड़ा दिनां केड़े थां देखोगा, तो थें ओळख ही नी शको, जश्या सांतरा व्हे'जावेगा। यूं वातां के'ता शुणता दोही कुँवर ने मुनि नराई छेटी पधार गिया।

आगे दो गेला फटता हा। वठे मुनिराज पूछी के बापू कश्ये गेले व्हेय ने चालां। यो जीमणा हाथ कानी रो गेलो तो घाराने बारा चौईश कोशरी उजाड रो है, ने अणी में भी माणों भी घणो है, ने यो डावा हाथ कानी रो गेलो वस्ती रो है, पण फेर पड़े है।

जदी दोही भायां हाथ जोड़ अरज कीधी के वस्ती रे गेले तो लोग आपने जक नी लेवा देवेगा, ने गुरजी तो म्हारी उजाड रो गेलो देखवारी है, ने शूधो गेलो है, जदी फेर अवळाई क्यूं भुगतां, ने आपरा बाळकां ने भौतो केवल अधर्म रो हीज चावे। मुनिराज री भी याहीज मनशा ही, सो भट जीमणा हाथरे गेले वळ गिया, ज्यूं ज्यूं वणी गेले चालवा लागा ज्यूं ज्यूं वत्तो वत्तो उजाड़ आवा लागो, वनी भयां भयां कर री ही, दिने हो घूघा बोल रिया हा। कठीने फँकर्यां फ्यां फ्यां कर री ही, तो कठिने ही जरखड़ा खोड़ी

चाल शूं चालरिया हा, कठीने ही रींछड़ा रूंगच्या हालता थका भागता हा, कठीने म्होटा म्होटा एकल शूर धरती खोद-रिया हा, कठीने ही नार डकाररिया हा, तो कठीने ही शूंडारी ईंडोणी वणाय ने मदा हाथी रड़्कां लेरिया हा। अश्या घोर वनमें यूं भयंकर जनावरां ने छेटी नजीक देख दूसरो बालक व्हे'तो डिया ऊंचा चड़ जावे, पण अणाँ दोही भायां ने तो बड़ो आनन्द आयो, ने याड़ी रा फूलां ने देखे ज्यूं वणाँने देखता हा, ने दोई भाई वादां करता के, ओहो या जगा तो आपणे जाणमें ही नीही कणी शिकारी भी अठारी कधी माळ नी दीधी। ई जनावर तो रतने घणो दुख देता व्हे'गा। अठे तो लोग वसे तो धरती ने पाणी भी चोखो दीखे है। कई कारण है, ज्यो या अशी जगां यूं उजाड़ पड़ी है।

जदी विश्वामित्रजी कियो के लाला अठे एक वलाय रेवे है। पेल्यां तो अठे नराई गाम वशता हा, पण वा कत-राकने तो खायगी ने कतराही वणी रा भय शूं भागने उजड़ व्हे' गिया। अवे तो अठी ने कोई गेलार्थू भी नी निकले, ने कोई भूल्यो भटक्यो आय जाय तो वा वीने जीवतो नी छोड़े। जी शूं अवे तो अणी गेलाने सव वलाय रो मूंडो हीज केवा लाग गिया है, ने अणीज वास्ते आज तक कणी भी थांने अठारी भाळ नी दीवो। पण आज म्हूँ थांने जाण वीण ने वणी वलाय रा मूंडा कानी अणो वास्ते लायो हूँ, के

मंसार अणी रा मूंडा में शूँ बच जावे, ने यो गेलारो फेर मिटने लोग शुधे गेले चालना लाग जावे। अने थांने धनुष चढ़ाय सावधान व्हे'जाणो चावे। क्यूं के वा कठारू शूँ अणी गेलारो ओशान राख री'व्हे'गा, ने आपने देख्या के आई केआई है, या शुण ने तो दोई भाई घणा राजी व्हिया। पेली तो दोई भायां री विचार हो के मुनिराजरी आज्ञा व्हे' जाय, तो अणी मोटा नार री तो शिकारही कर लेवां। पण बलायरो बात शुण ने तो विचारी के अणाँ जानवरों ने तो अयोध्या रा हरकणी सरदार ने के' दांगा सो मार न्हाखेगा। पण अनरथरो मूल्ड या बलाय आय जाय, तो गुरुजी री अतरीक चाकरी तो सध जावे, ने लोगांरो खटको भी मिटजावे।

छोटा कुंवर तो वणी बलाय ने देखवाने घणा हीज उतावळाव्हे' गिया। घडी घडी रा गुरुजी ने अरज करवा लागा, के वा आवेगा, कई ? वा खुती तो नी रे'जावेगा ? वणीने कुंकर खबर पडेगा के मनख आया है। यूं छोटा कुंवर पूछता ही हा के अतराक में एक ओर री कलको व्हो ने विश्वामित्रजी कियो के चेतो, वा आई। अतराक में एक मगरा रा टूंक ऊपर शूँ जाणे शांवळो पांख समेट ने पड़े, ज्यूं उतरती थकी नजर आई, ने वा नजीक आय ने तीन जणाने देख ने खड खड खड हंसवा लागी, के जाणे

आज तो खूब आछी गोठ व्हे'जायगा । पण वींने देखने तो छोटा कुँवर रे तो चूँक बैठगी । क्यूंके रींछड़ा री खालरो तो वणी काछकड़ो बांध राख्यो हो । मनखां री खोपड़ियां री काना में टोकरयाँ लटकाय राखी ही । काजल पोत्यो व्हे'जश्यो रङ्ग हो । गाड़ारा पेड़ा सरीखी आखां फिररी ही । ताड़रा रूंखड़ा सरीखी लंबी ही, ने माथारा लटूरया खजूर रा फणंगा री नांई विखर रिया हा, ने हाड़का रा गेणा पेर राख्या हा, ने चंदन री नांई डोलरे लोही चोपड़ राख्यो हो, ने ऊँटड़ा ज्यूं तापड़ री ही, जीशूँ बोबा छाती पे उछळ उछळ ने पटकाय रिया हा । यूं बेंड़ा री नांई वींने कूदती देखने राम भगवान भी मुळक रिया हा । पण विश्वामित्रजी बड़ी ओशान शूँ देख रिया हा, के यां बालकां रे लगाय नी पाड़े । पण बालकां रे तो आज यो नवो ही तमाशो नजर आयो हो, सो हंस रिया हा ।

जदी विश्वामित्रजी कियो के बेटा राम, अणी री नेरपाई नी राखणी चावे । या बड़ी जोरावर है, सैंकड़ा मनखां ने बालबचां सेती खायगी है । बड़ा बड़ा शूरमा अणी री काण माने है । पण आपां तो तीन हां ने या अकेली है, जणी शूँ थूं भी एकलो हीज अणी शूँ लड़ । क्यूं के धरमयुद्ध री या हीज रीत है ।

यूं गुरुरी आज्ञा शुण वड़ी भुजा और चौड़ी छाती वाळा कमल शरीरा नेत्र वाळा, ने ऊंची ललाट वाळा शांवळा राम आगे पधारने रांड ने चड़पाई, पण शीळ में माने जसी तो या भी कठे ही, दांत्याँ देवा लागी, ने कणी वगत मनकी ज्यूं बोले, तो कणी वगत घूघा ज्यूं राग्यां करे, ने कणीक वगत नार ज्यूं गरजवा लागे।

दूसरा तो वापड़ा ईरा, अश्या छेन देखने ही छाती फाट ने मरजाता हा। पण आज तो काम सांचा चत्रियां शूं पड्यो है, सो मारां रो ही बदलो चुकाय लेगा। राम भगवान हुक्म दीधो, के थूं यूं चयूं करे है। म्हें तो गेले गेले चाल रिया हां। जदी म्हारा पे यूं काळी पीळी क्यूं व्हे'री है। म्हाँ थारो कई बिगाड़यो है। राम भगवान जाणता हा, के जोरावर है, तो भी है, लुगाई। अणी शूं नी लड़णो पड़े, तो आछो, ने या यूं समझ जावे तो ठीक है। पर वातो जाणगी'के डरपे है, जीशूं ललकण्या लेवे है। जदी तो वा हातां पगां ने उछाळती थकी बोली, के खावूंगा खावूंगा, नी छोडूँ, एक ने भी नी छोडूँ। यूं बोलती थकी ने रळक रळक जीभ काड़ती थकी, अयोध्या रा पाटवी कुंवर पे रपटी। जदी तो राम भगवान भी एक भाठो ले ने धीरक शूं वणीरा करम पे वायो, ने वो वणीरा करम पे आय लागो। अणी री झपट शूं वा समझ गी

केई अड्या वड्या मनख नी हे, जी शूँ अवे तो वार
बचाय ने लडवा लागी। कणी वगत तो छुप जावे, कणी
वगत पाछे शूँ गरणेटो खाय ने अचाणचूक री आय पडे,
ने कणी वगत भाटा ने रूखडां ने भाला वावे, ने धूला
उडाय, वणी मे वे'ने नजीक आय ने वार करे । राम
भगवान भी वणी रा वार बचाय बचाय दौड दौड ने
भड़ूयार गेंडकडी ने ताडे ज्यूं ताड रिया हा।

यूं नरी देर व्हे'गई । जदी विश्वामित्रजी कियो के
बापू अणी राड री दया मती देखो, या जीवेगा जतरे
लोगांने दुखहीज देवेगा। थॉने पिता रो हुक्म है, के मुनि
रो कियो मानजो, सो अबे म्हारी केण है, के एक ही
दण में ईने मार न्हाखो। देखा थॉरो तीर कश्योक सूधो लागे
है ? छातीरे वच्चे लागणो चावे। जदी राम भगवान धीरेक शूँ
'लुगाई है,' यू के ने तीर थोडोक हीज खेंच ने वायो। पण
वणॉ हाथा रो तीर खाली नी जावतो हो । जठे नजर पडती
वठे ही मन जावतो ने जठे मन जावतो वठे ही तीर जावतो
हो। वणारो वो धीरेकरो ही बाण वणीरी भाठी छाती ने फाड
पे'ली कानी जातो पड्यो। राम भगवान जाणी के थोडीक
लाग जायगा, तो या डरप ने भाग जायगा। पण वा तो नी
भागी, ने वींरो जीव भाग गियो। यू वणी ने मरी देखने
दयाल राम ने दया आयगी, पण विश्वामित्रजी तो घणा राजी

व्हिया, ने कियो के आज संसार रा दुख मिटवारो आरम्भ व्हे'गियो है।

छोटा भाई अरज कीधी के दादाजी बलाय बलाय शुणता हा पण वणीरी शिकार तो आज व्ही'है। अबे छोरा छावरा राजी राजी रमे खेलेगा ने आपने आशीश देवे गा। वणाँरा माँ बाप केवेगा के थांरी अलाय बलाय तो बड़ा बापजी मिटाय दीधी अबे कांई डरपो मती। पछे मुनिराज कियो के ईरो ताड़का नाम है, ने आपगी मढ़ी में उत्पात करे, वणी मारीच नाम रा रागश री या मां है। आज चोर रे पे'ली चोर री मां मरी। यूं बातां करता करता मुनि पधार रिया हा, वठे गेला में एक सुहावणी नदी आई वठे मुनिराज-दोही भायां ने तरे तरे रा आवध शिखाया, ने एक विद्या असी शिखाई के जीशूँ भूख तरश नी लागे, ने देह में बळ वधे। यूँ तो आवध वावणो नराई जाणता हा। पण अणाँ विश्वामित्रजी ज्यूं कोई नी जाणतो हो, ने अणाँ खेवट शूँ जा विद्या शिखी ही, वा आज अणाँ दो ही भायां ने जोगा जाणने शिखाय दीधी। अबे आगे पधारतां पधारतां एक शुवावणी जगा नजर आई। वणी ने देख, दोही भायां अरज कीधी, के ई रूंखडा ने या रलियावणी जगा देख ने तो ईने छोड़ वारो मन नी करे। जदी मुनि कियो के आपां री मँडी अणोज जगा है अठेहीज मारोच, ने सुबाहु नाम रा रागश आय आयने म्हाने दुख देवे है।

जतराक में दो मुनि रा बाळक फूल तोड़ रिया हा। वणाँ छेटी शूँ मुनि ने आवता देख, दौड़ने मँडी में खबर दीधी के गुरुजी पाछा पधार गिया है, ने दो बाळक धनुष बाण लियाँ शाथे है। या शुण मँडीरा साधु घणा राजी व्हिया, के आज तो राजा दशरथ रा कुँवर आपणे पामणा व्हिया है। कतराही तो फळ,-फूल, जळ-झारी ले' ने शामा दोड़ने गिया। कतराही मंडी में बुहारी निकाळवा लागा, ने कोई जळ भर लाया, तो कणी शालरी बिछाय दीधी, कणी कियो राजा रा कुँवर है, अणाशूँ कई राजी व्हे'गा, कणी कियो वी तो भाव रा भूखा है। अतराक में दोही भायां सेती मुनि पधार गिया। अबे तो छेटी छेटी रा बाळक, बूढ़ा, लुगायां भगवान रा दर्शण करवा आवा लागा। कोई तो रामने दुखभंजण के'तो हो, कोई धर्ममूरत के' तो हो और विश्वामित्रजी री मंडी पे रात दन मेलो मंड्यो रेतो हो, या बात रागशां रे काने भी जाय पड़ी।

जदी तो रागश सारा भेळा मिल ने सल्ला कीधी के राजा तो आपां ने मानणा चावे, ने आपणा हुक्म में सारां ने रे'णो चावे ने नी माने तो मार काट ने सूधा कर देणा, ने वठे लुगायाँ भी भेळी व्हे'ती केवे है, सो आपी मुरजी व्हे'गा जणी ने पकड़ लावां गा।

विश्वामित्रजी वणा रा छळ कपटां ने समझता हा, सो दो ही भायां ने समझाय दीधा के अशी वगत पे वी

अचाण चूकरा आय पड़े है, सो सावधान रे'णो चावे वठे दोही माई फेरी दे'ने रखवाळी राखता हा, के कणी ने ही कोई पापी दुष्टी दुख नी दे देवे। एक दाण मुनि तो नाम ठाम ले रिया हा। कतराहो तो स्वाहा स्वाहा कर होम कर रिया हा, कतराही सॉपड़ रिया हा, कतराई गौमुखी में हात घाल माळा फेर रिया हा, कतराई सूरज नारायण कानी हात ऊँचा कर कर अरघ दे रिया हा, कतराई आलगती पालगती बांध खोळा में हात मेल नाकरी अणी पे आंख ठेराय ने जाणे चतराम रा व्हे' ज्यूं डीलरी शुध बुध भूल ने परमात्मा रो ध्यान कर रिया हा। अश्यारू में एका एक छोरा छापरा, ने लोग लुगायां रो हाको व्हियो के कोई दौड़ ज्यो रे कोई दौड़ ज्यो! हे दुखभंजन राम म्हांनि ई रागश मारे है। रघुवंशीयां री भी काण लोपे है। राम भगवान री मतो गरीब री पुकार स्रमणी नो आवती ही। झट छोटा भाई ने हुकम कीधो। भाई लक्ष्मण झट जायने यापड़ा दुखिया ने बचाव, म्हने अशो दीखे है, के यणा टोळ्यां बणाई है सो आपां दोयां ने हो अठाशूं छेटी कर दूसरी टोली शूँ अणा साधूवांपे धाडो न्हाखे गा, ने मुखिया व्हेगा जी अठे ही ज आवेगा। क्यूं के वी विश्वामित्रजी ने जाणे है। छोरा छापरा पे टणका धाड़ो नी न्हाखे है। जदी तो लक्ष्मण जी जोरशूँ दौडने यूं हुकम करताथका वठी ने पधार गिया, के कोई डरपो मती

यो म्हूँ आय गियो हूं, ने अठी ने म्होटा म्होटा रागशां भाड़ी में शूँ डोक्या करने देख्या के एक शांवलो सरदार लंबी भुजा ने चौड़ी छातीरो हाथ में धनुप बाण लेने फेरो देरियो है। जदी तो वणां कियो एक साथे अणीपे टूट पड़ो, देखां म्हारा नारां। ईने जीवतो छोड़ो मती। यूं के'ने मार मार करता मारा ही अकेला श्री रामचन्द्र पे टूट पड़्या। पण राम तो परोशो ले ने कदका ही वाट हीज देखता हा, सो सारा ने साथे हो जीमाय दीधा ने लोग 'वाह वाह,' करवा लाग गिया। अतराक में साधु भी डंडा लोट्या चीमट्या फटकार राम भगवान री कानी आय गिया। पण विश्वामित्रजी सारां ने हो कियो, के देखो, म्हारा राम री तमाशो तो देखो, राम तो अणा वच्चे आठ गुणा रागश आवे तो भी गनारे जश्या नी है। ई वापड़ा भाखा तो कई, पण लंकारा ठाकर ने भी यो ही ज पछाड़ेगा। अबके फेर रागशां राम पे बड़ी रीश करने हमलो कीधो पण राम भी काचा पोचा गुरु रा चेला नी हा। शैल में वणांने मारने विछाय दीधा, वणां में मारीच ने सुबाहू नामरा दो रागश मुखिया हा, सो सुबाहू रे तो अग्नि बाण री दे ने राखोड़ो कर दीधो, ने मारीच रे तो ताड़का री याद आयगी सो एक मोटा तीर री दीधी सो वो समुद्र रे पेले तीर जातो पड़्यो। पछे दूजा तो 'माखी मरयो ने धाड़ भागी,' यूं राम भगवान वणा शैल में पूरा कर दौड़ने छोटा भाई री

कानी पधारचा । पण छोटा भाई भी ओछा नी हा । आगे देखे तो रागशां री फौज तो विछी पड़ी ही, ने लोग लुगायां राणी सुमित्रा ने राणी कौशल्या री कूँवरी वलिहारियां ले'ले'ने ने वाहवाही कर रिया हा । यूँ रागशां ने मार दोही भाई मण्डी पे पधारचा ।

जदी गुरुजी दोही भायां ने नरे बुलाय कांधा थेपड़चा ने कियो के वाह ! वाह !! श्रठारा तो कांटा मिटाया, यूँ ही सदा ही थांणी जीत व्हियां करो । यूँ अतरो मोटो काम करने भी दोही भायां ने नाम घमण्ड नी आयो सामी आपणो वाहवाही शुणने लाज आवती ही । अबे तो चठे मारा ही सुख चैनशूँ रेवा लागा ।

एक दाण वातोरात राजा जनक री वात चालगी' के आज रा वगत में तो मिथिला रा राजा जनक रे सरीखो ज्ञानी ध्यानी दूसरो नी व्हे'गा । वडा वड़ा रिषि मुनि वणी राजा नखे ज्ञान ध्यान शीखवाने जायाँ करे है । या शुण राम भगवान ने राजा जनक शूँ मिलवारी चांपर लागगी', ने घड़ी-घडी रा विश्वामित्रजी ने पूछवा लागा के वणां राजा री नगरी मिथिला अठा शूँ कतरीक छेटी है । आप रे तो वणां राजा शूँ जाण पिछाण व्हे'गा ? जतराक में कणी कियो के आज काल तो राजा जनक री चडी नगरी में वड़ोभारी मेळो भराय रियो है । वणां रे बड़ी बाई सीता रो व्यान है । जणो

शूँ देश देश रा राजा भेळा व्हे' रिया है। अतराक में 'एक साधु कियो के अरे हां राजा जनक रा छोटा भाई अठे आया हा। वणा आप रे अयोध्या पधारवारी सुंणने एक तो कंकुपत्री दीधी, ने एक कागद दूसरो लिखने दे गिया, ने के गिया के मुनिराजरे पाछा पधारतांई, ई कागद नजर कर दीजो, सो म्हूं तो धामा धूम में भूल गियो, सो अबार वातोवात याद आयगी'। यूं के' ने वणी दोही कागद मुनिराज रे नजर कर दीधा।

जदी विश्वामित्रजी कियो देखां छोटा बापू वांचो अणी में कई लिख्यो है? जदी छोटा कुंवर दोही कागद वांच रिषि ने अरज कीधी। एक में तो लिख्यो हो, के आपरी बड़ी बाई सीता रो व्याव है, सो शुभ नजर कर जरूर पधारे, ने नीचे सीरध्वज जनकरा दसखत हा। दूसरा में लिख्यो के आपरो सेवक कुशध्वज कागद ले' ने अठे हाजर व्हियो, पण अठे शुणी के आपरो पधारवो अयोध्या रा पाटवी कुँवर ने लावा अयोध्या व्हियो है, सो अयोध्यानाथ अवश करने आप रा हुकम शूँ आपरे साथे बड़ा कुंवर ने सीख वगस देवेगा, सो करपा कर वणां कुंवर ने साथे लेता पधारे, अबार व्याव रा कामरी आगत व्हेवा शूँ पाछो जावूं हूं, सो माफ करावे, ने जरूर पधारे। अयोध्या तो कंकुपत्री पुगाई है हीज, नीचे दसखत कुशध्वज रा हा, पछे छोटा कुंवर पूछी क्यूं अन्नदाता

जान कठागी आवेगा ? लगन कणी मिती रा है। अत्या आली राजा रे नो जमाई भी जानीज व्हे'गा, ने अणी में बड़ी बाई लिख्यो है सो वणांरे छोटी पण व्हे'गा।

जदी विश्वामित्रजी कियो के हां बापू चार बायां है, वणां में सीता ने उरमिला तो जनकजीरे है, ने मांडवी ने श्रुतिकीर्ती वणांरा छोटा भाई अठे कागद लेयने आपां ने बुलावा आया वणां रे है। चार ही घणी स्याणी समझणी रूपाळी, ने धरम वाळी है।

छोटा कुंवर अरज कीधी क्यूनीं व्हे' धराणो तो जनकजी रो है।

फेर रिषिराज कियो के लगन री ने जानरी तो अणी मे नी लिखी। क्यूं के राजारे एक पुराणो महादेवजी रो धनुष है। वणी ने तोडेगा जीने ही सीता ने परणाय देवेगा, ने अणीज शूं देश देश रा राजा भेळा व्हिया है। सो थांणी मुरजी व्हे' नो आपां भी चालां। तमाशो देखणां देखां धनुष कूंण तोडे है। या शुण छोटा कुंवर अरज कीधी, धनुष तोडवा वाळो आप शूं कड्यो छानो व्हे' गा। या शुण रिषि राज मुळक ने कियो के थांशूं भी छानो थोडो ही व्हे'गा। वो तो आखा संसार में ठावो व्हे'गा। पण धनुष आपणे गियां केडे टूटेगा। यूं के'ने थोडा साधू ने साथे मिथिला नाम री जनक री नगरी कानी

पधारचा । गेला में गोतम नामरा रिपि री नऊ ही । वणी ने पनि रा अपमान रो अण जाण में पाप लाग गियो हो, या राम रा दर्शण शूँ तरगो' ने तरे क्यू नो वणीरा गुण गाय करोडा पापी अवार भो तर रिया है। जदो वणी तो शागे वणो रूपरा दर्शण कर लीधा हा । अन ढोही भायां सेंतो विश्वामित्रजी जनकपुर कने पधार एक सुहावणी वाडी हो वठे ही दुपेरी कीधी वणी वगत एक हल्कारे दोडने राजाने खबर दीधी के विश्वामित्र रिपिराज पधारचा है ने वणा रे साथे अयोध्या रा पाटवी कुंवरने एक छोटा कुवर भी है, ने वणा शुहावणी वाडी में दुपेरी कीधी है।

जदो तो राजी व्हे'ने राजा मुनिराज ने लावा सामा पधारचा । राजा ने पधारता देख एक साधू विश्वामित्रजी ने अरज कीधी, राजा जनक अठे पधार रियाहै। या शूण दोही भाया ने मुनि सामा मेल्या, दोही भाया ने देख राजा कियो के या तकलीफ क्यू कराई । यू के' पेली तो नाथ शूँ नाथ भर वडा राजकुँवर शूँ मिल्या, ने पछे छोटा शूँ मिलने कियो, आज मिथिलापुरी आप रे पधारवा शूँ सनाथ व्ही' । म्हारा आज आछा भाग है, के क्षत्रिया ग सूरज रा कुँवर अठे पधार दर्शण वगश्या । पण पे'ली खबर ही नी भेजाई, ने यू ही म्हे'ला में पधारजो व्हे' जातो । अठे मन

आपरो हीज है, म्हेतो आपरा हीज रजपूत हां । यूं राजा बड़ा मोह शूँ अरज कीवी।

जदी राम भगवान फरमाई, के आप सरीखा आत्म-ज्ञानी राजा जणी जगा विराजे, वणी नगरी रे सनाथ व्हेवा में कँई कसर है । नराई दिना शूँ गुरु राज रा मुख शूँ आपरो सुजश सुणता हा, सो आज दर्शण कर म्हें कृतार्थ हिया। अबार मुनिराज आपरे नखे पधारता हीज हा, ने घर चे वठे पे'ली खबर देवावारी कई जरूरत है। पछे राम भगवान अर्ज कीधी. पधारजे, पण राजा आगे नी हिया, ने पाछी भगवान ने अर्ज कीधी आप पधारे । पण राम भगवान भी आगे नी हिया, पछे छोटा बावजीराज ने अर्ज कीधी के आप पधारे । जदी पाछी छोटा कुँवरजीबावजी अर्ज कोधी भलां या भी कधी ह्वो'जे है, जदी राम भगवान अर्ज कीधी के अणी गेलारा आप वाकब है, जतरा म्हें तो नी हां, ने दाना ज्ञानियां ने आगे रे'न बाळकां ने गेलो बतावणो चावे। जदी राजा अर्ज करी वशिष्ठजी रा शिष्यने आगे रे'ने गेलो बतावे अश्यो आज संसारमें कुण है, ने गेला तो साराही आप शूँ हीज है । यूं के' ने राजा बड़ा-महाराजकुँवर रे भुजारे हाथ राख वणी बारणामें आगे पधराया ने यूंही छोटा ने भी पधराय, पछे राजा भी पधारया । पछे मुनिराज रा दर्शन कर, धन भाग धन भाग, आज तो नराई

दिना शूँ दर्शन ह्विया । आज तो व्याज सेती मूळ मिल गियो । यूं के चरणां में धोक दीधी । मुनिराज भी राजा ने उँचाय छातीरे लगाय खुशी पूछी, ने कियो के म्हें तो चारला साधु हां, ने मांयनुं तो साधु आप हीज हो आप रा मिलवा शूँ म्हांने भी नवो नवो उपदेश मिले है । राजा कियो ई सब आपरी कृपादृष्टि री वातां है । यूं वातां कर सारा ही विराज गिया ।

जदी विश्वामित्रजी सब वातां राम भगवान री राजा ने कही । जदी राजा कियो के ब्रह्म में तो गुण अवगुण सारा ही रे' है, ने अणां में गुण ही गुण है जीं शूँ अणां ने सगुण ब्रह्म के'णा चावे । जदी मुनि कियो सांची वात है । अणां ने हालतलक कणी नो ओलख्या है । के'कतो राजगुरु वशिष्ठजी, ने'के आप हीज अणां ने पिछाण्या है । जदी ई हीज चाय करने ठावा नी' व्हे' जदी दूसरो अणांने ओलख ही कूंकर शके ।

यूं राजाने मुनिराज री वातां रो लोग मतलब नी समझ शक्या । पछे राजा मनवार कर महे'लां रा वाग में सारांने वराजाया, ने मूँडा आगे चाकरी और काम काज रे वासते कामदारां ने और चाकर नोकरांने मेल शीख मांग महेला में पधार गिया ।

विश्वामित्रजी पूछी, क्यूँ छोटा वापू मिथिलापुरी सुहाई

के नी ? ने राजा जनक धन्यारू दीस्या ! जद छोटा कुँवर अर्ज कीधी या नगरी तो घणीआछी लागी अठागेतो रूंखडो ही रलियावणो लागे है, ने राजा शूँ तो जाणे वाता करवा ही करां, यू मन करे है। नाची ही सुणता जस्या ही दीस्या। राजा तो कई पण अठारो तो हर कोई नडो श्याणा ममभ्रणो दीखे है। क्यूं अन्नदाता अणा रे मरवा होज अणा रे माथे दूसरा सरदार कूण हा जी राजा नखे नैठा हा, न थणरि नखे म्हारा दाईरा एक सुहावणा सरदार कूण हा। जदी मुनि राज क्रियो वो राजा नखे नैठा हा, जीरा नाग छोटा भाई कुशध्वन हा, अणारी नगरी रो नाम मकाश्या है, अबार व्यान में अठे आया है, ने वो थारी दाईरा राजा रा पाटवी कुँवर है। अणा रो नाम लक्ष्मीनिधि है। था अणा शू वाता नी कीधी। चालो अबार तो अणारे भी कामरी आगत हो, फेर आछी तरे' शूँ मरीखा मरीखा वाता करजो। देखोनी नाळक है, तो भी अणारा चे'रा पे कतरा धीमापणो है। यु वाता करता करता नामठाम री वगत व्हे' गई, सो दोही भाई ने मुनि माङरा नामठाम लेवाने निरान गिया। नामठाम लीधा केडे दोही भाई पधारन मुनिरे पगा लागा ने मुनि आशीश दीधी। पछे ज्ञान ध्यान री वाता करता करता नींद रो वगत व्हेगा पे मुनिरे पोढयाँ पछे दोही भाई पोढ्या, ने मुनिरे अपोडी व्हेगा पे'ली दोही भाई अपोडी व्हे'ने मुनिरे मन जळ भारी रो, न नामठाम री मव त्यारी

त्यार राखी पछे मुनी रो हुकम पाय दोही भाई भी नामठाम लेत्रा ने वणी बाग में पधारचा। यूं पाछली रातरा जाग प्रभातरा नित्तनेम कर मुनि नखे दोही भाई पधार ने विराज्या होज हा। अतराक में राजा जनक रा ठावा प्रधान सुदामाजी वठे आय ने अर्ज कीधी,के आज धनुष जज्ञ रो दिन है, सो देश परदेश रा लोग लुगाई, ने राजा देखवाने भेळा व्हे' रिया है। दो घड़ी केड़े राजा जनक धनुष तोड़वारी आज्ञा करेगा, सो अर्ज कराई है, के दोई राजकुंवरां सेती आप भी झट पधारे। मुनिराज कियो चालो बापू, धनुष भी देखलां, ने राजा ने भी देख लां। यूं के' ने प्रधानजी रे साथे साथे खिड़की रे गेले व्हे'ने धनुष पड़चोहो वणी चौकमें पधार गिया। वठे तो मनखांरी भीड़ पड़ री'ही पण राजा जनकरो अश्यो आछो बन्दोबस्त हो के कणीने ही कई अबकाई नी ही। जथा जोग मारा ही देख सकता हा। एक कानी तो रावळोहो, वठीनेशूँ राण्या देखती ही। ने जनानी डोढ़ी रे पासही चांदण्यां ऊपर शूँ दूजी लुगायां देखतीही। ई जनानी म्हेल लंकाउ पागती हा ने धराउ कानीरी चांदणी पे सेरग, ने परदेशी लोग देख रिया हा। ऊगमणी कानी री मोटी चांदणी पे देश देशांग नामी नामी राजा सिंहासणां पे तरे' तरे' रा बणाव करकर ने बैठा हा। आथमणी पागती चौक में जाजारा बड़ा चारणो. हो। वणी दरवाजा री चांदणी पे साधू ब्राह्मण बैठा हा,

राजा रा भरोसा रा सरदार बैठा हा । राजारो शलेखानों भी वठीने हीज हो और फौजरा मनख पण आवध लीधां थका चठीने ऊभाहा । वचे वड़ो भारी एक चौक हो, ने चौंकरे वचे एक मोटो चौंतरो हो । वणी चौंतरा रे चार ही कानी पांच पांच पगतिया हा । वणी चौंतरा पे एक डाको अजगर सरीखो धनुष पड़्यो हो । वो महादेवजी रो दीधो थको पुराणो धनुष हो । वणी री वठे पूजन न्हियां करती ही कंकूरी टील्यां लाग री ही लच्छा नारेळ ने फूल पान चढ़ाय राख्या हा । मनख वणी ने देख देखने वातां कर रिया हा के कणी री मां सेर शूंठ खाधी है, जो ईने तोड़े । अतराक में एक दान माधू रे लारे दो राज कुँवर लोगोंरे नजर आया । आगे आगे तो एक मुनिराज पधार रिया है, पाछे पाछे एक शांवला सुहावणा राज़ा रा कुँवर पधार रिया है । जणांरी चोड़ी छाती ने हाथी री सूँड जशी वड़ी वड़ी भुजा, कमळ री पांखड़ी जश्या नेत्र, ऊंचो ललाट, दमक दमक कर रीयो है, और धीमी धोमी चाल शूँ पधार रिया है । वणारी चाल डाल शूँ ही लोग जाण गिया, के ई कोई अलोकिक सरदार है । विना वणाव वणांरा तेज रे आगे सारा ही राजां रो तेज फोको दीखतो हो, ने वस्याहीज गोरा रङ्गरा एक कुँवर वणांरे पाछे पाछे पधार रिया हा वी धनुष री ओर वठारा वन्दोवस्त री सब वातां प्रधानजी ने ओर मुनि ने पूछ पूछ वाकव व्हे' रिया

हा। वणां ने देख लोग माहोमाह वातां करवा लागा। ई कूण है, ई कूण है। कणी कियो ई मुनि रा बाळक है, कणी कियो नी राजा रा कुंवर है। जदीज धनुष बाण हाथां में है। कणी कियो दोई चांद सूरज है, सो मुनि रे वेश में व्हे'गिया दीखे है। कणी कियो ई तो परमेशर हीज दीखे है, अणाशूँ वत्तो रूपाळो तो परमेशर भी कई व्हे' शके। अतराक में राजा जनक भी सामा पधार गिया ने मुनि रे पगां लाग नाळ में व्हे' ने दोही भायां सेती मुनिराज ने एक आछा सिंहासण पे बराजाय दीधा, जदी दूजा राजा केवा लागाके देखो, राजा जनक आपां रो बुलायने अपमान कर रियो है। यूं के' ने वणा प्रधानजी ने हेलो पाड़ ने कियो के कई थाणां जोगो जनक ने या भी खबर नी है, के अठे कूंण कूंण वैठा है। म्हें वड़ा वड़ा जोधा ने गुणी राजा हां जणां रे सामा तो नी आया ने अणा कालरा दन रा छोरा रे सामा परा गिया। जो थें यूं कों के ई सूर्यवंशी है, तो म्हें भी सूर्यवंशी हां। ई अवधदेश रा कुंवर है तो म्हेंभी मगधदेश रा राजा हां। म्हांणा शूँ ई कणी वातमें वत्ता है। जदी प्रधानजी कियो के या वत्ताई ओछाई तो यो सामो अजगर शरीखो धनुष पड़्यो है सो आज हेलो पाड़ने के'देवेगा ने मुनिराज रो आदर करणों तो रजपूत जात रो धर्म है। वणां में जो धर्मी राजा हा वणां कियो के प्रधानजी सांची केवे है। कोरी वातां शूँ हीज वड़ा नी वणाय

है। या तो राजा जनक रे अठे पे'ली ब्राह्मणा री सभा व्हीं' ही, ज्यूं ही अबार रजपूतां री व्ही है। देखां आज याज्ञवल्क्य ज्यूं आपा में कूंण निकळे है। अतराक में जनकजी सारा राजा ने केवायो के म्हारी कन्या रा रूपगुण री बडाई शुण शुण नराई सरदारां म्हारे नखाशूं सीताने मांगी, पण म्हारो प्रण है, के अणी महादेवजी रा धनुष ने तोडेगा वो ही सीताने परणेगा। अणीज वास्ते आप सब सरदारा ने अर्ज कराई ही ने आप सारा सरदारा जो दिन भेळा व्हेबारो थाप्यो हो वो हीज दिन आज है। अने या कन्या वरमाळा लेने उभी है ने यो धनुष भी आपरे मूंडा आगे पड्यो है, सो इने तोडना में आवे जीशूं म्हे भी अणी कन्या ने दे देवूं। अतराक में सारा ही देखे तो रावळा में शूं गीत गावती गावती नरोहो लुगाया निकळी वणारे वच्चे एक कन्या हात में वरमाळा लीधाही, वणी कन्या रो अलोकिक रूप देख लोग लुगाई सारा ही देखताही रे'गिया। जाणे सारांने खुली आखांही नींद आयगी थोडी देर शूं लोग केवा लागा अणी कन्या रे योग वर तो तीन ही लोक में हेरे तोई नी मिले। कणी कियो क्यूं नी मिले। ‹ मुनि नखलो वो शॉवलो कुँवर कणी बात में ओछो है। कणी कियो धनुष टूटे जदी है। कणी कियो देखता जानो अलोकिक रूप में गुण भी अलोकिक ही व्हे'गा। कणी कियो या जोडी जो नी मिले वो जाणणो के

विधाता भी आठही आँखां शूँ आंधो है। दूजा राजा तो वो रूप देखने बेंडा व्हे' ज्यूं व्हे' गिया ने म्हं धनुप तोडूंगा, म्हं धनुप तोडूंगा, करता थका पीचोपीच पडता थका धका धूम खाता खाता धनुप नखे जाय पूगा ने एक धनुप रे हात लगावे जतरे दूजो धका देवे ने, वो जतरे तीजो वणीने धकेल देवे। यूं एक ने एक धकेळवा लागा जदी राजा जनक सारा ने ममझाया ने पाछा बैठाया ने किया। सारा में नवळो व्हे' वो पे'ली धनुप ने ऊँचावे, ने वणीशू नी उठे तो पछे वणीशूँ वत्तो व्हे' वो ऊंचावे। यूं एक केडे एक उठावता जावे, ने सारा में ही सवळो व्हे' वो सवां केडे उठावे। यूं शुण एक दूसरा ने नवळो केवा लागा कोई धनुप उठावा ने जावे ने सारा ही हंमे ने केवे यो नवलो चाल्यो ने साची ही धनुप नखे तो वडा वडा सवळा भी नवळा हीज निस्ल्या। अव तो वारा गोरी राजा जावे ने धनुप ने पूरो बच्छ करने हलावारी करे। राता राता मूंडा पडजावे रमका करे, सॉम भराय जावे, पमोना आगे झगाबोळ व्हे' जावे। पण धनुप तो नाम भी नी हाले। ज्यूं खोडीला री वातां शूँ सती रो मन नी हाले। वापडा राजा तो नीचा माथा कर कर पाछा नवळा री ओळ में जाय बैठे थोडो देर पे'ली जो मूंछां पे ताव देताहा भुज नरखता हा ने खंखारा करता हा वीज धनुप नखे गिया केडे पाछा गगागारी गाय वण वण ने बैठता जावता हा। यूं धीरे धीरे नवळां री

ओळ वधवा लागी, जदी सारा ही आपणो २ जोर जमाय ने थाक गिया। जदी मारा ही राजा केवा लागा के जनक वेटी ने परणावणो ही नी चावे है। दूज्यूं अस्यो प्रण क्यूं करता। राजा जाणे के यो धनुप टूटेगा ही नी, ने म्हारी वेटी सासरे जावेगा हीनी। कणी कियो, राजा बड़ा ज्ञानी है, यूं जाण भगवान सब करशके है, सो भगवान हीज इने तोड़ न्हाखेगा। यूं म्हारा जमाई भगवान ने वणाय लूंगा। कणी कियो कई भगवान रा वाप शूँ भी यो तो नीं टूटे। कणी कियो यूं मती केवो, लाई जनक रो मन टूट जावेगा। आपणे तो यूं हीज के'शॉ के राजाजी री वेटी ने तो भगवान हीज परणेगा। यूं ज्ञानी राजा जनक री वी मूरख राजा रोळां करवा लागा, ने ताळ्यां वजाय वजाय अदना मनखां ज्यूं ठीठाड़ा पाड़वा लागा। यूं छाळक्या पणो राजा ने आछो थोड़ो ही लागे। पण वी तो नामरा राजा हा सांचा राजा तो धीर गम्भीर मुनि नखे विराज्याथका ने सब देख रिया हा। अतराक में प्रधान जो हेलो पाड़ने सारा ही राजा ने पूछ्यो के कई अबे कोई राजा बाकी नी रियो। कई कणी शूँ भी धनुप नी टूटे। जतराक में सारा ही राजा वोल्या नी टूटे, नी टूटे, कणी शूँ भी नी टूटे। आपने वेटो नी परणावणी ही तो पैली ही नट जाणो चावतो। अणी धनुप ने तो अबे भगवान आय ने तोड़ेगा तो टूटेगा, जतरे आपरी कन्या ने कुँवारी राखजो। यूं राजा री वातां

शुण ने सारां ने ही पूरी अवखाई आई । सांची बात है, बेटी रो कुँवारी रे'णो कीने खटे । अतराक में विश्वामित्र मुनिराज बोल्या । यूं सारा ही उदास क्यूं व्हो हो । थें देखो नो, ई वीरांरा माथारा मौड़ दशरथ राजा रा पाटवी कुंवर विराज्या है । अणारे मूंडा आगे यूं घवरावारी कई बात है । या सुण खोड़ीला राजा हंसवा लागा के ई देखो साधुजी भगवान ने ठावा कर दीधा । जदीज तो राजा जनक साधुवांरी संगत राखे है, के वगत पे भगवान ने लाय ऊभा राखे । कणी कियो अरे अणी ने तो सारां रे ही पे'ली मेलणो चावे, तो कणी कियो नो भाई ईने सारां रे ही पे'ली मेलता जदी आपांणे तो मनरी मन में ही रे' जातो । कणी कियो, लो राजा ने थोड़ी देर फेर आशा बंध गो । अणी में आपणो कई जावे है । कतरा ही मूंडारे आडा अंगोछा दे दे'ने हंसवा लागा ने के'वा लागा, 'बोलो मती' आज तो व्याव रो दिन है, सो मुनिराजा रे ने जोगीराजा रे खूब भांगां छणी दीखे है । कणी कियो समाधि में आगली पाछली सारी दीखे, पण मूंडा आगली नीं दीखे है, यूं वणां ओछला राजा ने रोळ्यां करता देख जनकजी तो कई नी कियो, पण लक्ष्मणजी ने कईक रोश आवा लागो । वणांरी वड़ी वड़ी आंखां में राती रातो रेखा फेलवा लागो । गोरो चेरो कईक गेरो गुलाबी व्हेवा लागो । भुँवारा थोड़ा थोड़ा शमटवा लागा, ने वार

घार घणा छालक्या राजा रे सामा जाणे हाथां रे सामी मोनेरी रो छायो देखे ज्यूं उमङ्ग शूँ देखवा लागा। यूं देख मुनिराजा जाणी छोटा बापूरो क्रोध वध जायगा, तो धनुष टूटवा पे'ली ही अणां राजा रा माथा टूट जायगा। यूं विचार मुनिराज राम भगवान ने आज्ञा दीधी, के बड़ा बापू, अबे देर मती करो। अणां दुष्टांरी बात रो पड़ उत्तर हात शूँ देवो, अर्थात् अणांग घमण्ड ने और सारांरा मेंम ने भी अणी धनुष रे साथे ही तोड़ नाखो। यूं गुरुजी रो हुकम शुण ऑपणी वणीज धीमी चाल शूँ नाल रा पगत्या उत्तर राम चोक में पधार गिया ने धनुष रा चौंतरा रा पांच ही पगत्या चढ़ धनुष नखे जाय ऊभा व्हिया और गुरुजी री कानी देख मनोमन नमस्कार कर झुकने धनुष ने पकड़यो। ने लोग केवा लागा अरे यो तो हाल्यो, जतरेक देखे तो उँचाय लीधो; उँचाय लीधो, केवे केवे जतरेक तो चढ़ाय लीधो, ने चढ़ायो केवे जतरेक तो झुकाय दीधो, ने झुकायो केवे जतरेक तो बचमें शूँ तोड़ ने धरती पे नाख भी दीधो। जाणे लोगों रा मन रे हातां ताळो देने राम रो काम आगे निकल गियो। जाणे धनुष पे'ली रोही टूटो पड़यो हो। धनुष रे टूटतां ही अश्यो जोर रो धड़ाको व्हियो, के सारा ही चमक ने उछळ गिया। वा पछे तो कई हो वाहवा धन धन व्हेवा लाग गी' बापड़ा राजा तो भीज्या ऊँदरा

ज्यूं व्हे' गिया। डावड्यां वना (वर राजा रा गीत) गावा लागी। नगारखाना शरणायाँ वाजवा लांगी। वणी वगत जनक राजा रा परोतजी शतानन्दजी जायने कियो सो श्रीजनकनन्दिनी सीताजी श्रीदशरथ राजकुँवार रे कण्ठ में वरमाळा धारण कराय दीधी। श्रीराम भगवान पाछा गुरुजी नखे पधार ने विराज गिया। सख्यां, गीत गावती गावती श्री जानकीजी ने पाछा रावळा में पधराय दीधा। अबे तो आखी मिथिलापुरी में घर घर आनन्द व्हेवा लागो, जाणे सारां रे ही घरे व्याव मंड्यो है। बेटी रा जनम रो उच्छव, वणी ने घर वर आछो मिले जदी व्हे है, ने वणी शू भी वत्तो उच्छव वा बेटी सासरा पीर रो जश करावे जदी व्हे' है। शाँची ही अशी वर जोड़ी तो आज दिनतक कठेई नी मिली व्हेगा। लोग लुगाई बाळक बूढ़ा सारा ही अणी जुगल जोड़ी रा वखाण कर रिया हा। अतराक में तो परशरामजी आय गिया। ई परशरामजी जातरा बामण हा रीश रो तो जालो हा। रजपूत जात ने तो ई बापरो मारवा वाळो गणता हा, ने जणा दिना में रजपूत भी अश्या ही छत्ती खोवण व्हे' गिया हा। रैतरी रखवाली राखणो तो कठेही रियो, पण पोतेही रैतने लूटताहा, चोरी जारी झूँठ ने नशामें लागा रैं ता हा। राजा कई रागश व्हे'गिया हा, रैतरी दोरी कमाई ने आपणा धापरी कर बैठा हा। एक दाण एक राजा अणांरा बाप नखा शूँ वणांरे मोहरी गाय मांगी, ने

परशरामजी रा बाप नट गिया। तो वणांरो माथो काट ने गाय लेलीधी जणी दिन शूँ ही परशरामजी रजपूत जात ने मारवारी टाण लोधी ही। केवे के अकवीश दाण वणां रजपूतांने मारया.पण राजा जनक शरीखा ने दशरथ शरीखा राजा ने ई कई नी केता हा। अणां महादेवजी शूँ आवध वावरणो शीख्यो हो ने महादेव जी रो इष्ट राखता हा। सो आज महादेवजी रा धनुष ने तोड़वारी शुण एक गांम दोड़्या आया ने राजा जनक नखे जाय रीश में आय राजा ने गाळां देता थका केवा लागा, के कणी तोड़्यो, म्हारा गुरुरो धनुष, कणी तोड़्यो म्हारा गुरुरो धनुष। यूं राजांने दवावता देख लच्मणजी ने अचखाई आवा लागी। पण ज्ञानी राजाजनक ने नाम रीस नी आई। अतराक में दूजा राजां ने राजी व्हे' ता देख, छोटा कुँवर री रीश वधवा लागी, ने गुरुजी ने अर्ज कीधी, के ई वामण देवता गेले चालताँ ही आणां सूधा राजा जनक पे क्यूं चरड़ रिया है। हुकम व्हे' तो म्हूँ भी अणांने नमस्कार कर आवूँ। विश्वामित्रजी जाणता हा के परशरामजी शूधा बोलेगा नी, ने छोटा बापू ने खटेगा नी। सो दोही भायांने माथे लेने आपही पधारने परशरामजी शूँ बड़ी धीरप शूँ मिल्या, पण परशरामजी ने तो चंडाळी छूट रे'ही। सो हाका कर कर ने के रिया हा, के कणी तोड़्यो म्हारा गुरु रो धनुप, कणी तोड़्यो म्हारा गुरु रो धनुष। अरे गेल्या जनक.

धनुष तोड़ाय ने थें थारी बेटी रो कई सुहाग चायो । अणी धनुष रो तोड़वावाळा रो माथो अबार म्हूं अणी परशा शूं तोड़ नाखूं गा । झट बताव, कूंण है, म्हारा गुरु रो धनुष तोड़वावाळो । जदी तो सारा ही राजा राजी व्हे'ने केवा लागा म्हां तो पे'ली ही जाणता हा के देवता ब्राह्मण रो अपराध नी करणो । पण ई रघुवंशी ने निमिवंशी तो आज काल घणा ईतर गिया है । सो व्हे'तां व्हे'तां तो परशरामजी गरीखा शूरमा ब्राह्मण शूं ने महादेवजी जश्या देवता शूं ही नीं चूक्या । जदी अणां ने तो ई कधी गनारे ई कई ? ई रजपूतां रा धर्म थोड़ा ही है । लो अबे दो खीरमें हात । यूं ग्वोड़ीला राजा ने राजी व्हे'ता देख छोटा कुंवर बड़ी नरमाई शूं हात जोड़ अर्ज कोधी, के अनर्थ कई व्हियो, सो तो फरमावा में आवे । तोड़वावाळा ने ही अबखाई नी आई, ने धनुषवाळाने ही अबखाई नी आई, पण आपने अतरो कुलपोतर क्यूं व्हे' रियो है । ईरी खबर नी पड़ी । भलां, परशरामजी शूं यूं रजपूत रो बाळक बात कर लेवे, ने सो भी रोश रो वगत में ! अणांरा नाम शूं बड़ा बड़ा शूरा रजपूतां रा साहस सूख जाता हा । यूं शोर में जामकी री नांई लक्ष्मण जी रा वचन शुण ने परशरामजी जोर जोर शू धरती पे पग पटकवा लागा । जाणे डील में भाव आयो व्हे' ज्यूं । रातीचोळ आंखां व्हे'गी, ने होठ फड़क फड़क उछलवा लागा, ने रोश

शूँ दांतां ने पीस ने कियो अरे विना श्यानग छोरा ! कई थारी मौत आपगी है, के सन्निपात व्हे' गियो है सो यूं म्हां शूँ वातां कर रियो है । थूं म्हांने ओळखे के नी म्हारी रीश मेजरी नीं है । रीश में म्हांने ओशान नीं रे' है, जदी तो छोटा कुँवर मुलक ने अर्ज कीधी मांची वात है । सन्निपात में ने रीश में, कोने ही ओशान नीं रे' है । पण रीश में ओशान नीं रेवे या वड़ाई री वात नी है । पण ओशान रे'णो वड़ाई री वात है । शायद आपने या भी ओशान नीं व्हे'गा के म्हें कणीशूँ वातां कर रियो हूँ । परशरामजी तो विनाही वाशटी वळनाहा ने फेर लक्ष्मणजी छेड़ दीधा, जदी तो क्रोध कर कड़क ने बोल्या म्हां शूँ ही रोळां ? बापूजी ने पूछ ने पछे वातां करजो । आज तो रावड़ी रे ही दांत आया दीखे है । खवर है नीं, राजा तो गाडरा है ने म्हें नार हूं । छोटा कुंवर अर्ज कीधी आप सांची फरमावो हो । सांची ही आपने शुध नीं रेवे है । दूज्यूं वामण रा नार कुंकर व्हे' शके, ने राजा रा गाडरा कूंकर वण शके, पण शुध भूल जावे जदी यूं नराई आल पाल दीखता व्हे'गा। आपने कई नार रा शारा ही सेलाण आपरा डोलपे दीखे के एक दोहीज दीखे है । म्हने तो आपरा खांधा पे चौड़े जनेव री डोरो दीख रियो है । आपने कजाणा या कई जणायरो व्हे'गा । जदी तो परशरामजी केवा लागा, वाह, वाह समझ गियो । थांरे मोत माथे नाचवा

लाग गी' है। कॅई धनुष भी थेंहीज तोडचो है। जदी तो रामभगवान आगे पधार बडी नरमाई शूँ अर्ज कीधी यो तो अण समझ चंचल वाळक है। आपरो अपराधी तो म्हे इ। गुरजी न्हे' जो दंड म्हने देवा में आवे। जदी परशरामजी कियो धनुष थें तोडचो है, तो म्हारो मन आणी तोडथो है, जीशूँ थां दोयां ने ही आज जीवता नी छोड्गा। जदी छोटा कुँनर अर्ज कीधी। कोई आपरी जनेव तो तोडी ही नी है। ई धनुष, ने मन, तो टूटं टूटं कर रिया हा, सो इर कणीरे ही माथे आय गिया। अश्या थोदारो आपने ही अतरो सोच नी करणो चावे, आपरे तो जनेव साजी रो। जदी तो परशरामजी कटकट्यां पीस फरशो तोक दोई भायां पे दौड्या, पण विश्वामित्रजी थामने कियो आपांने युं क्रोध नी करणो चावे। साधुरो काम तो चमा करणो है, क्रोध तो ओछी जातरो शेलाण है। जदी परशरामजी छोटा कुँनर रे सामा देखने कियो, के समझ्यो के अणी विश्वामित्र शूँ वंचरियो है। दूज्यूं आज तो नारां री डाढां में आय पडयो हो, जदी छोटा कुँनर फोराक मुळक ने कियो के पाछी ओमान आपने सदा ही फतरी देर शूँ आया करे है, के आज ही ज आय गी'। जदी तो राम भगवान छोटा भाई ने घुरकाय ने हुकम कीधो आपाने यूं नी के'णो चावे। ने पछे परशरामजी ने वडी नरमाई शूँ हाथ जोड माथो नमाय, अरज कीधी। आप वडा हो, वाळकां रो कोई अप-

राध है' तो माफ करणो चावे । और आपरो तो कामही यो है, के म्हें गेलो छोड़दां, तो ज्यूं व्हे' ज्यूं पाछा म्हांने गेले घालो, ने म्हांने भी आप यो हीज काम मळायो है, के गेलो छोड़ने चाले जींने गेले कर देणो । शायद आपरा हाथमें धनुष बाण परशो ने जनेव कांधां पे देखने अणी बाळक विना विचार्यां ही कई अरज कीधी वे' तो क्षमा करजे । राम भगवान रा वचन शुणतां ही परशरामजी रा हीया री आंखां खुलगी' ने वणां कियो कई आप वी रजपूत हो के जी आपतो गेलो नी छोड़े ने दूजां ने गेले चलावे । जदी तो देखां यो म्हारे नखे विष्णु रो धनुष है' इंने चढ़ाय दो । क्यूं के यो अश्या रजपूत विना नी चढ़ शके है । यूं के'ने परशरामजी वणां कने विष्णु भगवान रो धनुष हो, सो राम भगवान ने दीधो । वोतो राम भगवान रो हाथ लागतां ही शैल में ही चढ़ गियो । जदी तो परशरामजी राम भगवान रा नराई वखाण कीधा ने कियो के अबे म्हारे ब्राह्मण रे आवध ऊंचाय ने कई करणो है । दुष्टांने दंड आप घणोही देवोगा । धन धन आजरो दिन है, के पाछा सांचा क्षत्रियां रा दर्शण आज व्हिया है । धर्मरा रखवाळा आप दोई भायांने अणजाण में जो कई केवाय गियो, वो म्हारो कसूर माफ करो, ने आपरो काम अबे आप सम्भाळो । यूं के'ने वणांरा आवध भी राम भगवान ने शूंप ने परशरामजी महेन्द्र नाम रा पर्वत ऊपरे

तपस्या करवाने पधार गिया । यूं ब्राह्मण देवता ने कूंच करता देख खोडीला राजा रा भी देवता कूँच कर गिया। जाणे मूंडा पे दोही आडी बैठगी व्हे'ज्यूं वठा शूं उठा व्हे'ने परा गिया । राजा जनक वरी मनवार कीधी । पण वणांरी छाती तो उच्छव देखणो नी खम सकी । आछा धर्मी राजा वठे ही ब्यावरो आनन्द देखवा ने रे गिया, ने केवा लागा के आपांणा आछा दिन आया जो आपणी जात में अश्या जनमवा लागा । आपांने भी चाने के अश्या री सेवा करां। पण अश्या विचार वाळा राजा घणा नी हा । अवे तो मिथिला रा सारा ही राम भगवान ने जमाईजी, ने लक्ष्मणजी ने ब्याहीजी केवा लागा । ने बडा आनन्द री छोला करवा लागा। रावळा में श्रीजानकीजी ने बेनां, ने शायनियां, अयोध्यारा कुँवराणीजी के'के' ने वतळावा लागी । जदी श्रीसीताजी फरमाई बेनां थें कई म्हारो नाम भूल गी'हो । जदी सारी केवा लागी, भूली तो नी हां, पण नवो नाम सीख्यो है, सो घोखरी हां । जदी श्रीजानकीजी फरमाई के यो नाम थाने कणी सिखायो । जदी सारी केवा लागी । महादेवजी रे धनुष सिखायो ने म्हांने कई सिखावे आखा संसार ने सिखाय दीधो । जदी तो सीताजी वठाशूं उठा व्हे' ने माता सुनैनाजी नखे पधारने विराज गिया । पण वठे भी या छुंगली नवो नाम घोखती थकी जाय पूगी।

जदी गुर्नेनाजी हुकम कीधो थें सारी भेली व्हे'ने क्यूं बाळक-ने कायी करो हो। अतराक में मारा राजां ने डेरे सीख दे ने राजा जनक भी मायने पधारने हुकम कीधो के कई व्हे' रियो है। जदी गुर्नेनाजी अरज कीधी के सारी नवा नाम घोख घोख ने सीता ने कायी कर री हैं। जदी ज्ञानी राजा जनक सबांने बैठाय ने हुकम कीधो के बेटा, संसार में सारा ही नाम नवा ही ज है। जनमतां ही नाम पड़े वो भी नवो हीज है, ने ज्यूं ज्यूं म्होटो व्हे' तो जावे ज्यूं ज्यूं अवस्था परवाणे और सुभाव परवाणे मनख नवा नवा नाम पड़ावतो जाय है। जश्या जश्या काम करे वश्या वश्या नाम पड़े है। म्हूँ चावूं हूं, के थें भी अनसूया सावित्री अरुन्धती जैश्या ज्यूं श्राछा श्राछा नवा नवा नाम पड़ावजो। ने स्याणी समझणी मारीखमा व्हीं'जो। जाणें लक्ष्मी पतिव्रता अश्या अश्या नाम पडावजो ने कर्कशा आलकी, बोकी, ओदशा, चरडांदी, छचीखोवण, कुलखपावणी, अश्या नाम थांणा दुशमणां रा भी पड़ो मती। पछे राणीजी ने हुकम कीधो के अणां बेनां बेनां में घणो मोह है। या विचार विश्वामित्र मुनिराज अणां तीनां री भी सगाई अयोध्या हीज नक्की कीधी है। वणां अणां बायां ने भी देखी है और वणां बाळकांने भी देख्या है। ज्यूं अणा चारांमें ही हेत है, यूंही वणां दशरथजी रा चार ही कुँवरां में भी घणो हेत है। जीं शूँ उर्मिला री

लक्ष्मणजी शूँ और मांडवी री भरतजी शूँ और श्रुतिकीर्ति री शत्रुघ्नजी शूँ निश्चय कीधो है । आपांरो भी यो ही विचार हो, के ई च्यारां नखे नखे रेवे तो ठीक व्हे' सो परमात्मा पूरो कीधो । अठा शूँ लगन लिख ने अयोध्या भेज दीधा है, सो जान लेने महाराज दशरथजी झट ही पधारेगा । यूं हुकम कर वारणे पधार जान रे वास्ते मब तरे'रो प्रबन्ध कराय दीधो । अठीने अयोध्यानाथ भी दोही भायां रो कुशल समाचार ने साथे ही साथे रागशां शूं जीतणो, धनुप तोड़णो, और परशराम जी रो आनध देने परो जावणो, ने चार ही भायां रे व्याव री वात शुण ने घणा राजी व्हिया । अणा मायली आपणा बाळक री एक एक वात शुण ने ही अपार आनन्द आवे, जदी अयोध्यानाथ तो सारी साथे ही सुणी, जदी तो हरप रो केंणो ही कई । अबे तो महाराज दशरथजी गुरु वशिष्ट और प्रधानां शूँ शल्ला कर जान चणाय आछा मौरत में जनकपुर कानी पधारया । वठी ने शूँ राजा जनक भी भाई बेटा उमरावां मरदारां सेती सामा पधार मिल्या । जान ने नगरी में पधराय घणी खातिर कीधी और शुभ लग्नां में चार ही भायां ने शास्त्र री रीत शूँ परणाय दीधा । अणी व्याव रा जगा' जगा' बखाण व्हेवा लागा । पछे विश्वामित्र मुनिराज महाराज दशरथ जी ने कियो के म्हारा मन में घणा दिनां शूँ या लाग री'ही के कोई जोगो राजा रो कुंवर मिले, तो वीने म्हारो घणी मेनत

जदी सुनैनाजी हुकम कीधो थें सारी मेली व्हे'ने क्यूं बाळक-
ने कायी करो हो। अतराक में सारा राजां ने टेर सीख दे'ने
राजा जनक भी मायनें पधारने हुकम कीधो के कई व्हे' रियो
है। जदी सुनैनाजी अर्ज कीधी के सारी नवा नाम सोच
सोच ने सीता ने कायी कर री हैं। जदी डाणीं राजा जनक
सबांने बैठाय ने हुकम कीधो के बेटा, संसार में सारा ही नाम
नवा ही ज है। जनमतां ही नाम पड़े वो भी नवो हीज है, ने
ज्यूं ज्यूं म्होटो व्हे' तो जावे ज्यूं ज्यूं अवस्था परवाणे और
सुभाव परवाणे मनख नवा नवा नाम पड़ावतो जाय
है। जश्या जश्या काम करे वश्या वश्या नाम पड़े है। म्हूँ
चावूं हूं, के थें भी अनसूया साविती अरुन्धती शैव्या ज्यं
आछा आछा नवा नवा नाम पड़ावजो। ने श्याणी समझा.
भारीखमा व्हीं'जो। जाणें लक्ष्मी पतिव्रता अश्या अश्या न
पडावजो ने कर्कशा छालकी, बोफी, ओदरा, चर-
छतीखोवण, कुलखपावणी. अश्या नाम थांणा दुशमणां
पडो मती। पछे राणीजी ने हुकम कीधो के अणां बेन
में घणो मोह है। या विचार विश्वामित्र मुनिराज आ
री भी सगाई अयोध्या हीज नक्की कीधी है। वणां
वायां ने भी देखी है और वणां बाळकांने भी देख
ज्यूं अणा चारांमें ही हेत है, यूंही वणां दशरथज
... ... भी घणो हेत है। जीं शूँ उर्मिला

कयो करो मतो । संगत शूँ ही गुण आवे, ने संगत शूँ ही जावे है । जदी सबां हाथ जोड़ अर्ज कीधी के म्हें आपरी पुत्रियां हाँ, याहो म्हाँने याद रेवेगा, मो म्हाँने दीवारी नाईं गेलो बतावे गा । हे पिता, आपरो उपदेश जो आप घुटको रे लारे म्हांने पायो है, वो आपरी दया शूँ ई शरीर रेवेगा, जतरे अणां शरीरां शूँ नी छूटेगा । पछे सुनैनाजी भी नरो तरे' शूं समझाई, ने साराही मिल भेट ने सारी कुंवरयांने मामरे सीख दीधी । राजा जनक जानने पुगावा नरो छेटी तक साथे पधारचा । पछे महाराज दशरथजी रे घणो हट करवा शूँ सबां शूँ मिलने पाछा मिथिला पधार गिया, ने जान अयोध्या पूग गी' । अयोध्या में आनंद ही आनंद छाय गियो जदया कुँवर, बशी ही सोवती थकी कुवराण्यां ने देख देख सब लुगायां और तीन ही माता और अरुंधतीजी घणा राजी व्हिया । यूं अयोध्यामें घणा सुख शूँ दिन निकलवा लागा ।

यूं श्री मानवमित्र रामचरित्र रो मेवाड़ी बोली में
बालचरित्र पूरो व्हियो ।

शूँ मीग्वी विद्या सिग्वाय, ने पछे भजन हीज करूं, तो आप रा कुँवर ने या विद्या सिग्वाय अबे म्हे नचीतो व्हे'गियां । ई संसार री दुख घणोही मिटावेगा । यूं के'ने मुनिराज सारा शूँ मिलने उत्तराखण्ड में भजन करवा पधार गिया । राजा दशरथ भी अयोध्या जावा री नरी टाण सीग्व मांगी । जदी राजा जनक सगेई डायचो देने कुँवरयां ने सीख्ररो मुहूरत सधाय दीधो । सीख देती वगत राजा जनक सबाने यूं उपदेश दीधो के बेटी तो पराया घर री हीज गणी जाय है । सासरो हीज बेटीरो घर है । मां बाप तो बेटी ने सासरे मेलवाने हीज म्होटी करे है, ने मां बाप बेटा नरा शूँ कँई नी मांगे है । बेटा रा घर रो पाणी भी वणारे अर्थ नो आवे है । व्हे' शके ज्यो सासो आपरो नरवाशूँ देवे, पण एक बातरी आशा बेटी शूँ भी मा बाप राखे है । क्यूं के बेटो तारे' तो एक कुल-ने हीज तारे ने डबोवे तोभी एक कुल्ने हीज डबोवे है । पण बेटी तो सासरा ने पीर रा दोही कुलां ने तार भी शके ने डबोय भी शके है । लुगाई री जातरे वासते शास्त्रां में कोई धर्म, व्रत, तीर्थ, न्यारो करणो नी कियो है । एक पतिव्रत धर्म शूँ ही वणी ने सारो धर्म व्हे' जावे है । व्हे थांणे सासूवां भी घड़ी आछी धर्मात्मा है । फेर अरुन्धती जी जश्या पतिव्रता में शिरोमणि थांणे गुराणीजी है । थांणा आछा भाग है, के थें अशो जगा जावो हो । म्हारी या शिक्षा है के बुरी संगति

कधो करो मतो । संगत शूँ ही गुण आवे, ने संगत शूँ ही जावे है । जदी सबां हाथ जोड अर्ज कीधी के म्हें आपरी पुत्रियां हाँ, याही म्हाँने याद रेवेगा, मो म्हाँने दोवारी नाईं गेलो बतावे गा । हे पिता, आपरो उपदेश जो आप घुटकी रे लारे म्हाँने पायो है, वो आपरी दया शूँ ई शरीर रेवेगा, जतरे अणां शरीरां शूँ नी छूटेगा । पछे सुनैनाजो भी नरी तरे' शू समझाई, ने साराही मिल भेट ने सारी कुवरयांने मामरे सीख दीधी । राजा जनक जानने पुगावा नरी छेटी तक माथे पधारया । पछे महाराज दशरथजी रे घणो हट करवा शूँ मनां शूँ मिलने पाछा मिथिला पधार गिया, ने जान अयोध्या पूग गी' । अयोध्या मे आनंद हो आनंद छाय गियो जश्या कुँवर, वशी ही सोवती थकी कुवराण्यां ने देख देख मन लुगायां ओर तीन हो माता ओर अरुंधतीजी घणा राजी व्हिया । यूं अयोध्यामें घणा सुख शूँ दिन निकलवा लागा ।

यू श्री मानवमित्र रामचरित्र रो मेवाडी बोली में
बालचरित्र पूरो व्हियो ।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

अयोध्या चरित्र

प्रारंभः

चार ही भाई परण ने पाछा अयोध्या पधार्‌या । वणां दिनां कैकय देशरा पाटवी कुंवर भी अयोध्या में आया थका हा । ई, महाराजा दशरथजी रा शाळा, ने वचेट राणीजी रा भाई हा । ई, चारही भायां ने अणां रे अठे बुलावा ने आया हा । पण वचेट राणीजी कियो के भाई म्हांरा राम लक्ष्मण ने तो नराई दिन वारणे म्हारे शूँ छेटी रें'तां व्हे' गिया है। याही व्हे' तो भरत शत्रुघ्न ने भले ही ले जावो । जदी वी दोई भायांने जनाना सेती आपणे कैकय नाम रा देश में ले गिया, ने राम लक्ष्मण दोई भाई अयोध्या में हीज हा ।

एक दाण राजा दशरथ रा मनमें विचार व्हियो के चारही भाई भगवान री दया शूँ परण गिया ने वउवां भी सब तरे शूँ शोभती थकी आय गी', ने बाळक भी स्याणा ने समझणा व्हे' गिया । अबे आपणी वृद्ध अवस्था आय गी'

है। अणी शरीर रो कई भरोसो नी, सो अबे तो एकंत में बैठ भगवान रो भजन करणो चावे, ने राम पे शारां रो ही मोह है, ने राम भी बड़ो लायक ने समझणो है, जीशूं अबे राज काज रामने सूंप देणो चावे। यूं विचार ही में राजा सारां री सला लीधी तो सारां ही कियो, के वाहवा वाहवा आपने जो विचार व्हे' है, वी, आछा हीज व्हे' है। जदी तो राजा सब सामग्री राज तिलक री झट भेळी कराय लीधी। क्यू के आछा काम में देर नी करणी। अणी बात ने जणी शुणी, वणी ही राजा रो हजार हजार मुंडा शूं वाहवाही कीधी ओर जगा जगा धोळ मंगळ व्हे वा लागा। अयोध्यापुरी ने तो लोग आनन्दपुरी केवा लाग गिया। क्यूं के वठे आनन्द पे आनन्द आवा लागा। यूं जगा जगा गाजा बाजा व्हे' ता ने घरां हवेल्यां ओर महेलां ने धोळता ओर हाथी घोडा ने शणगारता, जगा जगा उच्छव व्हे'ता देख कणी ने सुख नी व्हेवे क्यूं के राजा रो, सुख सब आपणो होज सुख समझता हा। केणावत में ही केवे है, के संपत में मारां रो ही शीर है। पण मारा ही मरोग्वा नी व्हे' है। वठे ई ज एक मंथरा नामरो चचेट राणीजी री डायचवाळ डावड़ी ही। वा अवस्था में भी नरी ही, ने पीळ्यां शूं कैकय देश में वा रे'ती ही। चचेट राणीजी रे मांरे वा घड़ी राजीपा रो ही। वणां आपाणी बेटी री भोळो सुभाव जाण, अणी ने डायचे

दे दीधी ही। वचेट राणीजी बाळक पणां में कधी कधी अणी रा बोबा भी चूंवता हा। जो शूँ भी ईंरो घणों मान हो। या भी अणी रा मन में आप ने महा बुद्धिमान जाणती ही। पण अयोध्या में अणी ने आपणी बुद्धि देखावा री तक ही नी मिलती ही। क्यूं के आवी अयोध्या में धर्म ही धर्म हो, अधर्म रो तो नाम भी अयोध्या री नीचजात ने भी नी शुणावतो हो। मंथरा बाई री अक्कल धर्म री वातां में खोड़ी व्हे' जाती ही। पण अधर्म में तो हरण री नांई ठेकड़ी देने दोड़ती ही। आपरी बुद्धि में आछी वातां में शूँ भी खोटाई हेर लावा री शक्ति ही। पण अयोध्यावासी अणी रा अश्या सुभाव ने आछो नी समझता हा। अणी री वात पे कोई कान ही नी मांडतो हो। ईंरी ईंने पुरी असूभणी रे'ती ही। अयोध्या में रे'णो ईंने शुंवावतो ही नी हो। मेळ राखणो, एक एक रा दुःख में साथ देणो, एक एकरी स्वम लेणी, सांच बोलणो, थोड़ो चालणो, मीठो बोलणो, धर्म पे चालणो, ने ईश्वर रो डर राखणो, ईंज अयोध्यावासियां रा शुभाव मंथराबाई ने नी खटता हा। क्यूं के अणां ने ढोला फोत्या विना नी सुहावतो हो। अणी शू आप एकला ही बेठा बेठा गड़ा गूँथ्याँ करता हा। पण अणांरी दाळ कठेही नी गलती ही। आज चानणी पर शूं अणी अयोध्या री झळ मळ देखने विचारयो, के यो फेर कई उच्छव आयो। यूं विचार

नखेही बड़ा राणी जी रा धायजी री हवेली ही, सो वणांने पूछ्यो, के काओ धायजी ! आज फेर अयोध्या ने क्यूं शणगार रिया है ? ने घर घर में कणी वातरो उच्छव व्हे'रियो है ? कौशल्याजी रा धायजी बड़ा शूघा शादा हा। वणां कियो, मंथराबाई थांने खबर ही कोयनी ! थांणा भाणेजजी ने काले राजतिलक है। थें भी वणाव करो। अबे बाळकां रा राज रो सुख देखां, ने आपांरी भी अवस्था आय गा, सो आपां भी भगवान रो भजन करां। परमात्मा आपाँणा जश्या सुख शकल ने ही दीजो। ई धायजी दूजभाव नी समझता हा। पण मंथरा री तो तीन लोक शूं ही मथुरा न्यारी ही, सो या शुणतां ही वी'री छाती में तो कूअड़ी पड़गी, ने बोली, के म्हारा भाणेजजी तो अठे कठे है। वाह यूं कई ठोळां वायो हो ! राम ने राज देता दीखे है। जदीज यूं वध वध ने वातां कर रिया हो। म्हारा भाणेज जी रा राज री शुणता तो अचार कुलकी जश्यो मूंडो व्हियो व्हे'तो। कौशल्याजी रा धायजी, कियो, यूं कई करो मंथराबाई ! कई थांरा ने म्हारा दो है ? म्हूँ तो तीनही राण्यांमें, ने चारही भायांमें, ने चारही बउआं में भेदभाव नी समझूं हूँ। जदी तो मंथरा कियो, के थें नोज समझो बाई। यातो आखी अयोध्या में एक म्हने हीज ढोली रो घोड़ो कर राखी है। पण व्हियो कई ! व्हियो कई ! यूं वी धायजी पूछवा लागा। अणाँ सूधा धायजी ने कँई खबर के

शूधी बात रा भी खोटीला ऊंधा अर्थ होज करे है। वणी वगत तो मंथरा कियो, नी म्हें तो मांह री रोल कीधी ही। दूजूं यो फर्ड कैनो, या बात तो है होज, के राम भरत में कई फरक है। कोई दो घड़ी पे'ली जन्मे, ने कोई दो घड़ी पछे। सूधा धायजी, अणी रो सूधो ही अर्थ समझ, राजी व्है गिया। पण ईंरे तो रोवा में ही राग हो। वणी जाण्यो, राम ने राज व्हियो, ने,तो पावोपावगी'।

यूं जाण था सांतरी सांतरी यचेट राणीजी नखे वंध्ये पेट गी' वणी वगत वी राणीजी, पोढ़्या हा। पण अणीं जावतां ही जंझेड़ने जगाय दीधा, ने कियो वेंडी राणी निना स्यानरी थाई ! उठ, उठ, उठ, थारे ऊपरे तो बीजळी पड़ी। या कई सुवारी वगत है। म्हारी बात ने तो थूं गनारती ही नी ही, पण देखले अब वाही बात आगे आई। भला म्हें धोळा लीधा सो म्हांमें भी कईक तो अकल व्हे'गा। कालरा दिन री छोरी बचे ही तो गई गुजरी नी व्हेऊंगा। पण थारे भावे तो 'सोई कीड़ंया एक दर संगो'। यचेट राणीजी आलश मरोड़ने हुकम कीधो, कई मंथरा जीजी ! यें, भांग तो नी खाधी है, थारो यो कई शुभाव है, कठे तो वादळ ने कठे बीजळी। म्हने तो थारी जीभ होज बीजळी जशी दीखे है, ने माथा रा केश तो धोला वादळा जश्या है। नींद तो नी निकाळवा देवे, ने आपरी वातरी मठावणा कर री'

है। थें कई तो कियो, ने कई आगे आई।' जदी वणी कियो, कई ओदशा थने खबर ही नी है। काले राजा, राम ने राजतिलक दे है। शे'र में घर घर में या चरचा शुणने आई हूँ और ईरो उच्छव आखी अयोध्या में व्हे'रियो है। जदी तो राणीजी घणाराजी व्हिया, सांची है, या बात! सांची है या बात!! तो थें घणी आछी की'। ले म्हूँ थने यो चन्द्रहार राजी व्हेय ने देवूं हूँ। अणी रा उजाळा शूँ अंधारा में भी थारो मूँडो दीख्यां करेगा, । जदी वणी चन्द्रहार ले लीधो, ने कियो के बाईशा, म्हूं तो आपने भोळा हीज जाण ती ही, पण निकळ्या तो आप घणा डावा ।, व्हो' क्यूं नी, राजारी बेटी, ने राजा री राणी, ने अबे अणी बुद्धि शूं तो राजा री मां बाजोगा। पण अबे आपाणे कई करणो चावे, सो भी विचार लां। जदी राणीजी कियो, थूंही केवे नो जीजी! कई करणो चावे। म्हारे तो राम री राजतिलक शुणने ही हिया में हरष नी मावे। थें आछी बधाई दीधी और भी थूं मांगे सो देवूं। अणी बधाई में देवू जशी तो म्हने कई चीज ही नी दीखे।

जदी तो मंथरा बोली आगो बाळ थारा अणी देवाने, और अणी बधाई ने। म्हूं तो जाणी, म्हारी बात समझ गी' दीखे है, ने म्हारा श्यामखोर पणारी परख कीधी दीखे है। यूं के'ने वणी चन्द्रहार ने भी छेटी फरणाय दीधो, ने होबड़ो

चढ़ाय ने भोळा राणीजी कैकयीजी पे रीश करने देखवा लागी ने ढळक ढळक आंशू पटकवा लागी। जदो राणोजी विचारी, वात कई है। या यूं क्यूं करे है। राम रो आछो नी सुहावे। अश्यो मनख भी संसार में व्हे' है, या अणां राणीजी ने खबर नी ही। अणां पुछ्यो मंथरा जीजी, थूं यूं क्यूँ रोवे है। म्हारी मती तो कोनेहो दुखो नी देखणो आवे। थूं रोवे मती, थूं केवे नी। म्हने तो थारी वात में कई खबर ही नी पड़े जदी तो जाणे जगावारी घड़ी झरणाट करे ज्यूं वणी री जीभ बोलवा लागी, ने वचेट राणीजी चतराम रा व्हे'ज्यूं वणोरो वातां शुणवा लागा। ज्यूं ज्यूं वणोरी जीभ मूंडा में फिरवा लागी यूं ही यूं राणोजी रो मन फिरवा लागो। ज्यूं उडावा वाळा रा हाथ रे साथे साथे पतंग फिरे है, यूंही वींरे साथे साथे राणी रो मन फिरवा लागो। ज्यूं डाकण दूजी ने भी 'म्हूं जशी थूं, के' ने आपणे जशी करले है। यूं ही अणी रांड जाणे राणीपे कामण करलीधा। शांचो है, खोटो वात पे कान मांड्या ने जाण-लेंणो, के अबे खोटा दिन आय गिया। पे'ली हियो फूटे है, ने पछे करम फूटे है। अश्या आछा धर्म वाळा राणीजी भी जदी यूं भगरायां लाग गिया, जदी दूजाँ री तो के'णो ही कई। वणो कियो, देखो बाइसा, आज अठे अयोध्या रा... ...ई नो है। मन आपरा ...

है । म्हूँ बूढ़ी हूँ, आपरो अन्न खातां खातां पीढ्यां बीतगी है । दूखे जदी केणी आवे है । 'कड़वी बोली मायड़ी, ने मीठा बोल्या लोग' । म्हूँ अबे मरवा चाली हूँ, एक शाड़ी के दो शाड़ी फेर फाड़ूंगा । पण आगे जाय ने भगवान ने जवाब देणो है । मानणो नी मानणो आपरे हाते है, पण म्हूँ तो म्हारे के' ने दोष वारणे परी निकळूं । काल कलांतर आप होज केवो गा, के, थूं तो श्यामखोर ही, थने तो के'णो चावतो हो । साँप तो परो जावे, ने पछे रीगटी कूटवा शूँ कई व्हे' आप के वो हो के म्हारी मतो कणी रो ही दुख नी देखणी आवे, पण काल रे दिन धोया मूंडा रो बाळक भरत, ने वीं'री वऊ वनी वनी में वलख वलख करता फिरेगा । जदो कूंकर देखणी आवेगा । काले कोशल्या रो पीशणो आपने पीशता देख, ने रामसीता रो गोल पणो वेटा, ने वेटारी वऊने करता देख, आपने कश्योक आछो लागेगा, अणी आपरी खोटी मत शूं आपरा पीरवाला भी दुख पावेगा । आपरी मुरजी व्हे'तो आप अबार्णू ही कोशल्या ने सुमित्रा रा ठामड़ा मांजो ने पाळा नाखो । पण बावा, म्हां शवां ने क्यूं डबोवे है ? धोया मूंडा रा वेटा, ने वेटारी वऊ री तो, बापड़ी रागशणी व्हे' तो वींने ही दया आवे है । ई तो केवा री वातां है, के म्हारे भरत राम वच्चे ही वत्तो है । थूं भोळी बाळक, अणां छळ परपंचा में कई समझे । नी तो थूं पतवारा ने देखले नी, के थने दो

वरदान, राजा देणा कीधा, सो एक वरदान तो यो मांग के, भरत ने राजतिलक व्हे' जावे, ने एक यो मांग के राम साधूरी नांई चवदा वरप तक वन में रेवे। पछै सवरो थनै चाशणी दीख जायगा, के भरत में, ने राम में भी कतरो फरक ममझे है। मूंडे ज्यूं हो मन में व्हे'ती तो या वात थारा शूं क्यूं छुपावता। अबे जो म्हें कियो जणी में नाम भी कशर कीधी, ने कणीगे ही भगेशो कीधो, तो पछै तो थारो स्वर्ग ने पाताल में कठेई ठिकाणो नी लागेगा। यूं वणी वणां राणीजी ने पढाय दीधा। वा वालक पणां शूं कैकयी जी गे शुभाव जाणती ही सो रोश देवाय डरपाय ने भंगराय दीधा, ने छाने री छाने सब वात पक्की कराय, ने जे'र रा बीज वाय, ने पाछी घरे परीगी'।

राणीजी ने तो भे'म ने रीश आगे सब वाता ऊंधी दीखवा लाग गी'। रांड मंथरा रो दाव लाग गियो। राणीजी विचारी, सांची है। संसार में कोई कंडोई कोय नी। म्हूं जणां पे जीव छांटती ही वी'ज म्हारो जीव लेवारी घात में लाग रिया हा। आखर में आपणो व्हे' जोई काम आवे। दानो तो दुपमण ही कठे पावज्ये। सांची है, संसार ही अणी तरे'रो वण्यो थको है, के जझ्यो मन व्हे' वश्यो ही दीखवा लाग जावे है। थोड़ी देर पे'ली जणां वातां ने राणीजी आछी समझता हा, वणां ने ही खोटी समझरा

लागगिया, ने आपही आपरा मनमें अचम्भो करवा लागा। संगत रो गुणाञ आया बिना नी रेवे, धोळ्यो काग्या कने रें'ने रंगनी लेने, तो भी लख्खण तो लेवे हीज'। अबे तो महाराजा दशरथजी राजगुरु वशिष्ठजी ने अर्ज कीधी, के रामसीता ने आज व्रत राखवा रो हुकुम कराय देवाने ने प्रभाते राजतिलक रा मोरत री भी वणांने केनाय देवाने, सो वणी वगत त्यार रेवे, सो मोरत सब जावे ओर भी जरुरी जरुरी सब प्रबन्ध कराय देवे। जद वशिष्ठजी सब प्रबंध कर काढ्यो ओर श्री सीता राम ने भी सब वाकब कर दीधा।

पछे महाराजदशरथजी राते रावळा में वचेट राणी जी रे अठे पधारया। अणा वचेट राणी जी पे राजारो मोह वणो हो। क्यूकेई भोळा ने नेरा हा, ने रुपाला भी घणा हा। पण कानांरा काचा घणा हा। आज राजा विचारी राम रे राजतिलक री राणी नेगूहीज वधाई देवूंगा, ने अणीज वास्ते मरां ने ना हुकम कराय दीधो, के वचेट राणोजी ने कोई या खबर नी देवे। पण अणो वधाई ने तो मथरा ओर तरें'शूं छानेरी छाने दे'ने परीगी'। ईंरी राजाने भी खबर नो ही। राजा नेदेखने राणोजी होनडो चढाय लीधो ने ठळक ठळक आखा में शू आंशू पटकवा लागा, ने नोचो मूंडो करने राजा रे सामा देखे ही नी। राजा बडा दयाल हा, ने फेर आपणी सुख दुख री साथण अग्नी ने सायखी करने सात फेरा री परणी राणी ने यूं दुख

देख, वणां रो मन तो कई रो कई करवा लाग गियो । वणां ने कई खबर ही के ई रे आज कानांगुरु और ही लाग गिया है । अबे या, वा, राणी नीं है । राजा बड़ा मोह शूं वणां राणी रो मूंडो आपणा हाथ शूं ऊंचो कर कियो, के हे प्यारी, कमल सरीखी आखां वाळी, थारे आज कई व्हियो है, कई कणी थारो अनादर कीधो है ? जदी राणी कियो म्हारो गेले चालतां कूण अनादर करे । भगवान आपने चिरंजीव राखो नी । फेर राजा कियो के हां थांरा रामरो प्रभाव राजातिलक है । जणी री भी थाने खुशी करणी चावे । खबर है, के नी ? जदी राणी कियो, आपरी शुभ नजर शूं खबर है । के अणी चरचा ने आज पनरा पनरा दिन व्हेवा आया है । जदी राजा पूछी या थांने कणी खबर दीधी । राणी कियो वायरे । राजा कियो, वायरो कणी मूंडा में शूं निकळ्यो तो व्हे'गा । राणी कियो वायरो वायरो एक हीज है । चावे मूंडा में शूं निकळो चावे रूखड़ा में शूं । देखजे नी आप हीज पे'ली हुकम कीधो, हो के दो वरदान मांगो । थां म्हारो आज जीव बंचायो है । पण वो भी रूंखडा पे वायरा रो शरणाटो व्हे' ज्यूं हीज व्हियो, वणीरो कई फळ निकळ्यो । अबे तो म्हूँ मनखां रा केवा ने कोरी रूंखड़ा रा पाना री खड़खड़ाट ज्यूं समझवा लागगी' हूँ । क्यूं के मनख केवे और, ने विचारे और, ने फेर करे और ही है । राजा कियो, ओहो ! आपने अणीरी रीश आयरी है या

तो म्हांने खबर ही नी ही, ने रघुवंशियां रा केना ने भी कोरो वायरो वाजे ज्यूं ही समझ लीधो है। यो तो थांहीज कियो हो के म्हारी मुरजी व्हे'गा जदी मांग लूंगा, ने नी मांग्यो तो ई में कसूर कीरो है ? थांरे मांगवा पे म्हे देर कीधी व्हे' तो वात ही है। यूं मनखां ने झूंठो अपराध नी लगावणो चावे। व्हानी अवेही मांगलो। फेर यूं भूल ही भूल में दिन निकळ जायगा, तो रघुवंशियां रा वचना ने आप फेर वायरा ज्यूं समझ लो'गा।

जदी तो राणी कियो, के आप सा'च हाज बोलो हो ने अग्या शुद्ध मनरा हो, ने आपरा केना मे ने मन में फरक नी है, तो ज्यो राजतिलक री सब सामग्री राम रे वास्ते भेली कीधी है, वणी शूं भरत ने राजतिलक देवाय दीजो। या शुण राजा कियो, राम भरत में कई फरक है। पे'ली ही कियो व्हे'तो तो म्हूं रामरे तिलक री नी के'तो ने भरत री मनांने के'तो। राणी कियो, ई छळ कपट अबे नी चालेगा। पे'ली तो केवारी कई, म्हारे कान मे भी या वात नी आवा दीधी ही। ने हाल तो म्हारो एक वरदान फेर बाकी है सो यो यो मागुं के प्रभाते राम साधुरो वेप कर दंडक वन कानी चल्यो जावे। या शुण ने तो राजा नरी देर शुन्न व्हे गिया, ने विचारी के राणी तमाशा करे है; के, म्हूं वेंडो व्हे' गियो हूं, के म्हने यो सपनो तो नी आय रियो है। जतराक

छेन करो हो वी आप जश्या रघुवंशियां रा पाटवी रो अपजश करावे हैं। अवे तो दो हीज वात है, के हां, के, ना।

राजा ने आखी रात यूं छाती में कुअडी घश जशी वातां शुणतां शुणतां, घणो दोरी वोती, ने अयोध्या वामियां ने हरप में रात निकळता देर हो नो लागी। प्रभाते सव लोग वणाव करने महेला में भीड़ री भीड़ राजतिलक रो उच्छव देखवा ने भेळा व्हेवा लागा। फतराही सवारो देखवा ने चानण्यां पे एकठा व्हे' व्हे' ने वैठ गिया। वजार में भीड़ पड़वा लाग गी'। घोड़ावाळा घोड़ाने, ने रथांवाळा रथांने, ने हात्यांवाळा हात्यांने, शणगार ने त्यार राख्या। 'तरे'तरे' रा वाजा वाजवा लागा, ने रंग राग व्हेवा लागा। मनख जाणता के आज' तो राजा घणा वेगा वारणे पधारे गा। पण नरोई मोड़ो व्हे' गियो, तो भी राजा वारणे नो पधारया।

जदी राजगुरु वशिष्ठजी, सुमंत्र प्रधान ने कियो, प्रधानजी थें जाय खवर पाड़ो। हाल तक राजा क्यूं नी पधारया? हाल तो काम नरोई करणो है, सो देर व्हेवा शूं मौरत नी सध शकेगा। नी व्हे' थें अर्ज कर आवो सो तिलक रो काम प्रारम्भ करां। अणां प्रधान जी री रावळा में जावारी रोक टोक नी ही, सो ई रावळा में सूधा कैकई जी रा महेला में परा गिया। वठे जायने राजाने देख्या, तो जाणे छै महीना रा माँदा व्हे' ज्यूं व्हे' रिया हा। सुमंत्र जी विचारी, एक रात ही रात में यो कई व्हे' गियो।

में तो फेर रीश करने राणी बोली । हे हरिश्चन्द्र रा वंश रा रघुवंशी महाराज, आपरे, यूं हीज मूंडे ज्यूं हीज मनमें भी रे'तो व्हे'गा । अगार कोशल्या राणीजी रे केवा शूं तो राम ने राज, ने भरत ने देश निकाळो देवा ने त्यार व्हे' गिया । वातो थूंके तो भी आप चाटवा ने त्यार हो, ने म्हारे जो वचन दीधा, जणां में ही घरती आकाश ताकणा पड़े है । यूं कयूं नी व्हे' । राम तो आपरी राणी रो बेटो है, ने भरत तो आपरो पाशवान्यो व्हे'गा । राजा विचारी या कई वजराग पड़ी । अबे तो राजा ज्यूं ज्यूं राणी ने समझावे ज्यूं ज्यूं वीने मंथरा री वात मांची दीखे, ने वा ऊंधा हीज ऊंधा अर्थ काढ़े । राजा जाण लीवी, के अबे राणी म्हारो जीव के धर्म दोयां में शूं एक लीधां विना नी छोड़ेगा । पे'ली भी अश्या वगत आया, जदी रघुवंशियां धर्म रे मूंडा आगे प्राण री परवा नी कीधी ही । म्हारा भी अबे सुखरा दिन व्हे' गिया दीखे है । म्हें अणी राणी शूं व्याव कई कीधो जाणे मौतने हाथ पकड़ ने घर में लायो । यूं निराश व्हे'ने राजा जीव भूल गिया, ने पाछा चेत में आया, तो राणी कियो, यूं भांडारो नांई ढवला करवा शूं अबे काम नी चालेगा । आप ने नीति आवे जशी म्हने भी आवे है । आप राजा हो, तो म्हूंभी राजा री बेटी हूं । अबे जो प्रभाते तिलक रा मोरत में वनवास रो मोरत नी सध्यो, तो आपरो वचन गियो ने अणी में जतरा जतरा आप

छेन करो हो वी आप जश्या रघुवंशियां रा पाटवी रो अपजश करावे है। अबे तो दो हीज बात है, के हां, के, ना।

राजा ने आखी रात यूं छाती में कुअडी घशे जशी वातां शुणतां शुणतां, घणो दोरी वोती, ने अयोध्या वासियां ने हरप में रात निकळना देर ही नो लागी। प्रभाते सब लोग बणाव करने महेला में भीड़ री भीड राजतिलक रो उच्छव देखवा ने भेळा व्हेवा लागा। कतराही सवारी देखवा ने चानण्यां पे एकठा व्हे' व्हे' ने बैठ गिया। बजार में भीड़ पडवा लाग गी'। घोड़ावाळा घोड़ाने, ने रथांवाळा रथांने, ने हात्यांवाळा हात्यांने, शणगार ने त्यार राख्या। तरे'तरे' रा वाजा वाजवा लागा. ने रंग राग व्हेवा लागा। मनख जाणता के आज' तो राजा घणा वेगा वारणे पधारे गा। पण नरोई मोड़ो व्हे' गियो, तो भी राजा वारणे नो पधारया।

जदी राजगुरु वशिष्ठजी,सुमंत्र प्रधान ने कियो, प्रधानजी थें जाय खबर पाडो। हाल तक राजा क्यूं नी पधारया? हाल तो काम नरोई करणो है, सो देर व्हेवा शूं मोरत नी सध शकेगा। नो व्हे'थें अर्ज कर आवो सो तिलक रो काम प्रारम्भ करॉ। अणां प्रधान जी री रावळा में जावारी रोक टोक नी ही, सो ई रावळा में सूधा कैकई जी रा महेला में परा गिया। वठे जायने राजाने देख्या, तो जाणे छे महीना रा मॉदा व्हे' ज्यूं व्हे' रिया हा। सुमंत्र जी विचारी, एक रात ही रात में यो कई व्हे' गियो।

फेर धीरज राख सुमंत्र अर्ज कीधी, गमरे राजतिलक री मोड़ो व्हें जायगा, अणी वास्ते झट हुकम व्हे'णो चावे । या शुण राजा तो कई भी नी बोल्या, ने बोले कई, वणांरो मती बोल-वागे करे तो मी बोलणो ही नी आवे, ने केवे तो केवे ही कई, हां भी कूंकर केवे, ने ना भी कूंकर केणी आवे । जदी तो राणी कियो, प्रधानजी ! एक दाण राम ने भट अठे बुलाय लावो । पछे ईरो जवाव पूछज्यो । प्रधानजी पड़ाख गिया, के, कई-ने-कई राणी री कळा दीखे है । पण राजा राणी री खानगी बात ने पूछ ताछ मगत करणी ठीक नो । यूं जाण वणा कियो, के विना राजा रा हुकम रे आपरा हीज हुकम शूं म्हें कोई काम कूंकर कर शकों । जदी तो राजा भी कियो, के हॉ । जदी तो सुमंत्रजी जायने रामचन्द्र भगवान ने बुलाय लाया । रामचन्द्र पधारतां ही पिता शूं मुजरो कर कैकयी माता शूं मुजरो कीधो, ने पिता ने उदास देख राम ने बड़ो दुःख व्हियो, के ओहो रात ही रात में अन्नदाना री या कई दशा व्हे'गई, ने म्हने तो देखतां ही पिता सब काम छोड़ने म्हारे शूं हीज वातां करवा लाग जावे है । पण आज तो म्हारे सामा देखतां ही पिता ने लाज आवती व्हे' ज्यूं दीखे है, ने ई कई हुकम करवारी करे है, ने आखां में शूं आंशू पड़वा लाग जावे है, या कई बात है । यूं विचार, हाथ जोड धर्मवाळा राम कैकयी माताने बड़ो लायकी शूं अर्ज

कीधी। बाई ! आज अन्नदातारा दर्शण कर म्हारो जीव कई री कई व्हे' रियो है । कई म्हारे शूं अणजाण मे कई कशूर तो नी व्हे' गियो है । जी शूं आज अन्नदाता म्हारे सामाही नी न्हाले है। ओर म्हने देखवा शूं वडो दुख व्हे' तो व्हे' ज्यू जणावे है । जदी तो वशरडी राणी बोली, राम, कशूर री कई वात है । कशूर व्हे'तां कई देर लागे है । विना स्वारथ तो कोई कणीरो ही कशूर नी करे । पण स्वारथमे कशूर वशूर री कूँण विचारे है। पण बेटा ! थूं वडो धर्मात्मा वाजे है। थारे वास्ते तो सारा ही केवे के राम रे तो धर्म री हीज स्वारथ है। आज दिन तक ही थें कशूर नी कीधो तो अबे तो कई करेगा। पण तो भी थारा पिता ने अणी वातरो भे'म है, के म्हारो कियो राम करे, के कजाणा नो करे। सो थूं बचन देवे के म्हूं नी बदलूंगा, तो म्हूं थने सब वात माफ साफ समझायदूं राजा तो कई भी नी केवेगा।

जदी राम भगवान हाथ जोड अर्ज कीधी, आप में ने अन्नदाता में कई फरक है । आप भटही हुकम करवा में आवे ने राम रा वचन तो मनही सांचा हीज समभ्या में आवे । कई रामरे वामते रामरा माता पिता ने ही यो भे'म है, के राम म्हांरा के'णा ने लोप जायगा ? अश्यो भे'म माता पिता ने पुत्र री व्हे'णो ही म्हूँ आछो नी

ममभूं हैं। परन्तु केवा शूं नी पण करवा शूं मनख री खबर पड़े है । आप राम ने हुकम कर दिया है, या हीज विचार ने मे'म छोड़ हुकम करवा में आवे। जदी तो राजी राजी सब वात राणी राम ने वाकब करदीधी, ने नाकरे शल तक नी चढ़ायो। या मां रा मूंडा शूं वात शुण राम फोराक मुळक ने अर्ज कीधी। यश अतरीक वातरे वामते पिता ने अतरी अवखाई पड़ी। म्हने तो राज बच्चे वन घणो आछो लागे है। माता ! आप वरदान नी लीधा है, पण म्हारा पे कृपा कर ने ई वरदान म्हने देवाया है। जो अन्नदाता राजी व्हे'ने म्हने वरदान मांगवारो हुकम करता, तो म्हूँ भी ई हीज दोही वरदान मांगतो। पण आश्यो वर मांगवा शूं पिता बैराजी व्हे' जायगा। यूं विचार कई अर्ज नी कराय शक्यों हो। पण मां विना बाळक री पीड़ा कूण ओळखे। म्हूँ वन में जावारो सब वंदोवस्त करने, माता कौशल्या शूं मिलने, पाछो झटही हाजर व्हेऊं हूँ। आप कई विचार नी रखावे। आपरो हुकम राम नीचो नी पड़वा देवेगा। यूं अर्ज कर राम पाछी माता कौशल्या नखे शीख मांगवा पधार गिया, ने या वात आखाही शेहर में फेलगी। शुणतांही सरां रा मन मुरझाय गिया। बाळक घराधरु रामरो वनवास शुण ने रोवा लाग गिया। वनवास शूं राजी हा तो, केक तो राम, ने केक केकयी हा। अणा दोई मां बेटारे सिवाय तो आखी

अयोध्या में शोकही शोक छाय गियो हो'। एक मंथरा री भी हियो हिलोळा ले रियो हो। कोई कं'तो, यो काम कैकईजी तो नी करे । कोशल्याजी भरत ने राज देवारी कीधी व्हे' गा। कणी कियो, भरत ने तो वड़ा राणीजी वत्ता गर्णे। पण रामने वनवास क्यूं देवाने। कणी कियो, अणी वररो तो शंप संसार चखाणे है। अठे या फूट कठा शूं घुशी। कणी कियो, ई काम वड़ा आदम्यांरा तो नी है, कणी नीचरो या अकल दीखे है। कणी कियो, नीच रे माथे कई शींगड़ा व्हे है, जो नीच काम करे सो ही नीच। कणी कियो, या राग-शांरी चाल है, वणां री जोर नी चाले, जदी वी आपस में लड़ाय दे है। राम शूं तो वी खारा है। क्यूं के रामरो सुभाव वणां ने नी खटे है। राम रे राजतिलक व्हेवा शूं वणांरो कठेई दाव नी लागतो। जीशूं वणां कणी ने ही छाने-री-छाने शिखाय ने वचेट राणीजी ने भंगराय दीधा दीखे है।

यूं 'जतरा मूंडा वतरी वातां' व्हेवा लागी। पण जठे देखो वठे या री याही चरचा चालरी ही, ने कतराक तो शोक शूं ने रीश शूं वचेट राणीजी ने तरे' तरे' री गाळां देवा लाग गिया हा, या खवर कणीक लक्ष्मणजी ने भी दे दीधी, सो, वी भट दोड़ वड़ा भाई कने पधार गिया। वणी वगत राम भगवान कौशल्या मातारे नखे पधार शीख मांग रिया हा। सो लक्ष्मण जी अर्ज कीधी आपरे वन में पधारवा री कई बात है। आपाणा

मनशूं आपांने वनमें जावणो चावे । यूं वनवास तो आपणे वंश में कोई खोड़ीलो व्हे' है वणी ने व्हियां करे है। भलां या कतरी अपजश री वात है, के आपने पिता वनवास (देशनिकाळो) देवे । आप कसूर कई कीयो है, ज्यो वनवास देवाने त्यार व्हिया है । ने फेर वड़ा अचंभारी वात तो या है, के विनाही अपराध आप खुद ही अपराधी री नांई वन में पधारवाने त्यार व्हे' गिया हो । राजा ग वचन ही पालणा है, तो राजातो आपने राज देवारो वचन दे दीधो है । वणी ने आप कुंवर छोड़ शकोगा, ने वनवास री आज्ञा राजागी नी है, या तो वचेट वाई कणीरे ही भंगरावा शूं के' रिया है, ने आणी ने मानवा शूं आपणा वचेट मां ने जीवे जतरे कलंक लाग जावेगा । आपांने माता पिता रो संसार में जश करावणो चावे, के बुराई ? अवार शूं ही राजा राणी री बुराई आखी अयोध्या, मूंडा भर भरने कर री है, ने या वात फैलवा पे जो शुणेगा वो ही वॉरी बुराई हीज करेगा । सब सामग्री त्यार है– हीज पधारवा में आवे, ने राजगादी पे तिलक करावा में आवे । देखां कणीरी मूंडी है, ज्यो लक्ष्मण रे ऊमां आपरे आड़ी देखलेवे। म्हारे चाकरी पूगवारो मोको तो यो अवार हीज आयो है । भलां वापरो राज छोड़ ने यूं कोई वनवास में पराजावे कई ? वचेट बाई भलेई घणांरा पीर री बतीशी चड़ाय लावज्यो, अथवा सबही एक कानी व्हे' जावो, ने आपरो चाकर यो लक्ष्मण

एकलो ही सबांरे वासते घणो । राजा वनवास करता करता आपने कठीने वनवास देवा लागगिया । आपणे तो दाना व्हे' जी वनमें रे'ने परमेशर रो भजन करे है, ने बाळक विद्या भणे है, ने जवान रैत-रो पालण करने परमात्मा ने राजी करे है । सो आपरी नांई धर्म राख नें दूजो कुण्यो शींगजी है, ज्यो रैत ने पाळेगा? जो वड़ा भाई रो राज ले' ने राज करेगा वणांरी धर्मात्मा पणांरी चाशणी तो पे'ली ही दीखगी । आपरा एक सुधा सुभाव शूं आखी संसार ने दुख व्हेगा । अबे म्हारी या अर्ज है, के केक तो म्हारी या बात मंजूर करणी चावे, नी तो दूसरी या अर्ज है, के म्हने भी साथे लै पधारे । जो ई दोही बातां मंजूर नी व्हे', तो पछे लक्ष्मण रो सुभाव विचार, ने जो मुनासिब व्हे'सो करावे । पछे म्हारो अपराध नी है । श्रीराम भगवान बड़ो धीरप शूं हुकम कीधो, भाई ! ज्यो आपणो न्याव नी कर शके, वो ओरां रो न्याव कई कर शकेगा । आपां ने तो आपणो कई धर्म है, सो विचार लेणो चावे । ई सब बातां थूं ठीक के'रियो है । पण अणां में राज रो लोभ मिल्यो थको है । आपणो आराम जणी में मन चावे, ने ऊपरला मनशूं वी में धर्मरी कळी करणी, तो एक तरे'रो छळ है । ने म्हूं जाणूं हूं के अशी वात थें म्हारा मोह शूं म्हारे हीज वासते की'है । पण भाई ! मनरी पारख आपां ने अश्याही मोका पे करणी चावे । जीशूं राम रा वनवास रा

निश्चय ने अबे रोके जश्यो, कोई नी है। थारो भी वन में साथे आवारो मन है, तो माता पिता ने गुरुरी आज्ञा लें ने आय शके है। ने वहू भी राजी व्हे' ने के' देवे, तो भलेई आव। म्हारी जाणमें थूं अठे रे'ने माता, पिता, गुरु ने वड़ा भाई री सेवा कर शके, तो अठे ही रे'णो घणो आछो है। जदी लक्ष्मणजी अर्ज कीधी, के या वात तो म्हारे शूं व्हे'वारी ही नी है। कदाच अणी शूं ऊंधी कईक व्हे'जाय गा। जी'शूं म्हं साथे ही आवणो चावुं हूँ, ने आपरी सेवा रे वास्ते म्हने कोई नी रोकेगा। सब राजी राजी शीख दे देवेगा। यूं के'लक्ष्मण जी सुमित्रा माता शूं शीख मांगवा पधार गिया, ने या खबर श्री सीताजी ने भी कणी जाय, ने अर्ज कर दीधी। जदी तो श्रीजानकीजी वठे पधार गिया, ने शाशूजी नखे विराज गिया। वणी वगत कौशल्या माता रामने हुकम कीधो। बेटा! थारा माता पिता रा हुकम में म्हूँ थाने रोक नी शकूं हूँ, ने रोकूं ही क्यूं। थारो धर्म थूं खुद समझ रियो है। माता पिता रो काम बालक ने धर्म शिखावारो है। नो के अधर्म शिखावा रो। पण धर्म रा सार ने थूं जाणे, जश्यो म्हूं लुगाई री जात कई जाणूं। पण म्हूँ अतरो तो जाणूं हूँ, के लुगाई रो धर्म पति री सेवा करवारो है। पण अठे थारी दो माउवां, पति री सेवा कर ही ज री' है। अणी वास्ते बूढ़ी ने दूबळी गाय ज्यूं तांग्यां खाती खाती वाछरु

रे साथे साथे फरती फरे है, यूं ही म्हूँ भी थारे साथे साथे वन में धीरे धीरे चली आऊंगा। म्हने कई अबकाई नी पड़ेगा। जदी राम हाथ जोड़ अर्ज कीधो। वाई ! आपरा मुखारविंद शूं यो वचन ठीक नी लागे। परमात्मा अन्नदाता ने प्रसन्न राखे। वन में पधारवा में आपरे कई फायदो है। अठे अन्नदाता रे चित्त ने आप शूं जशी शांति मिलेगा वशी दूज्यूं मिलणी मुशकिल है। पतिरी सेवा, ज्यो आप स्त्री धर्म हुकम कीधो, सो घणी सांची वात है। अणी वासते दुख री वगत में भो धर्म धारणो ही आपने शोभा देवेगा। सुखमें ने स्वारथ में धर्म ने कुण छोड़े है[1]। जदो तो कौशल्या माता हुकम कीधो। वेटा ! थारो केणो धर्म शूं भरयो थको है। म्हूँ अठेही रे'ने, पति री ने पति रा हुकम शूं थारी वचेट मां री चाकरी भी करवाने त्यार हूं। जदो श्रीजानकीजी अर्ज कीधी, म्हारो भी यो धर्म है, के म्हूं भी पति रा सुख दुख में साथे रेवुं। म्हने बाळकपणां शूं ही या शिचा मिली है। जणी तरे' शूं कीने ही माता पितारी चाकरी रो यो अवसर मिल्यो है। ने ज्यूं कीने ही पति सेवारो, ने कीने ही भाई री सेवारो मोको आयो है, यूं ही म्हारे भी यो परमात्मा री दया शूं पति री सेवारो मोको आयो है। जदी राम भगवान हुकम को घो, म्हूं थणी ने ही आपणो धर्म पाळतां नो रोकणो चावुं हूं। परन्तु

---

१ ओळखे है—म्हें'णो चावे। संपादक—

अठे भी शासु शशुरा री सेवा करणो कोई ओछी वात नी है और वन में मामी लुगाई री चाकरी आदमी ने करणी पड़े है । जणी रे चार पावंडा चालवारो ही मावरो कोय नी, वणीशूं भयंकर वन में चाकरी री आशा कणी तरे' शूं व्हे'शके है। अठे मातारे नखे कोई चाकरी करवा वाळो ने समझाना वाळो भी चावे । अवार अशो तो दुखरो वगत है, ने अशी ही वृद्ध अवस्था है । अशो वगत में ही बेटारी वऊ नखे नी रेवे, जदी कशी वगत रे वामते है। जदी श्रीजानकीजी अर्ज कीधी, के म्हूं उर्मिला ने अणी काम में लगाय दूंगा । वा म्हारे वचे ही आछी तरे शूं यो काम कर शकेगा, ने म्हूं तो आपरा चरणार-विन्दां शूं छेटी रे'णो नी चावुं हूं । अठी ने लक्ष्मणजी भी माता शूं शीख मांगी, ने सुमित्रा माता राजी राजी शीख वगश दीधी । वणी वगत उर्मिलाजी भी साथे पधारवा री हठ कीधी । पण लक्ष्मणजी वणांने यूं समझाया के थांरे आवाशूं म्हारे माता पिता वचे ही वत्ता भाई भोजाई री चाकरी में कशर पड़ेगा । थांरी शार संभाल न्यारी राखणी पडेगा ओर थांरे शूं म्हांरी तीनां री चाकरी तो वई, पण थेंतो थांरो ही काम काज थें नी कर शकोगा । फेर भाभीजी पधारे तो है, पण यां भी म्हारी राय तो नी है । पण म्हूं तो ना अर्ज नी कर शकूं, तो भी थांने तो म्हारो हुकम है, के अठे रे' ने कौशल्या माता री मन लगाय चाकरी करजो । वचेट भाभी

जी वचेट वाईरी चाकरी कर लेगा, तो वऊ श्रुतिकीर्ति छोटा वाई री सेवा करेगा, ने थें वडा वाई री सेवा मे रीजो। आपां तो श्रीसीताराम रा सेवक हां, सो वणां रो हुकम व्हे' ज्यू ही करणो चावे, ने वणां री कानी रो काम करणो भी जाणे वणां री चाकरी करणी है। अतरा में सीता माता एक डावडी रे साथे केवायो, के वेन ! थूं के'ती ही, जीजीवाई, म्हें दोही आप दोयांरी चाकरी करांगा, सो वेना अबे चाकरी रो वगत आयो है। लालजी तो साथे पधारे है, ने जो थूं भी हठ करने साथे व्हे'गा तो म्हारे भी आडी देवाने गा अर्थात् म्हने भी अठे ही रखाय देवे गा, सो वेन ! म्हारी कानी ही न्हाळ ने म्हारी चाकरी गण, वा म्हारे पे मेहरवानी गणने साथे री हठ करे मती, ने अठे रे', ने वडा वऊजी सासरी चाकरी करेगा, तो म्हूं जाणूंगा के था म्हारी सारांरी ही चाकरी करलीधी। अश्या वगत में भी, जो, थूं, ही, म्हारो कियो नी मानेगा, तो वेन ! और कूंण मानेगा, ने थारा जेठजी सासरी भी याहीज मुरजी दीखे है; के थूं अठे वडा वऊजी सास नखे रे'जाय, तो म्हने साथे ले पधारेगा। जदो उर्मिलाजी अणी वात ने मान अयोध्या में ही रे'गिया ने श्री सीताराम ने लक्ष्मण जी तीन ही राजा रे नखे पधारया। वठे पिता रे, ने कैकयी माता रे नमस्कार कर हात जोड तीन ही जणा शीख मांगी। राजा तो 'वे' केने ने आंशू ही आंश

पे'वा लागजाय, ने आगे कंठ रुक जाय सो, 'टा' ही नी के'णी आवे। फेर थूंक गळे उतार मन गाढो कर 'न' के' ने ग्वीमना लागजाय, सो 'उ' नी के'णी आवे। या दशा गुरुराजी री देखने सीताजी तो डबक डबक खीजणा लाग गिया, ने दोई भायां रे भी आखां में तळायां आयगी। जदी कैक्यी कियो थें तो एक एक शूं वत्ता धर्म वाळा हो। यो, लो, "बाटे, साधुवां रा कपडा म्हें मँगाय राख्या है, सो थें अठे ही पे'रलो। जो राजा ने भरोसो आय जावे, ने या टोपली, ने यो पानडो जंगल में साधुवां रे कामरी चीजां है, ने ई तूंबा तीन हो पाणी पीवा रे वासते मँगाय राख्या है, सो उठावो, ने झट वीर व्हो'। अबे राजतिलक रो मोरत आय गियो है, सो अणीज वगत में वन में परा जाणो चावे।

जदी तो झटपट दोई भायां ने जानकीजी, तूंबा-कुराडी-टोपली ने रखारी छालरा, कपडा ले' ने माथे चढाय लीधा, ने धारण भी कर लीधा। पण श्री सीताजी ने तो वी कपडा धारण ही नी करता आवे, ने सारां रे ही मूंडा आगे धारण भी कूंकर करे। जदी तो परोताणीजी कियो बेटा! अणी राणी री तो दुर्बुद्धि व्हे'गी है, ई ने तो जाणे, वेजो व्याप गियो है, सो कणी री ही नी माने। समझावता समझावतां म्हारी जीभ धूली पडगी' है पण वनवास ने साधुवेष तो राम रो मांग्यो है। थारे अणारं कई जरूरत है। अतराक में तो सब राण्यां ने आखों ही

रावळो वठे भेलो व्हे' गियो । जदी तो राम भगवान विचारी, अबे देर नी करणी चावे । यूं विचार, माता पिता रे धोक देने तीन ही जणां बारखे पधार गिया । वणी वगत में तो आखा रावळा में आंसुवां रो कीच' व्हे' गियो । या बात कणीं ने ही नो खटी । पण करम पे जोर कणी रो चाले । तीन ही जणा ने जावता देख, राजा तो शुध बुध भूल गिया, ने थोड़ी देर शूं ओशान आई ने तो बेंडा री नांई राम सीता लच्छमण राम सीता लच्छमण करता करता ऊभा व्हे'ने दोड्या, ने साथेरी साथे सब राण्यां भी दोड़ी । पण चोक में पधारने तो फेर जांफ आयगी' सो पड़ गिया । जदी तो एक कानी शूं तो कैकयीजी ठाम्याने एक कानी शूं कौशल्याजी ठाम्या ने पछे फोरीक ओशान आई, ने पाछा पधारावा लागा । जदी तो राजा पूछयो म्हने कणी ठाम राख्यो है । जदी कौशल्याजी, ने कैकयी जी बोल्या । जदी तो राजा भाटको दे' ने कैकयी जी नखा शूं हाथ छोड़ाय लीधो, ने कियो के एक दाण हात ठाम्यो ज्यो ही मोकळो । परमात्मा सब पाप भुगताव ज्यो, पण खोड़ीली लुगाई रो हात कणी ने ही ठमावो मती, ने फेर कियो, के हे कुल डुबावणी रांड ! चली जा, घर में फेर कधी म्हारी नजर रे नीचे आवे मती, ने थारे शामल भरत रो भी शियो व्हे' तो मरयां केड़े भी वो म्हारी क्रिया नी करे ।

जदी तो कैकयी जी डरप्या भी ने रीश भी करने पाछा वणांरा मे'ला में बड़बड़ाता थका परा गिया। पछे राजा कियो एक कानी शूं छोटी राणी ने केचो सो म्हने ठामे ने म्हने कौशल्या रा मे'ला में ले जावो। अबे म्हने फेर जांफ आवे है। जदी तो एक कानी शूं छोटा राणीजी ठाम लीघा, ने महाराणी कौशल्याजी रा मे'ला में पधराय दीधा। वठे राजा नरी देर तक बेशुध पड्या रिया।

अबे अठीने तीन ही जणा ने विना पेंताया मुनिरो शांग करने शे'र में पधारता देखने सब अयोध्या रा रेवाशी भू भू रोवा लाग गिया। छोटा छोटा छोरा छोरी भी बापजी बापजी कर करने छल छल रोवा लाग गिया। पण राम भगवान सारा ने समभावता थका ने ज्ञान देता थका शेर बारणे पधार गिया। पण शे'र तो जाणे रामरे साथे साथे ही घर में शूं निकलने वारणे भेळो व्हे' गियो जदी तो राम भगवान् उभा र'ने सबां ने समभाया। अतराक में रथ ने लेने प्रधान जी आय गिया, ने अर्ज कीधी, रथ पे सवार व्हे'ने पधारवा में आवे, ने वन देख पाछा अयोध्या में पधार जावामें आवे, यो राजा रो हुकुम है। जदी तो तीन ही जणा रथ में सवार व्हे'गिया ओर सुमंत्र जी रथ दौड़ाय दीधो। अयोध्यावासी रथ नजर आयो, जतरे तो देखता रिया, ने पछे तो अछताय पछताय पाछा अयोध्या में आयने उदाश व्हे'ने रेवा लागा।

कणी कियो वन देख पाछा पधार जायगा । कणी कियो सुमंत्र जी समझणा है, सो समझाय ने पाछा ले' आवेगा । कणी कियो राम आपणा प्रणने छोडे, या समझ में नी आवे ।

अठीने रथ गाम, वाग,ने वन में व्हे' तो थको तीसरा पोरां रो शृङ्गवेर नामरी नगरी नखे जाय पूगो । वठाशूं आगे रथरो गेलो नी हो । वचे गङ्गाजी वेवता हा, जीशूं रथ नी जाय शकतो हो । वणी नगरी रो राजा गुह नाम रो भील हो । वो अयोध्या में आयां करतो हो, ने राम भगवान पे वीं रो घणो प्रेम हो । वो घरे वातां कर्यां करतो हो, के कधीक अठीने भी आपणा वडा बानजी ने पधरावां गा । आज एक भील दोड ने वींने खबर दीधी, के अयोध्या रा पाटवी कुँवर, ने कुँवराणीजी रथ में चराज ने पधारचा है, ने गङ्गा रा तीर पे ठेरचा है । या शुण ने तो वो भीलां रो राजा राजी राजी एक सांस दोडचो दोडचो वठे आयो । पण वठे रामरे मुनि री पोशाक धारण देखने वींने नराई विचार व्हियो । राम भगवान् वणीशूं वडा मोह शूं दोडने मिल्या, ने श्रीसीता माता शूं वणी मुजरो कीधो, ने लक्ष्मणजी सुमन्त्रजी भी वडा प्रेम शूं मिल्या । वणी सब हाल सुमन्त्रजी शूं शुण अरज कीधी, के अणी शृङ्गवेरपुर रो राज आप करवा में आवे, ने यो दास चरणारविंदा री चाकरी में रेवेगा । अणी नीचरा बाल बच्चा ने भी पधारने करतारथ करावे । जदी तो राम भगवान हुकम

कीधो, भाई ! थारो राज है, सो म्हारो हीज है । पण वनराय रो नाम कर अबे म्हने नगर में नी आवणो चावे । जदी तो वणी मन चाल वशा और लुगाई ने और वींरी टानी मां ने भी केवाय दीधो, सो साग ही वठे ही आय गिया । वा भीलण डोकरी सीता, राम, लच्मणजी पे कौशल्या माता ज्यूं मोह करवा लागी, ने न्हाना छोरा छोरी पूछवा लागा के "बड़ा बानजी कस्या है ? आपाणे अठे क्यूं नी पधारे ?" कोई सीता माता री आंगळी पकड़ पकड़ ने खेंचे, ने केवे के 'म्हांरे घरे क्यूं नी चालो ? रोटी हाता शूं हीज करता व्हो' तो शूगो आटो है, अछोपाई रो घी है, गायां रो दूध थांरा हाता शूं दूध लीजो, ने रोटयां थांरा हातां शूं करने दोई बानजी ने जीमाय दीजो, ने फल फूल भी नराई है, सो नजीक हीज नदी वे'री है, जी में धोय ने जीम लीजो, ने मोळ्यां जो म्हें सूखी सूखी ले आनांगा वी झट सुलग जायगा, नाम धुंवो नी आवेगा । कोरा घड़ा कुमार शूं ले आवांगा ।" अशी वातां के'ता थका राम भगवान पे मोहित व्हे' गियाहा । अतराक में एक बाळक पूछी के थांरे ई बापजी कई लागे ?, यूं छोटा छोटा छोरां छोरयांरी वातां शुण श्रीजानकी माता हंस ने वणांरा माथा पे,ने मोरा पे हात फेरता थका हुकम कीधो, 'थांरो मोह देखने ही म्हूं तो धाप गी' पण आपांरा मनशूं आपां ने कई नी करणो चावे । देखो निषादराज (भीलराजा) या हीज अरज कीधी ।

पण थांरा वावजी ना हुकम कर दीधो । यूं वखाने समझाय ने शीख दीधी । राते वठे ही गंगा किनारे रें' ने प्रभाते नाव में विराज तीन ही पें'ले पार पधारवा लागा ।

जदी सुमंत्र परधानजी पाछा पधारवारी अरज कीधी । पण राम भगवान समझाय ने ना हुकम कर दीधो । जदी तो सुमंत्रजी घणा घबराया, ने घणा दोरा अयोध्या कानी चीर व्हिया, ने अठीने तीनही गङ्गा रे पेले पार पधार गिया, ने निषादराज ने भी शीख बगशी । सो वी भी पाछा उदाश व्हे' ने आपणे अठे परागिया । सुमंत परधानजी घणो पछतावो करता करता अयोध्या गिया । घणा कियो, हाय हाय म्हें रथ में क्यूं बराजाया । धोरे धीरे पेदल पेदल पधारता तो अयोध्या शूं अतरा छेटी अतरा झट तो नी पधार जाता । अबे म्हने लोग कई केवेगा । म्हूं अयोध्या में अबे कई मूंडो देखावूंगा ।

राजा सुमंत्रजी री वाट न्हाळ रिया हा, के परधान शायत समझाय ने लें' आवेगा । अबे राजा रे आंखां में हीज जीव आय रियो हो । ऊठवा बैठवा री भी शरधा नी रीं' ही । कोई राजा ने ओळख ही नी शके जस्यो धोळो चे'रो व्हे' गियो हो । कौशल्याजी घणा ही समझावे । पण "बेटा राम ! बेटा राम, अरे लक्ष्मण ! थूं गरीव कठीने व्हे' गियो ? बउ सीता ! सीता ! म्हारे वामते जनक जीरी बेटी

मूंडो देखने खबर पड़ जाय, के आपांरो रूप अश्यो है। यूं ही दूजारी मौत देखने समझ लेणो के या आपणीज नस्ल है। काले असल मी व्हे' जायगा। अणी वास्ते मरे जणी रो विचार करना में अतरोक ही लाभ है, के आपांने अणजाण में मौत नी आय जाय अर्थात् मौतरे वास्ते त्यार रे'णो चावे, ने त्यार रे'णो, यो होज है, के मौत ने याद राख बुरा काम नी करणा, ने संसार में मन नी उलझावणो, ने करतार ने याद राखणो। क्युं के संसार रो सुख तो ऐंठवाड़ो है। आगला भी यूंही ई ने भोगता भोगता छोड़ गिया, ने आपां भोगवा लाग्या, ने आपां छोड़ांगा, ने दूसरा भोगे गा।" यूं के' राजारा शरीर ने अंगराय ने मंठाय दीधो। देखो जणा राजा री रीझां ने्वां सवारां ने झकारां आंखां में घर गी'ही, जणारी नजर

करूं। अने तो यो नी आवेगा। "फेर राम सीता लक्ष्मण ने ...द देखूंगा।" यूं के'तां के'तां राजारी तो आँखों फिर वा लागी ने गरदन रळक गी'। कौशल्याजी तो हे नाथ, हे अयोध्या-पति, यूं कई करानो यूं कई करानो करवा लागा। जतराक में एक हिचकी आई ने राम राम के'ने सांस रुकगियो। कौश-ल्याजी या दशा देख घबराय गिया, ने सुमित्राजी ने हेलो पाड्यो के "बेन ! सुमित्रा झट आव, झट आव, सुमित्राजी कई करे, कोशल्याजी ज्यूं खीझवा लागा।" दो एक बूढी डोकर्यां ही। वणां डोलरे हात लगायने कियो," अपशकुन मती करो। हाल डील ऊनो है।" सुमन्त्रजी नाडो देख राण्यां ने छेटी कर दीधी, ने कियो, "आपरा हाका हूक शूं ई घबराय जायगा। थोडी अणा ने थिरता लेवा दो।" जदी राण्यां दूसरी ओवरी में नखे ही बेठ ने धीरे धीरे डसूका भरवा लागी। सुमन्त्रजी राजा ने नीचे पोढाय दीधा, ने तो राण्यां पाछी दोड ने आयगी, ने केवा लागी, श्रो प्रधानजी ! यो कई करो हो ? अन्नदाता ने नीचे क्यूं पोढावो हो ? जदी तो एक डोकरी कियो, अबे अन्नदाता कठे है। जदी तो राण्यां तडाछ खाय धरती पे पडगी, ने आखा ही रावळा में हाहाकार मच गियो।

जदी तो राजगुरु वसिष्ठजी आय सबां ने समझाय ने कियो, "या नवी बात नी है। यो तो काच में आपणो

भी दुख भुगते है । थणी वंश में म्हारे जश्यो पापी कूंण व्हियो व्हे'गा ।" यूं हुकुम कर कर ने खीजवाहा । वणी वगत अयोध्या रा राजारी दशा एक गरीब रे जशी व्हे'री' ही। थोड़ो ही कमाड़ बाजतो ने पग शुणता के राजा बारणा कानी आंखा फाड़ फाड़ ने देखता हा । अतराक में सुमन्त्रजी भी आय गिया । वणां दोई कुंवर ने कुंवराणी जी कानीशूं पगामें धोक दे मुजरो मालुम कीधो । राजा कियो "कई' नी आया? कई नी आया" ? वणां कियो तीनां ही अरज कराई है के, "म्हांने तो वन में घणो सुहावे है ।" राजा कियो, "आपी आपही सुहावे । बेटा जनम तो म्हारे जश्यारे अठे लीधो है, नी, सो ओर कई सुहावे," सुमन्त्रजी कियो वणां अरज कराई है के, 'म्हांरा आछा भाग है । भगवान म्हारा पे राजी है ।" राजा कियो, "थांरां पे तो सदाही राजी है । पण म्हांरा खोटा भाग है ।" सुमन्त्रजी कियो वणां अरज कराई है के, "आप म्हांरो नाम सोच नी करावे । म्हें अयोध्या बचे ही अठे सुखी हां ।" राजा कियो, "म्हं नरक बच्चे हीं अयोध्या में दुखी हूँ ।" सुमन्त्रजी कियो वणां यूं अरज कराई के, "दन जातां कई देर नी लागे । काले चवदा बरप निकळ जायगा ।" राजा कियो, "म्हारो प्राण तो अबे आज ही निकळ जायगा । अरे सुमंत्र ! थने बूढ़ासारा ने बाळकाँ ठग लीधो । थारी आशा ही, के थूं पाछा ले' आवेगा । पण अबे कई

करूं। अवे तो वी नी आवेगा। "फेर राम सीता लक्ष्मण ने कद देखूंगा।" यूं कें'तां कें'तां राजा री तो आँखाँ फिर वा लागी ने गरदन ढळक गी'। कौशल्याजी तो हे नाथ, हे अयोध्या-पति, यूं कई करावो यूं कई करावो करवा लागा। जतराक में एक हिचकी आई ने राम राम कें'ने सांस रुकगियो। कौश-ल्याजी या दशा देख घबराय गिया, ने सुमित्राजी ने हेलो पाड़यो के "बेन! सुमित्रा झट आव, झट आव, सुमित्राजी कई करे, कौशल्याजी ज्यूं खीझवा लागा।" दो एक बूढ़ी डोकरयां ही। वणां डोलरे हात लगायने कियो," अपशकुन मतो करो। हाल डील ऊनो है।" सुमन्त्रजी नाड़ी देख राण्यां ने छेटी कर दीधी, ने कियो, "आपरा हाका हूक शूं ई घबराय जायगा। थोड़ी अणा ने थिरता लेवा दो।" जदी राण्यां दूसरी ओवरी में नखे ही बेठ ने धीरे धीरे डसूका भरवा लागी। सुमन्त्रजी राजा ने नीचे पौढ़ाय दीधा, ने तो राण्यां पाछी दोड़ ने आयगी, ने केवा लागी, ओ प्रधानजी! यो कई करो हो? अन्नदाता ने नीचे क्यूं पोढ़ावो हो? जदी तो एक डोकरी कियो, अबे अन्नदाता कठे है। जदी तो राण्यां तड़ाछ खाय धरती पे पड़गी, ने आखा ही रावळा में हाहाकार मच गियो।

जदी तो राजगुरु वसिष्ठजी आय सबां ने समझाय ने कियो, "या नवी बात नी है। यो तो काच में आपणां

मूंडो देखने खबर पड़ जाय, के आपांरो रूप अश्यो है। यूं ही दूजारी मौत देखने समझ लेणो के या आपणीज नकल है। काले असल भी व्हे' जायगा। अणी वासते मरे जणो रो विचार करवा में अतरोक ही लाभ है, के आपांने अणजाण में मौत नी आय जाय अर्थात् मौतरे वासते त्यार रे'णो चावे, ने त्यार रे'णो, योहीज है, के मौत ने याद राख बुरा काम नी करणा, ने संसार में मन नी उलझावणो, ने करतार ने याद राखणो। क्यूं के संसार रो सुख तो ऐंठवाड़ो है। आगला भी यूंही ई'ने भोगता भोगता छोड़ गिया, ने आपां भोगवा लागा, ने आपां छोड़ांगा, ने दूसरा भोगे गा।" यूं के'राजारा शरीर ने अंतराय ने मेलाय दीधो। देखो जणा राजा री रीझां मोजां सवारयां शकारां आंखा में चश गी'ही, जणारी नजर पड़तां ही हजारां राजारी कलंग्या झुक जाती हीं, वी राजा एक सूखा टींडका ज्यूं पड़या है, ने अबे बालवा सिवाय और कई कामरा ही नी रिया। वाहरे! संसार! थूं अश्यो नुगरो है, तो भी लोग थारे वासते छती आंखां आँधा व्हे'रिया है। ई' रो हीज तो नाम 'देखत भूली रो तमाशो' है। यूं नी व्हे'तो भलां ज्यो आदमी दो पईशा रो हाँडो रे चारही कानी कड़कोल्या दे'दे'ने परखे है, के कठाशूं जोजरी तो नी है, वो होज चारही कानो शूं फूटी ई' संसार री हाँडी ने जीव ने झोंक झोंक ने क्यूं मोलावतो।

अतराक में राजगुरु बुलावा मेल्या, सो भरत शत्रुघ्न
ाही भाई एक साथे मेनती घोड़ा री डाक में कैकय देश
ं अयोध्या पधार गिया । पछे भरतजी ने शत्रुघ्न जी
कयी माता नखे जायने पूछ्यो के, बाई ! म्हाने गुरुराज
ातरी आगत शूं क्यूं बुलाया ? जदीतो राणीजी राजी राजी
सब बात राजा रे देवलोक व्हे वारी भरतजी ने के,' ने कियो
, "राजा री क्रिया करो, ने राज करो । अबे थारे वासते
हें, ई दोई ज काम बाकी राख्या है । ओर तो सब काम म्हें
ड़ी बुद्धिमानी शूं अबेर लोधा है ।' या शुणतांही दोई भाई
ुन्न व्हे'गिया, ने कियो के, "कई आपने बाळकपणा शूं ही
ा बात म्हारा नाना नानोजीनी सिखाई के लुगाई रे पति ही
परम देवता है । पतिरी सेवा शूं हीज लुगाई रा दोई लोक ने
दोई कुल सुधरे है, ने अबे आप यो धरम रो पालण तो आछो
ीधो ने अणी रो अंजस भी आपने आछो आयो । हे ! विना
अकल री ! हत्यारी मां ! थें बापड़ा रजपूत रा घर में जनम
ले' ने फेर रघुकुल ने क्यूं उजाळ्यो ? असी बेटी रो जनम तो
बापड़ो नीच शूं नीच जातरो व्हे,' तो यो भी नी चावतो व्हे'
गा । आपरो तो कैकय वंश मे जनम व्हियो है नी । अस्यो
अवतार दो दो कुल डबोवा ने क्यूं लीधो । याही ही, तो बापरे
घरे ही विराज्या रे'ता । म्हांरा बापरे घरने सनाथ करवा कठी
नूं पधारया । राजा तो हुकम करता, के कैकयराज रो घराणो

मूंडो देखने खबर पड़ जाय, के आपांरो रूप अश्यो है। यूं ही दूजारी मौत देखने समझ लेणो के या आपरीज नकल है। काले असल भी व्हे' जायगा। अणी वास्ते मरे जणी रो विचार करवा में अतरोक ही लाभ है, के आपांने अणजाण में मौत नी आय जाय अर्थात् मौतरे वास्ते त्यार रे'णो चावे, ने त्यार रे'णो, यो हीज है, के मौत ने याद राख बुरा काम नी करणा, ने संसार में मन नी उलझावणो, ने करतार ने याद राखणो। क्यूं के संसार रो सुख तो ऐंठवाड़ो है। आगला भी यूंही ई'ने भोगता भोगता छोड़ गिया, ने आपां भोगवा लागा, ने आपां छोड़ांगा, ने दूसरा भोगे गा।" यूं के' राजारा शरीर ने अवेराय ने मेलाय दीधो। देखो जणा राजा री रीझां मोजां सवारयां शकारां आंखां में वश री'ही, जणारी नजर पड़तां ही हजारां राजारी कलंग्या झुक जाती ही, वी राजा एक सूखा टींडका ज्यूं पड़्या है, ने अबे बाळवा सिवाय और कई कामरा ही नी रिया। वाहरे! संसार! थूं अश्यो नुगरो है, तो भी लोग थारे वास्ते छती आंखां ऑंधा व्हे'रिया है। ई' रो हीज तो नाम 'देखत भूली रो तमाशो' है। यूं नी व्हे'तो भलां ज्यो आदमी दो पईशा रो हॉडो रे चारही कानी कड़कोल्या दे' दे' ने परखे है, के कठा शूं जोजरी तो नी है, वो हीज चारही कानो शूं फूटो ई' संसार री हॉंडी ने जीव ने झोंक झोंक ने क्यूं मोलावतो।

अतराक में राजगुरु बुलावा मेल्या, सो भरत शत्रुघ्न दोही भाई एक साथे मेनवी घोड़ा री डाक में कैकय देश शूं अयोध्या पधार गिया । पछे भरतजी ने शत्रुघ्न जी कैकयी माता नखे जायने पूछ्यो के, बाई ! म्हाने गुरुराज अतरी आगत शूं क्यूं बुलाया ? जदीतो राणीजी राजी राजी सब बात राजा रे देवलोक व्हे वारी भरतजी ने के,' ने कियो के, "राजा री क्रिया करो, ने राज करो । अबे थारे वासते म्हें, ई दोई ज काम बाकी राख्या है । ओर तो सब काम म्हें बड़ी बुद्धिमानी शूं अबेर लीधा है ।' या शुणतांही दोई भाई सुन्न व्हे'गिया, ने कियो के, "कई आपने बाळकपणा शूं ही या बात म्हारा नाना नानीजी नी सिखाई के लुगाई रे पति ही परम देवता है। पतिरी सेवा शूं हीज लुगाई रा दोई लोक ने दोई कुल सुधरे है, ने अबे आप यो धरम रो पालण तो आछो कीधो ने अणी रो अंजस भी आपने आछो आयो । हे ! विना अकल री ! हत्यारी मां ! थें बापड़ा रजपूत रा घर में जनम ले' ने फेर रघुकुल ने क्यूं उजाळ्यो ? अशी बेटी रो जनम तो बापड़ो नीच शूं नीच जातरो व्हे,' तो वो भी नी चावतो व्हे' गा। आपरो तो कैकय वंश में जनम व्हियो है नी । अश्यो अवतार दो दो कुल डबोवा ने क्यूं लीधो । याही ही, तो बापरे घरे ही बिराज्या रे'ता । म्हांरा बापरे घरने सनाथ करवा कठो नूं पधारया। राजा तो हुकम करता, के कैकयराज रो घराणो

मूंडो देखनें खबर पड़ जाय, के आपांरो रूप अश्यो है। यूं ही दूजारी मौत देखने समझ लेणो के या आपणीज नक़ल है। थाले अमल भी व्हे' जायगा। अणी वामते मरे जणो रो विचार करवा में अतरोक ही लाभ है, के आपांने अणजाण में मौत नी आय जाय अर्थात् मौतरे वामते त्यार रे'णो चावे, ने त्यार रे'णो, योहीज है, के मौत ने याद राख बुरा काम नी करणा, ने संसार में मन नी उलझावणो, ने करतार ने याद राखणो। क्यूं के संसार रो सुख तो एंठवाडो है। आगला भी यूंही ई ने भोगता भोगता छोड गिया, ने आपां भोगवा लागा, ने आपां छोडांगा, ने दूसरा भोगेगा।" यूं के' राजारा शरीर ने अवेराय ने मेलाय दीधो। देखो जणा राजा री रोझां मोजां सवारयां शकारां आंखा में वश री'ही, जणारी नजर पडतां ही हजारां राजारी कलंग्या झुक जाती ही, वो राजा एक सूखा टींडका ज्यूं पडथा है, ने अने बाळवा सिवाय और कई कामरा ही नी रिया। वाहरे ! संसार ! थू अश्यो नुगरो है, तो भी लोग थारे वामते छती आंखां आँधा व्हे'रिया है। ई रो होज तो नाम 'देखत भूली रो तमाशो' है। यूं नी व्हे'तो भलां ज्यो आदमी दो पईशा रो हॉडो रे चारही कानी कडकोल्या दे' दे' ने परखे है, के कठा शूं जोजरी तो नी है, वो होज चारही कानो शूं फूटो ई संसार री हाँडी ने जीव ने झोक झोंक ने क्यूं मोलावतो।

अश्या वगत में दुशमणही दुशमणी छोड़ दे, वश्या वगत में आपाँ बूढ़ी रांडा ने वणाव आछो लागे कई ?" मंथरा कियो, " आछो क्यूं नी लागे ? ने छत्र तो जूनो व्हे' वगड़ जाय जदी-टूटे होज है, ने आपणां आपणां कीधा फळ भोगणा ही पड़े ।" जदी तो धायजी विचारी, ओहो अणीरे तो सामो हरप व्हियो है । यूं विचार वणानें रीश आयगी', सो कियो के, "म्हूं समझगी । अबे आप पधार जावामें आवे । भगवान करे तो, जा रांड, थूं भी थारा कीधा रो फळ भोग लेगा ।" यूं के,' वी कमाड़ जड़ मांयने बैठ गिया । मन्थरा हंसती हंसती दूजारो म्हाटो अश्यो होज लागे' यूं के'ने राजी राजी रावळा मांयने गी' । वठे वीने वणाव करने आवती देख शत्रुघ्नजी कियो, काय चम्पा ! बाई तो अश्या नी है, कणी अणांने भँगराया दीखे है ।" जदी तो चम्पा कियो, बावजी ! बाईशाव अश्या नीज व्हे' । ई काम तो या कूवड़ी रांड आयरी है, अणीरा है । आप ही देखावो नी, यो वगत कई वणाव रो है ? पण रांड जाणे पाछी बींदणी वणी है । हा, पछे तो कई चावे । लक्ष्मणजी रा छोटा भाई ने अशी वगत में अशी वात पे ही रीश नी आवे जदी की ने आवे । झट ऊभा हे' ने वणी रे शामा पधारया । वा जाणी म्हारी चाकरी पे राजी व्हिया, सो म्हारो आदर करवा शामा पधारया दीखे है । मो लाला ! वारणा लेवूं, बावजी ! वारणा लेवूं, म्हारा अन्नदाता

घणो धरमात्मा है। अणीज शूं म्हारा पिता धोखा में आय गिया। वी कई जाणे के यो जे'र रो लाडू है; आप जाणता व्हे'गा के अणी काम शूं म्हारी वाहवाही व्हे'गा। पण बुरा काम शूं भी कणीरी बड़ाई व्हे'ती कठी शुणी है? म्हारी हीज भलो करणो हो तो जनमतांही म्हने मार न्हाख्यो व्हे' तो तो म्हं जाणतो के अणी वच्चेयो म्हारो घणो भलो कीधो अबे आपने यो मूंडो कीने ही नी देखावणो चावे।' या शुण कैकयीजी री अकल पाछी ठिकाणे आयगी, ने वणा जाणी के अरे म्हारे शूं तो या मोटी भूल व्हे'गी; म्हें शेणां ने दुशमण ने दुश्मणां ने शेण मान लीधा। अबे तो राणी ज्यूं ज्यूं विचारे ज्यूं ज्यूं आपणो अधरम याद कर कर छाती धड़क धड़क करे, ने खीजे। पण अबे व्हे' कई; राँड व्हियां केड़े मत आई कई कामरी। वगत तो परी जावे ने बात रे'जावे।

अतराक में मंथरा बाई ने खबर लागी के भरत शत्रुघ्न दोई भाई कैकय देश शूं पधार गिया है। जदी तो वणी कोशल्या जीरा धायजी ने जायने क्रियो के, धायजी! थांरा भाणेजजी ने अबे राजतिलक व्हे' है, सो थेंही वखाण करो नी। थें तो भेद भाव नी समझो हो नी। देखो म्हने केता, सो म्हें तो अबे वणाव कर लीधो है, ने अबे रावळा में जावूं हूं। जदी वणा धायजी की', के "ओ मंथरा बाई! यो कई, वणाव रो वगत है। भलां आपांरा मालक माथारो छत्र तो टूट गियो, ने

अश्या वगत में दुशमणही दुशमणी छोड़ दे, वश्या वगत में आपाँ बूढ़ी रांडा ने वणाव आछो लागे कई?" मंथरा कियो, "आछो क्यूं नी लागे? ने छत्र तो जूनो व्हे' वगड़ जाय जदी टूटे हीज है, ने आपणां आपणां कीधा फळ भोगणा ही पड़े।" जदी तो धायजी विचारी, ओहो अणीरे तो सामो हरष व्हियो है। यूं विचार वणांनें रीश आयगी', सो कियो के, "म्हूं समझगी। अबे आप पधार जावामें आवे। भगवान करे तो, जा रांड, थूं भी थारा कीधा रो फळ भोग लेगा।" यूं के,' वी कमाड़ जड़ मांयने बैठ गिया। मन्थरा हंसती हंसती दूजारो म्हाटो अश्यो होज लागे' यूं के'ने राजी राजी रावळा मांयने गी'। वठे वीने वणाव करने आवती देख शत्रुघ्नजी कियो, काय चम्पा! बाई तो अश्या नी है, कणी अणांने भँगराया दीखे है।" जदी तो चम्पा कियो, बावजी! बाईशाव अश्या नोज व्हे'। ई काम तो या कूबड़ी रांड आयरी है, अणीरा है। आप ही देखावो नी, यो वगत कई वणाव रो है? पण रांड जाणे पाछी बींदणी वणी है। हा, पछे तो कई चावे। लछमणजी रा छोटा भाई ने अशी वगत में अशी वात पे ही रीश नी आवे जदी की ने आवे। झट-झमा.छे' ने वणी रे शामा पधारया। वा जाणी म्हारी चाकरी पे राजी व्हिया, सो म्हारो आदर करवा शामा पधारया दीखे है। सो लाला! वारणा लेवूं, बावजी! वारणा लेवूं, म्हारा अन्नदाता

घणों धरमातमा है। अणीज शूं म्हारा पिता धोक्ा में आय गिया। वी कई जाणे के यो जे'र री लाडू है; आप जाणता व्हे'गा के अणी काम शूं म्हारी वाहवाही व्हे'गा। पण बुरा काम शूं भी कणीरी बडाई व्हे' तो कर्यो शुणो है? म्हारो हीज भलो करणो हो तो जनमतांई म्हने मार न्हारयो व्हे' तो तो म्ह जाणतो के अणी रन्चेयो म्हारो घणो भलो कीधो। अने आपने यो मूंडो कीनें ही नी देखावणो चावे।' या शुण कैकयीजी री अक्कल पाछी ठिकाणे आयगी, ने वणां जाणी के अरे म्हारे शूं तो या मोटी भूल व्हे'गी; म्हें शेणां ने दुशमण' ने दुश्मणा ने शेण मान लीधा। अने तो राणी ज्यूं ज्यूं विचारे ज्यूं ज्यूं आपणो अधरम याद कर कर छाती धडक धडक करे, ने खीजे। पण अने व्हे' कई; राँड व्हियां केडे मत आई कई कामरी। वगत तो परी जावे ने बात रे'जावे।

अतराक में मंथरा नाई ने खबर लागी के भरत शत्रुघ्न दोई भाई कैकयदेश शूं पधार गिया है। जदी तो वणी कोशल्या जीरा धायजी ने जायने कियो के, धायजी! थांरा भाणेजजी ने अबे राजतिलक व्हे' है, सो थेंही वधाव करो नी। थें तो भेद भाव नी समझो हो नी। देखो म्हने केता, सो म्हें तो अबे वधाव कर लीधो है, ने अबे रावळा में जावूं हूं। जदी बूथा धायजी की', के "ओ मंथरा बाई! यो कई, वधाव री वगत है। भर्यां आपांरा मालक माथारो छत्र तो टूट गियो, ने

पड़गी, ने भूंडो मूंडो धूळा में भराय गियो; ने माथो उघाड़
व्हे'गियो। जदी तो शत्रुघ्नजी जाणी अबे या मार नी ख
शकेगा, सो चोटी पकड़ ने चौक में घसीटवा लागा; ने व
जोर जोर शूं वारां पाड़वा लागी। कौशल्या जी हुकम कीधो
या बापड़ो कूण रोवे है? ईं ने घणो शोक व्हियो दीखे है।
जदी कणी कियो, "या तो सब कळा री मूल रांड मन्थ
है। ईंने शोक कायरो? ईं ने तो हरष व्हियो हो। ज
पीपाड़ी में फूंक भरवा शूं फूल जाय ने पाछी या फूंक निक
जदी फां फां करे यूं ही ईं रो शत्रुघ्नजी घमंड निकाळ दि
है।" जदी तो दयाल राम री माता हुकम कीधो के, शत्रु
ने म्हारो नाम ले'ने के'दो के अबे ईंने कई नी के'वे, ने दो'
भायां ने अठे बुलाय लावो।" यूं कौशल्याजी रो हुकम पूगवा
शत्रुघ्नजी वीं री चोटी छोड़ दीधी। पण जतरे तो वणी
माथा में माचा पडगिया, ने नाक भी दब गियो। होठ सूज
निकराळ व्हे' गियो; ने छूटतां ही उठनी पड़ती कौशल्याजी
पगाँ में जाय पड़ी; ने "आपले शलणे हूं; आपली अपलाध
हूँ" यूं म्होटा म्होटा होठां शूं जाड़ी जाड़ी बोलवा लागी
जदी तो दयाल राम री माता कियो, 'अरे अणी बापड़ी
अतरी क्यूं मारी? यो तो भावी हो सो व्हियो। थूं डर
मती। अबे थने कोई कई नी के'वेगा। पे'ली ही म्हारे न
आयगी व्हे'ती तो थारे कई नी व्हे'तो।' यूं हुकम व

आप कठीनें पधार गिया, अठे तो अनर्थ व्हे' जावतो। आपरा भाई तो भोळा है, सो आप जाणो ही हो। जदी म्हैं शमझायने आपरा पुन्न परताप शूँ सब काम शुधराय लीधो' यूं के'तो शुण; घणा धीमा भरतजी ने भी रीश आयगी; ने शत्रुघ्नजी तो धुर् रांड! अड़की गंडकड़ी! म्हांरी मां रे तो रांड थारो हीज जे'र चढ़्यो है रांड! काम बगाड़्यो? के रांड! शुधार्यो है!" यूं शत्रुघ्नजी री डकर शुण, वा अचंभा में आय, यूं कर ऊंचो देखो जतराके में तो ढीला हाथ री एक चपगट मूंडा पे उड़गी, जी शूं दूजी आडो मूंडो फरगियो। जतराक में एक फेर वठीने भी चेंट गी। जदी तो मंथरा बाई रो मूंडो छूट गियो, ने चीड़्यां अरोग ने पधारया व्हें'ज्यूं राती राती लाळ पड़वा लाग गी ने एक आधो दांत डाड़ हो सो भी गळे उतर गियो। अबे तो बाळक री नांई रोंवती रोवती बोली, हाय बाप! म्हें तो शामो आछो कीधो; जींरो भरत राजा रे मूंडा आगे म्हने यो फळ मिल्यो। जदी भरतजी हुकम कीधो, "हाल पूरो नी मिल्यो।" ने शत्रुघ्नजी तो दो रेपटां फेर जमाय दीधी, ने किंधो, "रांड! चीड़्यां अरोगने पधारी है। म्हारा बापने मराय, भाई भोजाई ने देश निकाळो देवाय, ने के'वे के आछो काम कीधो है।" यूं के' ने एक लात वणी रे गूब पे जमाय दीधी, जणी शूं 'हाय रे!' यूं करने वा मूंडा बराणी धरती पे

पड़गी, ने भूंडो मूंडो धूळा में भराय गियो; ने माथो उघाडो व्हे'गियो। जदी तो शत्रुघ्नजी जाणी अबे या मार नी खम शकेगा, सो चोटी पकड़ ने चौक में घसींटवा लागा; ने वा जोर जोर शूं वारां पाड़वा लागी। कौशल्या जी हुकम कीधो, या वापड़ी कूण रोवे है? ईं ने घणो शोक व्हियो दीखे है।" जदी कणी कियो, "या तो सब कळा रो मूल रांड मन्थरा है। ईंने शोक कायरो? ईं ने तो हरप व्हियो हो। ज्यूं पीपाड़ी में फूंक भरवा शूं फूल जाय ने पाछी वा फूंक निकळे जदी फां फां करे यूं ही ईं रो शत्रुघ्नजी घमंड निकाळ दियो है।" जदी तो दयाल राम री माता हुकम कीधो के, शत्रुघ्न ने म्हारो नाम ले'ने के'दो के अबे ईंने कई नी के'वे, ने दो'ही भायां ने अठे बुलाय लावो।" यूं कौशल्याजी रो हुकम पूगवापे शत्रुघ्नजी वी री चोटी छोड़ दीधी। पण जतरे तो वणीरे माथा में माचा पड़गिया, ने नाक भी दब गियो। होठ सूजने विकराळ व्हे' गियो; ने छूटतां ही उठनी पड़तो कौशल्याजीरे पगां में जाय पड़ी; ने "आपले शलणे हं; आपली अपलाधी हूँ" यूं म्होटा म्होटा होठां शूं जाड़ी जाड़ी वोलवा लागी। जदी तो दयाल राम री माता कियो, 'अरे जणी वापड़ी ने अतरी क्यू मारी? यो तो भावी हो सो व्हियो। थूं डरपे मती। अबे थने कोई कई नी के'वे गा। पे'ली ही म्हारे नखे आयगी व्हे'ती तो थारे कई नी व्हे'तो।' यूं हुकम व

वर्णांरे पाटापाटी ने मेद्रालकड़ी कराय ने दो तीन डावड़्यां ने सारसंभाळ भळाय दीधी। अने दो'ई भाई कोशल्या माता नखे पधारया। आगे राम लक्ष्मण पे मोह आने अश्यो ही अणां दो'ही भायां पे कोशल्या माता ने मोह आयों; ने यांने मुजरो करता देख नखे बैठाय दोई भायां रे मोरां पे हात फेरता थका कोशल्या माता हुकम कीधो, "बेटा! थें अठे म्हे'ता वो यो अतरो हळाबोळ नी व्हे'तो।" अतरा में कैकयीजी भी वठे पधार ने "जीजी बाई! 'म्हारो अपराध क्षमा करो क्षमा करो' यूं के,' कोशल्याजी रा पग पकड़ खींजवा लाग गिया। जदी कोशल्याजी हुकम कीधो "नि'न! अणी में थांरो कई अपराध है। यो तो भावी होणहार हो। राम रो वनवास थाने कश्यो खटयो है? आज तो म्हारे वचे ही वे'न! थां ने अणी वातरो वत्तो शोच है; ने यो दुख भी आपां सबां ने ही सरीखो ही है।" जदी कैकयी जी ऊठ, डावड्यां भेळा जाय ने वराज गिया। जदी कोशल्याजी ने सुमित्राजी शोगन देवाय हाथ पकड़ आपणे नखे बैठाया। जदी कैकयीजी हुकम कीधो, 'म्हूं पापणी आपरे तो कई पण आपरी छायांरे अटकवा जशी भी नी हूं। हाय! म्हने पति री भी दया नी आई! घोया मूंडा रा वउ, ने बाळकां ने साधु री शांग कराय देश निकाळो दे'तां भी लाज नी आई। ई तो साराही म्हारा पे जीव छांटता हा। आप ने, सुमित्रा बे'न, दो'ही देवता रूपी

हो, आप वच्चे ही राजा म्हारो मान वत्तो राखता हा । वणांरो हीज म्हें प्राण लीधो । अश्यो काम तो रागश भी नी कर शके । हाय हाय राजा री सांची वातां ने म्हूं छळ समझीं ही । राम री लायकी पे म्हनें रीश आवती ही । वणी बाळक रीश जश्यो काम कई कीधो हो ? कई वणी वडावां रो गेलो छोड्यो ? कई वणी वंशने कलंक लागे जश्यो कोई काम कीधो ? कई वणी परमेश्वर रा भक्तां ने दुख दीधो ? कई वणी कणी री बऊ बेटी सामो न्हाळ्यो ? वो तो सूरज वंश रो भी सूरज हो।" जदी कौशल्याजी ने सुमित्राजी नरी तरें शूं समझाया । अतराक में वशिष्टजी पधार दो'ही भायां ने बारणे ले'गया ने भरतजी शूं सब क्रिया कर्म राजा रो कराय चवदमें दिन सब जणा भेळा व्हे'ने भरतजी ने राजतिलक देवा लागा । पण भरतजी साफ नट गिया, और सब जणांने कियो के, 'आपरा ई वचन म्हने दाझ्या पे लूंण ज्यूं लागे है ।' जदी सबां ही कियो के राजा विना काम नी चाले जणी शूं म्हां या आपने अरज कीधी है । जदी भरत जी कियो के राजा तो राम है । आंपा सब रामने अयोध्या में राज गादी नी विराजे तो वन में ही राजतिलक करने अठे पधरावां गा ।" जदीतो सबां रे ही या वात दाय लागी, ने वाहवा भरत ! धन्य धन्य यूं सब वाह वाही करने प्रभाते ही आखी अयोध्या भरतजी रे माथे साथे वन में विदा व्हे'गई । जदी शृङ्गवेरपुर नखे भरतजी

पधारया तो वो भीलां रो राजा भरत जी रो भे'म करवा-लागो के, "भरतजी रे माथे फोज है; सो म्हारा राम भगवान शूं भरतजी दगो करवा जाता दीखे है। यूं जो व्हे'तो मरां मारां। पण अणांने एक भी पावंडो जीवतां जीव, आगे नी वधवा देवां। पण ईंरी एक दाण खबर करलां के या वात कूंकर है।" यूं विचार नजराणो ले'ने सामो आयो। जदी सुमन्तजी परधान भरतजी ने कियो के 'अणी अठे आपरा वड़ा भाई री घणी चाकरी कीधी ही।' जदी तो भरत जी दौड़ने वीं ने छाती शूं लगाय ने मिल्या। भीलराजा सब तरे' भाव देख, जाण गियो के ई तो राम रा प्राण है। अबे तो वो घणो राजी व्हियो। ने भरतजी हुकम कीधो, "भाई भीलराजा! आप धन्य हो। जो दादाजी, ने भाभीजी री, ने सपूत भाई लछमण री दुखरी वगत में अशी चाकरी कीधी। दादाजी अठे राते पोढ्या सो जगा म्हने देखावो।" जदी भील राजा कियो, "म्हारी तो कई भी शेवा अङ्गीकार नी कीधी; ने सब काम में फेर लछमण जी वापजी म्हारे आड़ा पड़ता हा. ने कियो के "म्हारी शेवा में आप बाधा मती न्हाखो;" यूं के,' ने वणो भील राजा श्रीसीता राम पोढ्या ज्या जगा वताई। वठे पाना पे चारो विछ्यो-देख भरत जी हुकम कीधो, "अठे? अणी पाला में?" यूं के' भरत जी जीवभूल गिया। ने पाछी ओशान आवा पे कियो के, "दादाजी रे

तिलक नी व्हे'गा, जतरे म्हूँ भी दादाजी री नांई'ज रेवूं गा।" पछे भील राजा नावां मंगाई; सो सब गङ्गा पार व्हे'ने प्रयागराज में भरद्वाज नाम रा मुनिराज शूं मिल्या; ने वठा शूं पत्तो लागो के चित्रकूट नाम रा पर्वत पे विराजे है। सो परभाते चित्रकूट पर्वत कानी पधारया; ने सबां ने ऊली कानी हीज ठेराय ने भरतजी, ने शत्रुघ्नजी दोई भाई श्रीरामभगवान विराजता हा वठी पधारया। वणी वगत हाथी घोड़ा री हाक हूक ने शुण, ने चित्रकूट रा जीव जन्तु भागता देख राम भगवान हुकम कीधो, "देख, भाई! कोई राजा शिकार खेलवा आयो दीखे है।" जदी लछमण जी रूंखड़ा पे चढ़ने अयोध्या रो निशाण देखने अरज कीधी 'ईतो भरत जी फोज चढ़ाय ने पधारया दीखे है।" कड़वी वेलरे तो कड़वीज तूंमड़ी लागे है। चोखो व्हियो। अबे आज आखी अयोध्या ने देखाय देवूंगा के अधरम रो फळ अदयोक व्हे' है।" जदी रामभगवान हुकम कीधो, "लच्मण! थूं कणी पे रीश कर रियो है? भरत तो रघुवंश रो उजाळो है। वणी शूं कई भी बुराई नी व्हे'शके। यो तो थारो हीज भे'म है। जो भरत लड़वाने आयो व्हे' तो भी कई आपांने सामा लड़णो चावे? कई आपां री बुद्धि, ने विद्या भायां पे चलाना वामते हीज है? कई थूं दुशमणां ने राजी करणो चावे है? कई थूं घर हाण ने लोगां हंशी करावणो चावे है? म्हूं तो भरत ने

राजा समझ वणी री चाकरी में रे'णो चांवु हूं, ने थने भी अब म्हारा हुकम मुजब भरतजी ने म्हारे वचे ही वत्ता समझणा चावे।" जदी लछमणजी अरज कीधी, "वी म्हने मार न्हाखे तो भी आपरा हुकम शूं म्हं चूंकारो भी नी करूंगा। पण म्हारे जीवतां जीव आपरे ऊपरे जो खोटी विचारी व्हे, तो पछे म्हारा शूं बाप व्हो' के दादाजी व्हो' वणी री ही सुलायजो नी रे' सकेगा।" जदी राम भगवान् हुकम कीधो, "भाई! थने हाल भी भरत पे भे'म है? वो म्हारा पे थारे वचे ही वत्तो मोह राखे है; ने थने बेटा ज्यूं समझे है; ने थारे भाभी ने मां वचे ही वत्ती माने है" अतराक में भरत शत्रुघ्न दोई भाई पधार गिया, ने दोड ने भगवान ऊठे ऊठे जतरेक तो पगा में जाय पड्या। भगवान पाछा ऊठार ऊंचाय वडा मोह शूं बोल्या। फेर दोड सीतामाता रे दोयां ही धोक दीधी। सीतामाता आशीश दीधी। ओर लक्ष्मणजी शूं मिलने दोई भाई हाथ जोड ऊभा रे' गिया। जदी राम भगवान हाथ पकड नखे बेठाय पूछी, "कई अन्नदाता राजी है? थारो चे'रो उदास क्यूं है?" जदी तो भरतजी सब बात अर्ज कीधी। या शुण सीता, राम ने लक्ष्मण भव खीझवा लाग गिया। पछे स्नान कर माता, गुरु, मंत्री आदि सबां शूं मिल ने पाछा आश्रम पे पधार गिया।

एक दाण रामभगवान हुकम कीधो, "आपां मिल

लीधा। म्हारे वासते सबां ने नरी ही अबकाई पड़ी। भरत ! अबे थूं पाछो जाव। आपांने चावे के पितारो वचन पूरो करां। राजा रो काम है, के रै'त रो पालण करे, सो सावधानता शूं रै'त ने बाळबच्चा ज्यूं पालणी चावे, ने अणी ने ही जआपणो धर्म मानणो चावे।" जदी भरतजी हाथ जोड़ अरज कीधो, "यो तो आपरो काम है, सो आप शूंहीज व्हे'गा। म्हें तो सब आपरी चाकरी करां गा।" वणी वगत सब वठे भेळा व्हे' गिया; ने माता, ने गुरु, ने प्रधान सबां समझाया। पण दोही भाई आपणी आपणी हठ नी छोड़े। राम भगवान हुकम कीधो, "जो बात पितारे मूंडा आगे नक्की व्हे'गी वींमे कशर नी पड़णी चावे।" भरतजी अरज कीधी, "भूल शूं ज्यो काम व्हे'जाय वीने सुधार ले'णो चावे।" जदी कैकयीजी कियो, "बेटा ! राम ! थने म्हारी बात राखणी व्हे' तो पाछो अयोध्या चाल ने राज कर। दूज्यूं म्हारो कलंक नी मिटेगा।" पण कौशल्याजी हुकम कीधो, "पिता रे मूंडा आगे प्रतिज्ञा करने बदलणो सपूतां रो काम नी है। थां तो थाणी कानी शूं जाणे राम ने पाछो ले आया, अबे म्हारा, ने राजारा हुकम शूं यो वन में रेवे गा, ने भरत नखा शूं म्हं राज करावूं गा।" जदी भरतजी अरज कीधी, "माता ! राज तो दादाजी रो है ने म्ह तो आणां रा पेंताबा रो चाकर हूं। या कई ठेठरी रीत आप तोड़णो चावो हो ?" यूं कें' ने भरतजी घबराय गिया।

राजा समझ वणी री चाकरी में रे'णो चांवु हूं, ने थने भी अब म्हारा हुकम मुजब भरतजी ने म्हारे वचे ही वत्ता समझणा चावे।" जदी लछमणजी अरज कीधी, "वी म्हने मार न्हाखे तो भी आपरा हुकम शूं म्हं चूंकारो भी नी करूंगा। पण म्हारे जीवतां जीव आपरे ऊपरे जो खोटी विचारी व्हें, तो पछे म्हारा शूं बाप व्हो' के दादाजी व्हो' वणी रो ही मुलायजो नी रे' शकेगा।" जदी राम भगवान् हुकम कीधो, "भाई! थने हाल मी भरत पे भे'म है? वो म्हारा पे थारे वचे ही वत्तो मोह राखे है; ने थने बेटा ज्यूं समझे है; ने थारे भाभी ने मां वचे ही वत्ती माने है" अतराक में भरत शत्रुघ्न दोई भाई पधार गिया, ने दोड़ ने भगवान ऊठे ऊठे जतरेक तो पगां में जाय पड़्या। भगवान पाछा ऊठा'र ऊंचाय वड़ा मोह शूं वोल्या। फेर दोड़ सीतामाता रे दोयां ही धोक दीधी। सीतामाता आशीश दीधी। और लक्ष्मणजी शूं मिलने दोई भाई हाथ जोड़ ऊभा रे' गिया। जदी राम भगवान हाथ पकड़ नखे बेठाय पूछ्यो, "कई अन्नदाता राजी है? थारो चे'रो उदास क्यूं है?" जदी तो भरतजी सब वात अर्ज कीधी। या शुण सीता, राम ने लक्ष्मण मन खीझवा लाग गिया। पछे स्नान कर माता, गुरु, मंत्री आदि सवां शूं मिल ने पाछा आश्रम पे पधार गिया।

[illegible] दाण रामभगवान हुकम कीधो, "आपां मिल

लीधा। म्हारे वामते सबां ने नरी ही अवकाई पड़ी। भरत ! अबे थूं पाछो जाव। आपांने चावे के पितारो वचन पूरो करां। राजा रो काम है, के र'त रो पालण करे, सो सावधानता शूं र'त ने बाळबच्चा ज्यूं पालणी चावे, ने अणी ने ही ज आपणो धर्म मानणो चावे।" जदी भरतजी हाथ जोड़ अरज कीधी, "यो तो आपरो काम है, सो आप शूंहीज व्हे'गा। म्हें तो सब आपरी चाकरी करां गा।" वणी वगत सब वठे भेळा व्हे' गिया; ने माता, ने गुरु, ने प्रधान सबां समझाया। पण दोई भाई आपणी आपणी हठ नी छोड़े। राम भगवान हुकम कीधो, "जो बात पितारे मूंडा आगे नक्की व्हे'गी वींमे फरार नी पड़णी चावे।" भरतजी अरज कीधी, "भूल शूं ज्यो काम व्हे'जाय वीने सुधार ले'णो चावे।" जदी केकयीजी कियो, "बेटा! राम! थने म्हारी बात राखणी व्हे' तो पाछो अयोध्या चाल ने राज कर। दूज्यूं म्हारो कलंक नी मिटेगा।" पण कौशल्याजी हुकम कीधो, "पिता रे मूंडा आगे प्रतिज्ञा करने बदलणो सपूतां रो काम नी है। थां तो थाणी कानो शूं आगे राम ने पाछो ले आया, अबे म्हारा, ने राजारा हुकम शूं यो वन में रे'गा, ने भरत नगा शूं म्हं राज करावूं गा।" जदी भरतजी अरज कीधी, "माता! राज तो दादाजी रो है ने म्हं तो आणां रा पेंताग रो चाकर हूं। या कई ठेठरी रीत आप तोड़णो च्यो हो!" यूं कं' ने भरतजी घबराय गिया।

घणों धरमात्मा है । अणीज शूं म्हारा पिता धोखा में आय गिया । वी कई जाणे के यो जे'र गे लाटू है; आप जाणता व्हे'गा के अणी काम शूं म्हारी वाहवाही व्हे'गा । पण बुरा काम शूं भी कणीरी बड़ाई व्हे' ती कर्धी शुणी है ? म्हारो होज भलो करणो हो तो जनमतांई म्हने मार न्हाक्यो व्हे' तो तो म्हैं जाणतो के अणी वच्चे यो म्हारो घणो भलो कीधो । अबे आपने यो मूंडो कीने ही नी देखावणो चावे । ' या शुण कैकयीजी री अकल पाछी ठिकाणे आयगी, ने वणां जाणी के अरे म्हारे शूं तो या मोटी भूल व्हे'गी; म्हैं शेणां ने दुश्मण ने दुश्मणां ने शेण मान लीधा । अबे तो राणी ज्यूं ज्यूं विचारे ज्यूं ज्यूं आपणो अधरम याद कर कर छाती धड़क धड़क करे, ने खीजे । पण अबे व्हे' कई; गँड व्हियां केड़े मत आई कई कामरी । वगत तो परी जावे ने बात रे जावे ।

अतराक में मंथरा बाई ने खबर लागी के भरत शत्रुघ्न दोई भाई कैकयदेश शूं पधार गिया है । जदी तो वणी कौशल्या जीरा धायजी ने जायने कियो के, धायजी ! थांरा भाणेजजी ने अबे राजतिलक व्हे' है, मो थेंही वणाव करो नी । थें तो भेद भाव नी समझो हो नी । देखो म्हने केना, मो म्हैं तो अबे वणाव कर लीधो है, ने अबे रावळा में जायूं हूं । जदी सुधा धायजी की', के "ओ मंथरा बाई ! यो कई, वणाव गे वगत है । भलां आपांरा मालक माथारो छत्र तो टूट गियो, ने

अश्या वगत में दुशमणही दुशमणी छोड़ दे, वश्या वगत में आपाँ बूढ़ी रांडा ने वणाव आछो लागे कई?" मंथरा कियो, " आछो क्यूं नी लागे ? ने छत्र तो जूनो व्हे' वगड़ जाय जदी टूटे हीज है, ने आपणां आपणां कीधा फळ भोगणां ही पड़े ।" जदी तो धायजी विचारी, ओहो अणीरे तो सामो हरप व्हियो है । यूं विचार वणांनें रीश आयगी', सो कियो के, "म्हूं समझगी । अबे आप पधार जावामें आवे । भगवान करे तो, जा रांड, थूं भी थारा कीधा रो फळ भोग लेगा ।" यूं के,' वी कमाड़ जड़ मांयने बैठ गिया । मन्थरा हंसती हंसती दूजारो म्हाटो अश्यो होज लागे' यूं के'ने राजी राजी रावळा मांयने गी' । वठे वीने वणाव करने आवती देख शत्रुघ्नजी कियो, काय चम्पा ! बाई तो अश्या नी है, कणी अणांने भँगराया दीखे है ।" जदी तो चम्पा कियो, बावजी ! बाईशाव अश्या नोज व्हे' । ई काम तो या कूवड़ी रांड आयरी है, अणीरा है । आप ही देखावो नी, यो वगत कई वणाव रो है ? पण रांड जाणे पाछी वींदणी वणी है । हां, पछे तो कई चावे । लछमणजी रा छोटा भाई ने अशी वगत में अशी वात पे ही रीश नी आवे जदी की ने आवे । भट ऊभा हे' ने वणी रे शामा पधारया । वा जाणी म्हारी चाकरी पे राजी व्हिया, सो म्हारो आदर करवा शामा पधारचा दीखे है । सो लाला ! वारणा लेवूं, बावजी ! वारणा लेवूं, म्हारा अन्नदाता

आप कठीने पधार गिया. अठे तो अनर्थ व्हे' जावतो। आपरा बाई तो मोळा है, सो आप जाणो ही हो। जदी म्हें समझायने आपरा पुन्न परताप शूँ सब काम शुधराय लीधो' यूं के'ती शुण; घणा धीमा भरतजी ने भी रीश आयगी; ने शत्रुघ्नजी तो धुर् रांड ! अड़की गंडकड़ी ! म्हारी मां रे तो रांड थारो हीज जे'र चढ़चो है रांड ! काम बगाड़यो ? के रांड ! शुधारियो है ?" यूं शत्रुघ्नजी री डकर शुण, वा अचंभा में आय, यूं कर ऊंचो देखो जतराक में तो ढीला हाथ री एक चणगट मूंडा पे उड़गी, जी शूं दूजी आडी मूंडो फरगियो। जतराक में एक फेर वठीने भी चेंट गी। जदो तो मंथरा बाई रो मूंडो छूट गियो, ने थीड़यां अरोग ने पधारया व्हे'ज्यूं राती रातो लाल पड़वा लाग गी ने एक आधो दांत डाड़ हो सो भी गळे उतर गियो। अबे तो बाळक री नांई रोवती रोवती बोली, हाय बाप ! म्हें तो शामो आछो कीधो; ऊँरो भरत राजा रे मूंडा आगे म्हने यो फळ मिल्यो। जदी भरतजी हुकम कीधो, "हाल पूरो नी मिल्यो।" ने शत्रुघ्नजी तो दो रेपटां फेर जमाय दीधी, ने किंयो, "रांड ! थीड़यां अरोगने पधारी है। म्हारा बापने मराय, भाई भोजाई ने देश निकाळो देवाय, ने के वे के आछो काम कीधो है।" यूं के' ने एक लात वणी रे गूब पे जमाय दीधी, जणी शूं 'हाय रे !' यूं करने वा मूंडा वराणी धरती पे

पड़गी, ने भूंडो मूंडो धूळा में भराय गियो; ने माथो उघाडो व्हे'गियो। जदी तो शत्रुघ्नजी जाणी अबे या मार नी खम शकेगा, सो चोटी पकड़ ने चौक में घसींटवा लागा; ने वा जोर जोर शूं वारां पाड़वा लागी। कौशल्या जी हुकम कीधो, या बापड़ो कूण रोवे है? ईं ने घणो शोक व्हियो दीखे है।" जदी कणी कियो, "या तो सब कळा री मूल रांड मन्थरा है। ईंने शोक कायरो? ईं ने तो हरष व्हियो हो। ज्यूं पीपाड़ी में फूंक भरवा शूं फूल जाय ने पाछी वा फूंक निकळे जदी फां फां करे यूं ही ईं री शत्रुघ्नजी घमंड निकाळ दियो है।" जदी तो दयाल राम री माता हुकम कीधो के, शत्रुघ्न ने म्हारो नाम ले'ने कें'दो के अबे ईंने कई नी के'वे, ने दो'ही भायां ने अठे बुलाय लावो।" यूं कौशल्याजी रो हुकम पूगवापे शत्रुघ्नजी वीं री चोटी छोड़ दीधी। पण जतरे ता वणीरे माथा में माचा पड़गिया, ने नाक भी दब गियो। होठ सूजने विकराळ व्हे' गियो; ने छूटतां ही उठनी पड़तो कौशल्याजीरे पगां में जाय पड़ी; ने "आपले शलणे हं; आपली अपलाधी हूं" यूं म्होटा म्होटा होठां शूं जाड़ी जाड़ी बोलवा लागी। जदी तो दयाल राम री माता कियो, 'अरे अणी बापड़ी ने अतरी क्यूं मारी? यो तो भावी हो सो व्हियो। थूं डरपे मती। अबे थने कोई कई नी के'वेगा। पे'ली ही म्हारे नखे आयगी व्हे'ती तो थारे कई नी व्हे'तो।' यूं हुकम कर-

वर्णांरे पाटापाटी ने मेढालरटी कगय ने दो तीन डागड्यां ने शारगंभाळ मढाय दीधी। अने दो'ई भाई कौशल्या माता नखे पधारया। जाणे राम लक्ष्मण पे मोह आने अश्यो ही अणां दो'ही भायां पे कौशल्या माता ने मोह आयो; ने यांने मुजरो करता देख नखे बैठाय दोई भायां रे मौरां पे हात फेरता थका कोशल्या माता हुकम कीधो, "बेटा! थें श्रठे व्हे'ता तो यो अतरो हळाबोळ नी व्हे'तो।" अतराक में कैकयीजी भी वठे पधार ने "जीजी बाई! 'म्हारो अपराध क्षमा करो चमा करो' यूं के,' कोशल्याजी रा पग पकड खीजना लाग गिया। जदी कोशल्याजी हुकम कीधो "ने'न! अणी में थांरो कई अपराध है। यो तो भावी होणहार हो। राम रो वनवास थाने कश्यो खटयो है? आज तो म्हारे बचे ही बे'न! थां ने अणी बातरो वत्तो शोच है; ने यो दुख भी आपां सगां ने ही सरीखो ही है।" जदी कैकयी जी ऊठ, डागड्यां मेळा जाय ने वराज गिया। जदी कोशल्याजी ने सुमित्राजी शोगन देवाय हाथ पकड आपणे नखे बैठाया। जदी कैकयीजी हुकम कीधो, 'म्हूँ पापणी आपरे तो कई पण आपरी छायांरे अटकना जशी भी नी हूं। हाय! म्हने पति री भी दया नी आई! घोया मूंडा रा बउ, ने बाळकां ने साधु रो शांग कराय देश निकाळो दे'तां भी लाज नी आई। ई तो साराही म्हारा पे जीव छांडता हा। आप ने, सुमित्रा बे'न, दो'ही देवता रूपी

हो, आप वच्चे ही राजा म्हारो मान वचो राखता हा। वणांरो हीज म्हें प्राण लीधो। अश्यो काम तो राक्षस भी नी कर शके। हाय हाय राजा री सांची वातां ने म्हूं छळ समझी ही। राम री लायकी पे म्हनें रीश आवती ही। वणी वाळक रीश जश्यो काम कई कीधो हो ? कई वणी वड़ावां रो गेलो छोड़यो ? कई वणी वंशने कलंक लागे जश्यो कोई काम कीधो ? कई वणी परमेश्वर रा भक्तां ने दुख दीधो ? कई वणी कणी री वऊ वेटी सामो न्हाळ्यो ? वो तो सूरज वंश रो भी सूरज हो।" जदी कौशल्याजी ने सुमित्राजी नरी तरें'शूं समझाया। अतराक में वशिष्टजी पधार दो'ही भायां ने वारणे ले'गया ने भरतजी शूं सब क्रिया कर्म राजा रो कराय चवदमें दिन सब जणा भेळा व्हे'ने भरतजी ने राजतिलक देवा लागा। पण भरतजी साफ नट गिया, और सब जणांने कियो के, 'आपरा ई वचन म्हने दाझ्या पे लूंण ज्यूं लागे है।' जदी सवां ही कियो के राजा विना काम नी चाले जणी शूं म्हां या आपने अरज कीधी है। जदी भरत जी कियो के राजा तो राम है। आंपा सब रामने अयोध्या में राज गादी नी विराजे तो वन में ही राजतिलक करने अठे पधरावां गा।" जदीतो सवां रे ही या वात दाय लागी, ने वाहवा भरत ! धन्य धन्य यूं सब वाह वाही करने प्रभाते ही आखी अयोध्या भरतजी रे साथे साथे वन में विदा व्हे'गई। जदी शृङ्गबेरपुर नखे भरतजी

पधारया तो वो भीलां रो राजा भरत जी रो मे'म करवा-लागो के, "भरतजी रे माथे फोज है; सो म्हारा राम भगवान शूं भरतजी दगो करवा जाता दीखे है। यूं जो व्हे'तो मरां मारां। पण अणांने एक भी पावंडो जीवतां जोव, आगे नी वधवा देवां। पण ईरी एक दाण ग्वबर करलां के या वात कूंकर है।" यूं विचार नजराणो ले'ने सामो आयो। जदी सुमन्तजी परधान भरतजी ने कियो के 'अणी अठे आपरा बड़ा भाई री घणी चाकरी कीधी ही।' जदी तो भरत जी दौड़ने वीं ने छाती शूं लगाय ने मिल्या। भीलराजा सब तरे' भाव देख, जाण गियो के ई तो राम रा प्राण है। अबे तो वो घणो राजी व्हियो। ने भरतजी हुकम कीधो, "भाई भीलराजा ! आप धन्य हो। जो दादाजी, ने भाभीजी री, ने सपूत भाई लछमण री दुग्वरी वगत में अशी चाकरी कीधी। दादाजी अठे राते पोढ्या सो जगा म्हने देखावो।" जदी भील राजा कियो, "म्हारी तो कई भी शेवा अङ्गीकार नी कीधी; ने सब काम में फेर लछमण जी बापजी म्हारे आड़ा पड़ता हा, ने कियो के "म्हारी शेवा में आप वाधा मती न्हाखो;" यूं के,' ने वणो भील राजा श्रीसीता राम पोढ्या ज्या जगा वताई। वठे पाना पे चारो विछ्यो' देख भरत जी हुकम कीधो, "अठे ? अणी पाला में ?" यूं के' भरत जी जीवभूल गिया। ने पाछी ओशान, आवा पे कियो के, "दादाजी रे

तिलक नी व्हे'गा, जतरे म्हूँ भी दादाजी री नांई'ज रेवू गा।"
पछे भील राजा नावां मंगाई; सो सब गङ्गा पार व्हे'ने प्रयाग-
राज में भरद्वाज नाम रा मुनिराज शूं मिल्या; ने वठा शूं पत्तो
लागो के चित्रकूट नाम रा पर्वत पे विराजे है। सो परभाते
चित्रकूट पर्वत कानी पधारया; ने सवां ने ऊली कानी हीज
ठेराय ने भरतजी, ने शत्रुघ्नजी दोई भाई श्रीरामभगवान
विराजता हा वठी पधारया। वणी वगत हाथी घोडा री हाक
हूक ने शुण, ने चित्रकूट रा जीव जन्तु भागता देख राम
भगवान हुकम कीधो, "देख, भाई ! कोई राजा शिकार
खेलवा आयो दीखे है।" जदी लछमण जी रूंखडा पे चढने
अयोध्या रो निशाण देखने अरज कीधी 'ईतो भरत जी फोज
चढाय ने पधारया दीखे है।" कडवी वेलरे तो कडवीज
तूंमडी लागे है। चोखो व्हियो। अबे आज आखी अयोध्या
ने देखाय देवूगा के अधरम रो फळ अश्योक व्हे' है।" जदी
रामभगवान हुकम कीधो, "लच्मण ! धूं कणी पे रीश
कर रियो है ? भरत तो रघुवंश रो उजाळो है। वणी शूं कई
भी बुराई नी व्हे'शके। यो तो थारो हीज भे'म है। जो
भरत लडवाने आयो व्हे' तो भी कई आपांने सामा लडणो
चावे ? कई आपां री बुद्धि, ने विद्या भायां पे चलाना वासते
हीज है ? कई धूं दुशमणां ने राजी करणो चावे है ? कई धूं
घर हाण ने लोगां हंशी करावणो चावे है ? म्हू तो भरत ने

राजा समझ वणी री चाकरी में रे'णो चावुं हूं, ने थने भी अब म्हारा हुकम मुजब भरतजी ने म्हारे वचे ही वत्ता समझणा चावे।" जदी लछमणजी अरज कीधी, "वां म्हने मार न्हाखे तो भी आपरा हुकम शूं म्हं चूंकारो भी नी करूंगा। पण म्हारे जीवतां जीव आपरे ऊपरे जो खोटी विचारी व्हें, तो पछे म्हारा शूं बाप व्हो' के दादाजी व्हो' कणी री ही भुलायजो नी रे' शकेगा।" जदी राम भगवान् हुकम कीधो, "भाई! थने हाल भी भरत पे भे'म है? वो म्हारा पे थारे वचे ही वत्तो मोह राखे है; ने थने बेटा ज्यूं समझे है; ने थारे भाभी ने मां वचे ही वत्ती माने है" अतराक में भरत शत्रुघ्न दोई भाई पधार गिया, ने दोड़ ने भगवान ऊठे ऊठे जतरेक तो पगां में जाय पड़्या। भगवान पाछा ऊठाकर ऊंचाय बड़ा मोह शूं बोल्या। फेर दोड़ सीता-माता रे दोयां ही धोक दीधी। सीतामाता आशीश दीधी। और लक्षमणजी शूं मिलने दोई भाई हाथ जोड़ ऊभा रे' गिया। जदी राम भगवान हाथ पकड़ नखे बेठाय पूछी, "कई अन्नदाता राजी है? थारो चे'रो उदास क्यूं है?" जदी तो भरतजी सब बात अर्ज कीधो। या शुण सीता, राम ने लक्ष्मण सब खीभवा लाग गिया। पछे स्नान कर माता, गुरु, मंत्री आदि सबां शूं मिल ने पाछा आश्रम पे पधार गिया।

एक दाण रामभगवान हुकम कीधो, "आपां मिल

लीधा। म्हारे वासते सवां ने नरी ही अबकाई पड़ी। भरत! अबे थूं पाछो जाव। आपांने चावे के पितारो वचन पूरो करां। राजा रो काम है, के रै'त रो पालण करे, सो सावधानता शूं रै'त ने बाळबच्चा ज्यूं पालणी चावे, ने अणी ने ही ज आपणो धर्म मानणो चावे।" जदी भरतजी हाथ जोड़ अरज कीधी, "यो तो आपरो काम है, सो आप शूंहीज व्हे'गा। म्हें तो सब आपरी चाकरी करां गा।" वणी वगत सब वठे भेळा व्हे' गिया; ने माता, ने गुरु, ने प्रधान सवां समझाया। पण दोही भाई आपणी आपणी हठ नी छोड़े। राम भगवान हुकम कीधो, "जो बात पितारे मूंडा आगे नक्की व्हे'गी वींमें कशर नी पड़णी चावे।" भरतजी अरज कीधी, "भूल शूं ज्यो काम व्हे'जाय वीने सुधार ले'णो चावे।" जदी केकयीजी कियो, "बेटा! राम! थने म्हारी बात राखणी व्हे' तो पाछो अयोध्या चाल ने राज कर। दूज्यूं म्हारो कलंक नी मिटेगा।" पण कौशल्याजी हुकम कीधो, "पिता रे मूंडा आगे प्रतिज्ञा करने बदलणो सपूतां रो काम नी है। थां तो थाणी कानी शूं जाणे राम ने पाछो ले आया, अबे म्हारा, ने राजारा हुकम शूं यो वन में रे'वे गा, ने भरत नखा शूं म्हं राज करावूं गा।" जदी भरतजी अरज कीधी, "माता! राज तो दादाजी रो है ने म्हं तो आणां रा पेंताबा रो चाकर हूं। या कई ठेठरी रीत आप तोड़णो चावो हो?" यूं के' ने भरतजी घबराय गिया।

जदी वशिष्ठजी, ने भरतजी पावड़्यां ले'ने पधारया वी राम-भगवान ने धारण कराय, ने भरतजी ने कियो के, "ई अणांरा पेंतावा है। अणांरी आप सेवा करो ने अणांग राज ने अवेरो। चवदा बरस पूरा व्हियां केड़े पाछा पधारवा पे वड़ा भाई री भी चाकरी करजो। जतरे राम रा राज री रखवाळी करणो भी रामरो चाकरीज है, ने अणी शूं राम घणा राजी व्हेगा, ने मालक ने राजी राखणो आपरो धर्म है। अबे या गुरु री, मातापिता री, सबां री आज्ञा है। अणी में दोही भाई बदलोगा तो, दोष लागे गा।" जदी तो या वात सबां ने माननी पड़ी। पछे भरतजी अरज कीधी "चवदा वर्ष पे एक दिन वत्तो निकळ गियो, ने आप नी पधारया तो पछे म्हैं शरीर नी राखुंगा।" यूं पाछा पधारवा री नक्की रामभगवान शूं भरतजी, कराय लीधी; ने पावड़यां ने सिंघासण पे बराजाय दीधी। अबे सबां ने समझाय राम भगवान सबां शूं मिल भेट ने शीख दीधी; ने "मंथरा जीजी क्यूं नी आई?" यूं पाँच चार दाण वणी ने याद कीधी। पण "वणी रो डोल ठीक नी है," या शुण वणी रे शारशंभाळ री भरतजी ने पूरी भळावण दीधी; ने हुकम कीधो, "कौशल्या माता वचे ही वींने वत्ती समझ जे।" सीता माता शत्रुघ्नजी ने हुकम कीधो, "मंथरा जीजी ने म्हारो पगां लागणो हुकम कराव ज्यो।" जदी लछमणजी अरज कीधी, "भाभी मां! आपही

ाणी रांड ने कई पगां लागणो हुकम करावो। म्हा भाई म्हारी कानी शूं भी वणी ने पगां रा लागणा के दीजे।" जद राम भगवान हुकम कीधो, "लक्ष्मण कई के'वे है ?" जद लक्ष्मणजी अरज कीधो, "भाभी मां, मंथरा जीजी ने पग लागणो हुकम करायो, सो म्हने नो खटी।" जदी भगवा हुकम कीधो, "अणी में नी खटवारी कई बात है ? शाशू दाना मनख ने यूं केवावणो हीज चावे। था अठे आवती र थारे भाभी ने माता री शेवा कीधो ज्यूं ही थीरी भी करा चावती। वउ उर्मिला ने भी के'दीजे सो थीरी पूरी ओशा राखे। यूं दयानिधान राम या भी शुणी ने जाणता हा के मंथ हीज अणी अफंडरो मूळ है, तो भी थींपे भी अतरी दर कीधी। अश्या भारी खमा रा मनरी ओछला बापड़ा क पछाण कर शके। वीतो आप जश्या दुजाने ही गणे। यूं म ने शीख दे राम भगवान सबांने पुगाय, आपणी कुटी में सीत लछमण सेती पाछा पधार गिया; ने अयोध्या वासियां मोहरी बड़ाई करवा लागा। ने अयोध्या वासी सब अयोध्य में उदास रे'वा लागा। ने भरतजी अयोध्या नखे ही एक नंदीगाम है, वठे साधु री नांई रे'वा लागा; ने बड़ा भाई ग पगतारां री चाकरी करवा लागा। और राजकाज सब गुरु, मंत्री शत्रुघ्नजी ने भळाय दीधो ॥

यूं मेवाड़ी बोली में मानवमित्र रामचरित्र रो अयोध्या
चरित्र सम्पूर्ण व्हियो।

अथ

वन चरित्र

प्रारम्भः

अबे तो सारा ही जाण गिया के पिता रा वचन मान अयोध्या रा बड़ा कुँवर वन में पधार गिया, ने भरतजी रे मनावा पे भी पाछा नी पधार्‌या। जदी तो छोटी नजीक रा आदमी राम भगवान रा दरशण करवा आवा लागा। वठे मनखाँ रो मेळो भरयो रे'वा लाग गियो। जणी शूँ वठा रा एकमाड़ा रे'वा वाळा साधूवाँ ने भी अवकाई आवा लागी, ने भगवान भी विचारी, अठे तो धीरे धीरे वसती वश जायगा। आपां ने तो वन में रे'णो चावे। अबे या जायगा छोड़ उजाड़ वन में जाय रे'वां, के जठे कोई नी आय शके। यूँ विचार परभाते वेगा तीन ही जणा वठा शूं एक दाना अत्रि नाम रा रिपि रे'ता हा, वणांरी कुटी पे पधार्‌या। ई वड़ा धरमात्मा रिपि हा, ने अणां री रिपियाणी तो धरम री मूरत होज हा। सीता माता बाळक पणा शूँ ही जनकपुर में अणा रिपियाणी रो नाम शुण राख्यो, हो सो अणां रा दरशणाँ री

क्दकी ही चांपर लागरी'ही । घडी घडी रा भगवान ने अरज करता हा के, अनुसूया माता रा दरशण करवा कधी चालां गा । आज वठे पधारवा री शुण घणा राजी व्हिया, ने ज्यूं ज्यूं वशॉ रो आश्रम दिखवा लागो ज्यूं ज्यूं वत्तो वत्तो हरष व्हेवा लागो । अत्रि रिषि राम,-सीता-लक्ष्मण ने पधारता देख, सामा पधार्‌या । राम-लक्ष्मण ने पगां में धोक देता देख, बडा मोह शूँ तीना रे ही माथा पे हाथ मेल्यो, ने आश्रम पे पधराय कंद मूळ फळ अरोगाया, ने अनुसूया जी भी तीना ने ही देख, घणा राजी व्हिया । पछे रिषि, राम लक्ष्मण ने ज्ञान-ध्यान समझावा लागा । जदी अनुसूया जी सीताजी ने हुकम कीधो, सीता बटी ! चाल आपां भी ज्ञान चरचा करॉ । यु के' सीताजी री शीख राम भगवान शूँ माँग आप री कुटी में पधार्‌या । वठे सीताजी हाथ जोड पगा में धोक दे'ने अरज कीधी, के हे पतिव्रत में बडा माता जी ! आपरा दरशणा री बाळक पणाशूँ ही म्हने लालमा लाग री' ही । आज आपरा दरशण कर म्हूँ म्हारा जनम ने सुफळ जाणू हूँ, ने यो वनवास भी म्हारे गुणकारी हीज व्हियो । जदी अनुसूया जी हुकम कीधो, क्यू नी व्हे' बेटा ! एक पवित्र राजा रा कुळ में तो थूँ जनमी है,ने एक पवित्र कुळ में थूँ परण ने आई है,अने अशी बुद्धि थारी व्हे' जणी में कई अचम्भो है। म्हारो तो दो'ही टिकाणा शूँ प्रेम है, सो अणी मनातन

शूँ थूँ म्हारे बेटी ने वऊ दो'ही लागे है। थारे जश्या गुण व्हे'वणी पे तो म्हने दूँज्यूँ ही मोह आवे है। थारो जनम सुफल व्हे' जणी रो तो कई के'णो, पण थारी वाताँ शुण शुण ने शेंकड़ां लुगायाँ रा जनम सुफळ व्हे' जायगा। आछो आदमी आपणो हीज आछो नी करे है, पण वणी शूँ सब संसार रो आछो व्हे' है। यूँ ही खोड़ीला शूँ सब संसार में खोड़ीला पणो फैले है। बेटा! राम ने बनवास व्हियो सो वो'त आछो व्हियो। वगत पड़े जदी हीज आपणा पराया रो, नें धरम-अधरम री खबर पड़े है। थारी चड़ाई तो म्हें कदकी ही शुणी ही, के जनक जी री बाई बड़ी धरम वाळी ने श्याणी है। पण आज थने पति रे साथे दुःख भुगतवाने बन में निकळी थकी देख, म्हने वणी बात पे भरोशो आयगियो।

बेटा! आपाणी जात जनम शूँ ही पाका अन्न जशी है। फेर रूप तो आपणे कर्णी कणी वगत दुशमण रो काम कर दे है। आपाँ पे मे'म करतां भी मनखाँ ने देर नी लागे, ने बुरो विचारतां भी लोगां ने लाज नी आवे। थारो ने राम रो जनम संसार ने सुधारवा वासते हीज व्हियो है। बेटा! म्हने या के'तां हरप ने शोक दो'ही व्हे' है, के थारा पे ओर भी दुःख पड़ेगा। पण सोनो ज्यूँ ज्यूँ तावे ज्यूँ ज्यूँ ही वचो वत्तो चमके है। अणी शूँ थारो दुःख हीज संसार रे सुख रो कारण व्हे'जायगा। म्हारो के'णो लुगाई जात री भलाई रे वासते है, सो थूँ ध्यान दे'ने शुण।

अणी शूँ आपणी जात रो भलो व्हे'गा। धणी हीज लुगाई रे धरम-करम-तीरथ-वरत है। ज्या लुगाई पतिवरता नी है, वा लुगाई नी है। परन्तु जनावर है, जनावरों में भी वींने गडुरी समझणी चावे। क्यूं के पति तो गडुरी रे भी व्हे' है। पण वा पतिवरता नी व्हे' है। लुगाई ने चावे, के जतरे व्याव नी व्हेवे, जतरे मां-बाप वा आपणी लागती रा री रखवाळी में रे'वे। व्याव व्हियां केड़े पति रा कें'वा में रे'वे, पतिरो वियोग व्हेवा पे बेटारे, वा वणी वंशरा बड़ा बूढ़ा री रखवाळी में रेवे। पण लुगाई जात ने आपे नी व्हे'णो चावे। बेटा! आपणो धरम आपणे नखे है, ने धरम रो रखवाळो दूसरा शू नी रे'वे है। पण संसार में अणी शूँ आछो लागे है। पे'लो भय तो भगवान् रो राखणो, दूजो भय धरमातमा राजा रो राखणो, ने तीजो भय लोकीत रो भी राखणो चावे। संगत रो गुण व्हे' जस्यो ओर रो नी व्हे' है, जी शूँ सदा आछी संगत राखणो, खोटी संगत शूँ आछी बातां भी खोटी दीखवा लाग जावे है। अणी वासते खोटी संगत कधी नी करणी। बाप व्हे' बेटो व्हे' अथवा भाई व्हे' तो भी एकन्त में नखे नी बेठणो। जणी लुगाई रो दूसरा आदमी कानी मन ही नी जावे, वींने देवता समझणी, वा होज महासती बाजे है। जींरो दूसरां ने बाप-भाई-बेटा ज्यूं समझ मन रुके वींने मनख कें'वे है। जींरो मन लोकां लाज शूँ

अथवा डर शूँ रुके वींने मनखां में भी नीची समभणी चावे। ज्या थोड़ा सुखरे वामते हूं लोक ने परलोक रो विचार नी करे वा गड्डुरी हे। वा परलोक में नरक भुगतेगा, ने अठे भी वींनि मायलो मन भाँय रो भाँय धुरकारतो रेवे गा। मनख एक साथे पाप में नी लागे हे, पे'ली मन थोड़ो थोड़ो पाप कानी ढळके हे। पछे रुकणो मुशकल व्हे' जावे हे। अणी वामते वठीने पे'ली शूँ ही नी जावा देणो आछो हे। मन ने मजबूती शूं मरणो धारने रोक देवे, तो पछे मन रो जोर आपां पे नी चाल शके हे। काचो पोचो मन हीज नरक रो गेलो हे। बेटा! थारा में तो शुभाविक ही आछा गुण हे। पण संसार रे वामते या बात कीं हे। जदी श्रीसीताजी अनुसूया जी रा पगां में धोक दे, हात जोड़ अरज कीधी, के या जानकी आपरी दो'ही तरे शूँ छोरु हे। अणीरा काम आप री दया शूँ आप ने राजी करवावाळा हीज व्हे'णा चावे। परमातमा आपने घणां वरस वराज्या राखे ओर आप सतीग संसार में दरशण व्हे'ता रे' तो अणी संसार रो भी भलो व्हे'जावे। श्रतरा में अत्रि रिपि शूं शीख मांग दोई भाई आगे पधारवा लागा। जदी सीताजी भी अनुसूया माता शूं शीख माँगी, ने अरज कीधी, के अणी आपरी बाळक पे सुनजर वणी रखावे, ने कधी कधी याद करावता रेवे। जदी अनुसूया माता आशीश दे'ने सीताजी ने शीख दीधी। अबे तीन ही जणाँ आगे उजाड़ वन में

पधार रिया हा। अतराक में वठे एक महा भयंकर विराध नाम रो रागश, सीताजी ने पकड़वाने दोड़्यो। पण दो'ही भायां वीने मार नाख्यो। पछे राम भगवान लक्ष्मणजी ने कियो के अठे घोर उजाड़ वन है, सो धनुष चढाय ने थारे भाभी रे पाछे पाछे चाल, ने म्हूँ आगे आगे चालूं। यूं चार ही कानी नजर राखता चालां। अबे और तो कठी ने ही गेलो नी दीखे है, सो अणी पगडंडी पगडंडी चालो। क्यूं के मुनियां शरभंग नाम रा महातमा रो आश्रम अठी ने हीज बतायो हो।

यूं भगवान शरभंग नामरा महातमा रे अठे पधार्‌या, ने वठा शूं सुतिच्छण मुनि रे अठे पधार्‌या, ने वठे रात रे'ने प्रभाते अगस्त्य मुनि रे आश्रम पे पधार्‌या। वठे वणां रिषी रागशां री अनीति शूँ दोही भायां ने वाकब कीधा, के ई नींच कई विचार नी राखे है। धरम करम रो तो नाम नी जाणे। स्वारथ रे धामते को' जो अधरम कर नाखे, ने गेलें ही चालतां रिषियाँ ने खाय खाय ने ई हाड़का रा ढगळा लगाय राख्या हैं। ई घमंड शूं लोक परलोक रो कई विचार नी राखे। अणाँ नवो ही धरम मनमान्यो बणाय लीधो है। अठे नजीक ही पंचवटी री आछी जगा' है। गोदावरी नदी कने वे'री है। साधु वठे रे'ने भजन करणो चावे। पण नजीक ही रावण रो थाणो है वठे खर दूषण त्रिशिरा नाम रा

तीन मुखिया, रावण री कानी शूँ रे'रे' है, ने चवदा हजार राखशां री फोज, वणांरा हुकम में है, सो वी चार ही कानी अफंड मचावता फिरे है, सो वणांरा डर शूँ कोई पंचवटी में नी रे' शके। जदी राम लछमण अरज कीधी, के म्हें भी अशी ही जगा शोध रियाँ हाँ। जदी अगस्त्य रिषि एक आछो धनुष भायो ने दो तरवारा दो ही भायाँ ने दीवी, ने क्यो के आप सावधानी शूँ वठे री'जो।

जदी दोही भाई, ने जानकीजा रिषि वतायो वणी गेले व्हे' ने पचवटी पधार्या। वठे पाच वडला रा रूँखड़ा गे'री छाया रा लाग रिया हा। नखे ही गोदावरी नदी खळ खळ करती वे'री ही। हस मोर चकवा पखेरु खेल रिया हा। नदी नखे चोडी चोडी जगा' पे गदरा जशी रेती बिछी थकी ही ओर छोटी छोटी धोब दलीचा सरीखी जम री' ही। एक कानी तरे तरे रा रूखड़ारी जाळ्यां लाग री ही। वठे आरणा भैंशा पाणी पीवा आवता हा, ने खरगोश्या हरण्या दोडता, ने कूदता हा। कोयलाँ न्यारी ही टहक री' ही। अशी रमणीक जगा देख, तीनों रे आछे आय गी'। वठे एक मगरी पे भाई भोजाई रे वास्ते लक्ष्मणजी एक सुहावणी कुटी वणाय ने वीं शूँ थोडीक छेटी एक पानारी डेंगची आपणे भी तयार कर, रे'वा लागा। सीताजी ने वठे खूब सुँवाय गियो। एक हाथी रा बचा ने नरम नरम

पाना खवाय खवाय ने हेवा कर लीधो हो, सो वो वठे हीज कुटी नखे चर्याँ करतो हो और एक मौर रा बचा ने भी सीताजी चटकी पे नाचणो शिखाय दीधो हो। कधी परण कुटी में वराज्या वराज्या हात्यां री, गेंडा री, ने ना'रां री लड़ाई देखता हा, ने कधी कणी गरीब जनावर ने कोई म्होटो दुख देतो, तो लच्मणजी ने हुकम करता, सो लच्मणजी छोड़ाय देता हा, कधी लक्ष्मणजी राम भगवान ने अरज करता के जीव कई है, ईश्वर कई है, ने जगत कई है, तो राम भगवान अणी री नरणो समझावता हा। यूँ तीनां ने ही वठे सुवांय गयो हो।

एक दिन राम भगवान गोदावरी नदी में सनान कर पाछा पधरता हा। वणी वगत छेटी शूँ वणां ने रावण री वे'न देख लीधा। ई री नाम शूर्पणखा हो, ने या विधवा ही। अठे रागशां रा थाणा में रे'ती ही, ने वनमें चार ही कानी शेलाँ करती फिरती ही। अणी पे'ली तो आणी के कोई साधु व्हे'गा सो जाय ने घेंटी मरोड़ ने लोई पी आऊँ। जदी नखे शू राम री रूप देख्यो, जदी तो ईरो यो विचार बदल गियो, ने या आछो रूप वणाय ने परण कुटी, आय खटकी। वणी वगत ई ने देख श्रीजानकीजी रामभगवान ने अरज कीधी के ई कुण आया? जतराक में तो वणी रामभगवान नखे जाय ने कियो के थें'

सुण हो अठे वन में क्यूँ मार्‌या माग्ता फिरो हो ? जदी तो रामभगवान वींने मन वात समझाई । जदी वणी कियो, के म्हने परण जावो तो थाने अठे वन में कई अवकाई नी पड़ेगा। जदी रामभगवान हुक्म कीधो के वणी कुटी में म्हारो भाई है. घठे जा । म्हूँ तो परण्यो थको हूँ । राम भगवान विचारो के लक्ष्मण ई ने समझाय ने शीख दे' देवे गा, ने मोसो देवेगा तो धुत्कार भी देवे गा । आपाँ क्यूँ धुत्कारां । पण वा समझी म्हारो भाई थने परणेगा, सो लक्ष्मणजी री कुटी में दोडी थकी गी', लक्ष्मण जी लुगाई ने शामी उभी देख नीचा न्हाळ हुकम कीधो थूँ कुण है, अठे क्यूँ आई है ? जदी वणो कियो परणवा । लक्ष्मणजी हुक्म कीधो के थने म्हारी खबर नी, ने म्हने थारी खबर नी । नी, जो कोई थारो भाई वन्ध भी थारे साथे है । थूँ यूँ अकेली फिरती फिरे है । लुगाई ने आपे नी फिरणो चावे । जदी वणी कियो, के म्हने थारी खबर है । जदी लक्ष्मणजी हुक्म कीधो खबर व्हे'ती तो अठे आवती ही नी । जदी तो पाछी भागी सो रामभगवान नखे जाय, खटकी । भगवान हुक्म कीधो, के अठे पाछी क्यूँ आई ? म्हें तो लक्ष्मण नखे जावा री कीं' ही, थूँ वठे नी गी' कई ? जदी तो फेर पाछी लक्ष्मणजी नखे जाय खटकी, यूँ वा हींदा री पाटकड़ी री नाँई अठीरी उठी फिरवा लागी । पछे तो वा नक्की करने राम भगवान नखे जाय ने के'वा लागी, थें म्हने

क्यूं नी परणो हो, ने अठी री अठी क्यूं फेर रिया हो। जदी राम भगवान विचारी के लक्ष्मण ब्रह्मचारी है, वो एकान्त में लुगाई शूं यूं बोलणो भी नी चावे है। ईं शूं म्हूं हीज ईं ने समझाय ने सीख दे' देवुं। सीता माता तो वीं ने देख ने बड़ो अचंभो करवा लागा। रामभगवान हुकम कीधो म्हाँ थने अठी री अठी कदी फेरी ही। थारा मन शूं ही थूं दौडती फिर री' है। ई में थारी शोभा नी है। कन्या तो 'मां बाप रे आधीन रे वे है। वी देवे जठे ही जावे है। कई थारा वंश में कोई नी है। कोई नी है, तो भी मामा मुशाळ रो कोई थारे लायक वर शोधने अग्निमायकी करने थने परणाय शके है। म्हें तो रघुवंशी हॉ म्हें पराई लुगाई सामो देखणो भी पाप समझां हां, और शासतर री रीत छोड़ने चाले वीं ने दंड देवाँ हाँ। जदी वणी विचारी, के ई, तो के'वारी वातां है। पण अणांरे या लुगाई है जी शूँ म्हने नी परणता व्हे'गा। यूँ जाण जोर शूं विजळी ज्यूँ कड़की, ने कियो, अणी दुबळी कुरूपी ने तो म्हूं अबार-परमधाम पुगाय दूं। यूं के' वा श्रीजानकीजी पे शांवळी री नांई रपटी। जदी तो राम भगवान सीताजी रे आगे आय ने ऊभा रे' गिया, ने लक्ष्मण जी वीं री कड़क शुण दौड़ने पधार्‌या, तो राम भगवान हुकम कीधो, के देख तो खरी माई, अणी रांड कपटी ही धामर ताळ लगाय राखी है, ने सूधी ज्ञान री वात के'तां थारे

मामी ने मारवाने त्यार व्हीं' है। जदी लक्ष्मणजी अरज कीधी के या तो वे'री ने नरदी गंड दीसे है। अशी वात नगटी विना हुण करे है, ने ध्यान व्हे'ता तो आपां कधकी ही समझाय ग्या हां। पण या तो आप नवा शूं भागे ने तो म्हारे नखे आवे, ने म्हारे नवा शू भागे ने आप नवे आवे। म्हूं जाणू ई रे नाक कान व्हे'गा, पण ई तो दीखत रा हीज है, ने अणां शूँ दूजा आदम्यां ने धोखो व्हे' जायगा। अशी रांडां रे तो नाक कान राखना शूं मामो नाक कान रो वदनाम व्हे' है। यूँ हुकम कर लक्ष्मणजी अणी रा दो ही कान' ने नाक तरवार शूँ काट नाख्या, सो नाक रे साथे साथे ऊपरलो होठ भी कट गियो, सो ठेठ पेढचां से'ती ऊपरला दांत धोळा भाटा रा दांतां ज्यूं वारखे दीखवा लाग गिया। पे'ली ही तो आप रूपाळा घणा हीज हा, ने फेर लक्ष्मणजी री कृपा शूँ जाणे नवो रूपरो भंडार खुल गियो। सो अबे तो रूप रो पार ही नी रियो। आखो ही डील गुलाल खेली व्हे' ज्यूं रातो व्हे' गियो।

पछे वा हाका करती ने छाती ने माथा कूटती वठा शूँ भागी। दूज्यूं वा डगती भी नी पण लक्ष्मणजी रा टोटका शूं चुडेल डील में शूं निकळे ज्यूं कुटी में शूँ निकळ ने भाग गी। जदी सीता माता कियो के अशीज रांडां लुगाई जात री बुरायां करावे है। वठे नजीक हीज थाणापति खर

पण वींरा काका बाबा रा भाई रे'ता हा। वणां रे पुकारू दौड़ी। वणाँ बे'न ने हाका करती ने लोयां में रंगाबंग व्हीं' थकी आवती देख कियो, के बे'न बे'न कई व्हियो कई व्हियो ? पण वा तो 'धिरकार धिरकार थारो जमारो' यूं हाका कर कर ने के' वा लागी। फेर भाई पूछे बे'न बे'न कई व्हियो, पण वणी तो या हीज ढोळी पकड़ लीधी सो 'धिरकार धिरकार थारो जमारो' यूं हीज कियाँ जाय। जदी फोजरा सारा ही पूछे पण वा तो यो रो यो हीज जवाब देवे। जदी एक रागश कियो देखाँ अणी रे माथा में कठेक लागी दीखे है, यूँ के'ने शाड़ी माथा पर शूँ परी कीधी, तो नाक कान रा ठिकाणा ही नी लाधा। जदी तो सारा ही कियो, अरे, बाईजी लालरी या कई दशा व्हे'गी। लंकानाथ आपां ने के'वे गा, के म्हारी बे'न री थाँ या कई दशा कराई। खर दूषण कियो, के यो तो आज आपाँ सारा ही रागशाँ रो नाक कट गियो। वा नकटी बोली के म्हें तो सब मनखाँ रो नाक कटावा री कीधी ही, पण बात ऊंधी पड़गी।

अठे अयोध्या रा बड़ा कुंवर री लुगाई है। वीं ने दादा खर! थारे घर में घालवा ने लावा वासते म्हूँ गी' ही, सो म्हूं वींने भगराय री' ही जतराक में तो वी दो ही खोडीला आय गिया, ने म्हने पकड़ने म्हारा नाक कान काट नाख्या, ने कियो, के रांड मनखाँ रा नाक कटावती

ही। पण यो सब रागशाँ रो नाक कट गियो। जा रांड पुकार थारा बापां, ने अबे जो वणी लुगाई ने थांरा घर में नी टेसूँगा ज्या घडी धरम वाळी वणती ही, ने वणीरा माँटी ने देवर रो उनो उनो लोही नी पीयूंगा, तो म्हूँ माथा बांध कूड़ा में पड़ने मर जाऊँगा, ने म्हारी हत्या थांने लागे गा।

जदी तो रागशां ने वड़ी रीश आई ने एकी' साथे फौज री चढ़ाई कर दीधी, ने आगे आगे नकटी रांड गेलो वतावती वतावती जाय री'ही। आकाश में धूळा री धूंधळ देख राम भगवान हुकम कीधो, भाई लक्ष्मण, रागशां री फौज आय री'दीखे है। वो देख धूळो उड रियो है, ने हाथी घोड़ा रथ री, ने फौज रा लोगां री हाका हूक ऊंडी ऊंडी शुणाय री'है। म्हने अशी दीखे है के आज घणो मारी रण व्हे'गा। अणी वगत में आपांने आपणो बचाव कर, वणाँ ने मार ने थारी माभी री ओशान पूरी राखणी पड़ेगा, ने अणांरी आड़ी मन रे'वा शूं आपां ठीक तरे शूं लड़ नी शकां गा। जणी शूं थूं अणां ने अणी परवत री खोह में छुपाय दे, ने थूँ भी वठे छिपने बेठो बेठो देख जे। अणां ने अठे नी देख ने कतराक रागश शायत थारे नखे भी आय जाय, ने थाँ शूं लड़े जणां ने थूं संभाळ लीजे, ने म्हारा शूं लड़ेगा जणां शूं म्हूँ समझ लूंगा। अबे देर करेगा तो रागश नजीक आयां केड़े, अणां ने आपाँ छुपाय नी शकाँगा। जदी लक्ष्मणजी वणी गुफा में सीता

माता ने छुपाय ने बारणा पे छिपने रखवाळी करवा लागा। ने छुप्या छुप्या दोही देखवा लागा।

अतराक में तो रागश धामा धूम मचावता, ने म्हे चे'न रो बदलो लांगा म्हें बाईजी शारो हुकम बजावांगा, म्हें मनखाँ ने बाँधाँगा, म्हें मनखां ने खावाँगा' यूँ करता, करता पंचवटी नखे आय गिया, ने जदी तो शूरपणखा छेटी शूँ आंगळी शूँ बताय दीधा, के बडो तो वो-मँगरी पे बेठो है, ने दो जणा क-जाणाँ कठे है। जदी कणी तो कियो, वी तो भाग गिया दीखे है, कणी कियो छिप गिया दीखे है। कणी कियो अश्या भागवा न्हाटवा जश्या व्हे'ता तो अठे घोर उजाड़ वन में आवता ही कधी। कणी कियो आपां ने देख, ने तो देवतां रा ही. देवता कूँच कर जावे है, ई तो मनख है। कणी कियो, यो तो नरमे बैठो है। कणी कियो अबार ई री भी टणकाई गेले लाग जायगा। कणी कियो ई री लुगाई रो तो पत्तो लगावणो चावे। कणी कियो अणी उजाड़ में शूँ कठे जाय शके है। अबार लाघ जाय गा।

यूं करता करता ज्यूँ नजी'क आवता जावे ज्यूँ ज्यूँ राम भगवान रा आछी तरे'शूँ दरशण व्हेवा लागा। जाणे वणी मंगरी पे शावण भादवा रो गे'रो शाँवळो बादळो उतर आयो है। आखोई शरीर, जाणे तेज शूँ चमक रियो

है। हाथी री शूंड जशी वड़ी वडी चूड़ी उतार भुजा है। चोडी छाती, कमळ जश्या नेतर, ने उँची ललाट दमक री' है, ने निर्भय ने रागशाँ शूँ लड़वाने अकेला ही त्यार है। जटा री मुकट धारण कर गरयो है। कमर में भाथो बाँध राख्यो है। धनुश बाण हाथ में लें'ने धरम रा दुशमणां री वाट देख रिया है। कर्ण कियो ओहो! शूरता ने सुन्दरता दोही जाणे अणी अकेला ही मनख में आय ने बेठगी है। कणी कियो के मनखाँ री कई, यो तो तीन ही लोक री राजा व्हे' जश्यो दीखे है। कणी कियो के दुशमणाँ री लडाई करताँ थाँने लाज नी आवे। थें तो डरपण्या हो। जदी अकपन नाम रे रागश कियो बावे ज्यो व्हो' अणाँ ने एकलो समझ नेरप रावो मती। दुशमण री नेरप नी राखणी। खर दूषण कियो अणी री लुगाई ने दे' देवे, तो आपणे लडने कई करणो। म्हारी बे'न गे माजनो रे' जायगा। कणी कियो या तो वेंडा पणा री वात है। कणीं कियो आपणी फोज देख डरप ने शायत दे' भी देवे गा। के'वा में कई अटकाव है।

यूँ शल्ला कर चार हलकारा राम भगवान नखे वणाँ भेज्या। वणा जाय सब वात की'। जदी राम भगवान हुक्म कीधो म्हा थारो कई बगाडो नी कीधो। या जगा म्हाराँ रहवारी है, अणी में थें रे' ने अधरम कर

रिया हो, तो भी म्हाँ कई नो कियो। अबे थें शगत अठे लड़वा आया हो। तो म्हें रजपूत हाँ लड़ाई तो म्हांरे रमत है। परभाते ऊठ, ने म्हें धरम री लड़ाई में देह छूटवा री ईश्वर शूँ अरजाश करां हाँ। जो थांरां में लड़वा री आमगण नी व्हे' तो म्हूँ डरपे जींने मारणो नी चावूँ हूँ, ने टणकाई देखावा री मुरजी व्हे' तो म्हूँ अणीज वासते अठे आयने रियो हूं। क्यूँ के साधू ब्राह्मण गरीबां पे थें घणी टणकाई देखावो हो, मो देखां, म्हूँ भी देखूँ, के रागश कश्याक शूरा व्हे' है। अवार तो थें' म्हारी लुगाई माँग रिया हो, पण दो दो हाथ म्हारा देख लो गा, तो थांरो जीवणो हीज मारे नखा शूँ मांगवा लाग जावोगा। लड़वा ने आवणो तो लड़णो, ने जीमवा ने आवणो तो जीमणो। अणी में संकोच नी राखणो। भूख नी व्हे' तो वा वात न्यारी है। या वात हलकारॉ पाछी सब रागशाँ ने की'।

जदी तो सारा ही कें'वा लागा, अबे कई देखो मारो, पकड़ो, उड़ाय दो, वखेर नाखो। यूँ के' चारही कानी शूँ अकेला राम पे टूट पड्या। पण घणा दुश्मण शूँ एकला ने कूंकर लड़णो चावे, या रीत भी भगवान विश्वामित्रजी शूँ शीख्या थका हा। जी शूँ एक साथे वणांरा भाला, तीर, गोळी, भाटा, गोफणां, तरवारां, ने काट तोड़ वंचाय एक एक' तीर री भालडी चवदा ही हजार रागशां रा डील में चोच दीधी।

जदी तो रागश जाण गिया, के या लड़ाई शें'ल नी है, ने अबे राम आपणो वार कीधो। जणी ने रागश वंचाय नी शक्या, ने शेंकड़ाँ हजारां माथा, हाथ, टाँगड्यां, वणी जगा' वखर गी। देखतां ही देखतां सब फौज ने राम भगवान काट, ने तारां रे खेड़े पशाय दीधी। जदी तो त्रिशिरा नाम रो रागश आपणा रथने आगे वधाय, ने राम शूँ लडवा लागो, ने आछो लड्यो। पण वींने भी शेवट में धरती पे शूवणो पड्यो।

जदी तो दूपण वध्यो, ने वणी भगवान पे अनेक बाण अश्या वाया के जणां ने राम भी नी टाळ शक्या, ने वी भगवान री चोड़ी छाती में ने वड़ी भुजा में और ललाट में भी लाग गिया। पण पाछो झट ही राम भी वणां रो जवाब दे' दीधो। जणी शूँ दूपण सदाई रे वासते मून ले' लीधी अर्थात् मर गियो।

अबे तो खर वध्यो। नरी देर शूँ नरा ही रागशॉ शूं लड़तां लड़तां राम भगवान रे परशीनो चूवा लाग गियो हो, ने जगा जगा तीरॉ रा घावाँ में शूँ लोही भी वे'रिया हा। पण रणशूरा राम री लड़ाई री उमंग तो वधती ही जाती ही। खर ने आवतो देख, राम हुकम कीधो, हे नीच रागश! अणीज टणकाई पे साधुवाँ ने दुःख दें'तो हो?। थने खबर नी ही के अणाँ री कानी भी कोई है। अबे थारो पाप

रो घड़ो फूटवा ने आय गियो है । अबे वामण साधू अठे राजी खुशी भजन करेगा, ने संसार में धरम फेलेगा। जदी खर कियो, हे राम म्हू जाणूं हूँ, के थूँ बडो शूरवीर है। पण यूँ पोमावणो थारा जश्या ने शोभा नी दे' है। वहादुर रा हाथ काम करे है, ने डरपण्या री जीभ काम करे है। थने अतरा रागश मारने घमंड आय गियो है। पण हाल तक तो म्हूँ एक बाकी हूँ। काम कर ने भी समझणा घमंड नी करे, ने मूरख तो पे'ली ही पोमावा लाग जावे है । अबे आपां रा हाताँ रा युद्ध रो वगत है, वातों रो नी। या वात खर री राम भगवान रा मन में चुभ गी', ने श्रने तो दोयाँ रे ही अश्यो युद्ध व्हियो, के शेण दुश्मण सारा ही वाह वाह करवा लाग गिया, ने देवता भी रथ रोकने या लड़ाई देखवा लाग गिया। अबे कूण जीतेगा अणी वात री देखवावाळा ने नक्की नी ही। खर एक वाण अश्यो वायो के राम भगवान रा वाण ने काट ने धनुप ने भी काट नाख्यो। जदी तो राम भगवान् शारंग नाम रो आपणो धनुष चढाय लीधो । पण जतराक में वणी री भी वणी चढ़ती चणप ने काट न्हाखी। ज्यूँ ज्यूं फुरती शूँ राम चणपॉ चढ़ावे त्यूँही त्यूँ फुरती शूँ वो काट न्हाखे। यूँ सात दाण वणी चणपाँ काट न्हाखी। पण आठमी दाण में राम अतरी फुरती कीधी के वीं रे बाण रे वावतां पे'ली चणप चढाय वाण शूँ वाण काटने अबे आपणा वाण

चावणा आरंभ कर दीधा। एक वाण री तो वीं रे ललाट में दीधो, ने एक शूँ वीं रो धनुष काट न्हाख्यो। जद वो भी फुरती शूँ धनुष बदलवा लागो। पण वो हाथ में धनुष लेवे, ने वींने भी राम काट न्हाखे। फेर दूसरो लेवे जतरे वीं ने भी काट न्हाखे। अबे तो सात धनुष वींरा काट ने रथ भी तोड़, ने वचे वचे वाणां शूँ सारथी घोड़ा भी राम मार ने आपणी अनोखी फुरती देखाय दीधी। जदी तो वो भालो लेने राम पे दोड़्यो। पण वो भी काट न्हाख्यो। अबे वणी नखे कई आवध नी रियो। जदी तो वणी एक डींगो उँचाय ने भगवान रा मस्तक पे दीधो, जणो शूँ थोड़ी देर अयोध्यानाथ ने जॉफ आयगी। पण पाछा झट सावधान व्हे'ने हुकम कीधो, खर! सचेत व्हे', 'यो वाण आवे है' यूँ, के', ने एक ही वाण में खर रो खेर कर दीधो। या देख शूरपणखा फेर चठा शूँ छाती माथा कूटती थकी लंका कानी भागी, ने लक्ष्मणजी, ने सीता माता पाछा पधार, ने दोही देवर, भौजाई श्रीराम भगवान री शेवा में लागा, ने श्रीराम भगवान रो अनोखो जुद्ध ने बळ शुण शुण साधू बामण राम ने आशीर्वाद दवा ने छेटी छेटी शूं आवा लागा। यूँ आनंद शूँ सारा, पंचवटी में विराजवा लागा। पण दूसरां रो सुख ने शांति शू रे'णो राक्षस जात ने कठे खटे। वा तो लंका में जाय ने रावण रे मूंड़ा आगे भी 'धिरकार धिरकार थारो

जमारो' यूँ वार वार के'वा लागी। रावण रे पूछवा पे वणी आपणो मूँडो उघाड़ ने वताय दीधो, ने खर दूषण ने की' ही ज्या ही वणावटी वात रावण ने भी के' ने कियो, के खर दूषण भी म्हारे वीडू चड़्या। पण देखतां देखतां वणां रो तो धूँवो व्हे' गियो। अबे लडने तो वणी शूँ जीतणो शे'ज नी है। पण छळ कर ने वीं रे लुगाई ने लाय थांरा रावळा में घाल दो, तो म्हारे जाणे पाछा नाक कान ऊग जावे, ने वणां रा कट जावे, साँची वात है, नकटा ने नाकवाळो नी खटे। जदी रावण कियो, बे'न, थूँ कई विचार मती कर। अबे म्हारा काम देख।

यूँ वीं नगटी बे'न ने धीरप दे' ने अकेलो ही रावण रथ में बेठ समुद्र री तीर पे ताड़का रो बेटो ने वींरो मामो मारीच रे'तो हो, वणी नखे गियो। अणीरे विश्वामित्र जी रे अठे भोटा तीर री राम रा हाथ री लागी ही। जद्कोई यो अठे लंका कने जंगल में भजन करतो हो, ने साधू ज्यूँ रे'तो हो। रावण ने दूरा शू ही आवतो देख मारीच सामे जाय, बडो आदर मान कीधो, ने कियो एक तो आप सब रागशाँ रा राजा, एक पामणा, ने एक म्हारा भाणेज। म्हारे पे मेहरवानी कर अदना री नाँई अठे पधार गिया। अबे म्हूँ कई खातिर करूँ। आपरे वासते तो म्हूँ प्राण देवा ने भी त्यार हूं। जदी रावण कियो मामाजी आपणो तो माजनो वगड

गियो । थांरी तो माणेज, ने म्हारी जो बे'न शूरपणखा, व रा अयोध्या रे कुँवर नाक कान, काट नाख्या । अबे मूँ थां कने अणी वासते आयो हूँ, के वीं रीं लुगाई ने चोर लावूँ । जदी पाछी बराबरी व्हे'शके । पण वो बठे व्हे' जतरे तो या बात व्हे' शके नी । जी शूँ म्हारी के'ण है, के थांने हरण रो शाँग आछो बणावतां आवे है, ने अणी शाँग शूँ आगे भी थाँ नराहीसाधु ब्राह्मण ने मार्‌या है, सो छळ शूँ वाँ दोयाँ ने वीं शूं दूरा करो । जदी मारीच कियो, के हे राजा अश्यो थारे शल्लागीर कूण मिल्यो । जों थने राम शूं वेर बशावा री शल्ला दीधी । राम बडो शूरो है, ने बडो धरमवाळो है । कणी लुगाई रा नाक वो कटावे जश्यो नी है । या तो शूर-पणखा हीज लखणा बायरी है, सो शगत नाक कटाय आई दीखे है । जदी तो रावण रीश करने कियो के थें ताड़का रो बेटो व्हे'ने धूळ खादी । एक नजोगा मनख शूँ ही डरप गियो । यूँ के' ने वीं ने रीश देवाय, ने जूना वैर याद देवाया । जदी मारीच कियो, म्हारे तो आछी शल्ला देवा रो काम हो, सो दीधी । पण अणां शूँ म्हारो वैर तो म्हारे भी ले'णो है, ने आप री चाकरी भी है, सो एक पंथ ने दो काम' व्हे' जायगा ।

यूँ के' ने मारीच ने रावण शल्ला कर पंचवटी नखे गिया । बठे नराई रूंखां री झाड़ी में रावण रथ छुपाय साधू

रो शांग कर मारीच रे साथे साथे आय, एक म्होटा रूँख री आड़ में छुप ने देखवा लागो, ने मारीच हरण रो शाँग अश्यो अनोखो कीधो, के देखताँ ही ईं ने पकड़ ने पाळवा रो मन चाल जावे। वठे, सीता जी विराजता जठे नराई हरण चरता हा। वणां भेळो यो भी चरवा लागो। कणी वगत गावड़ो फेर अठीरो उठी देखे। कणी वगत चमक ठेकडी दे'ने दोड़े। कणी वगत ऊभो-ऊभो वागोले, ने तणमण तणमण पूँछ हलावे। कणी वगत चरवा ने नीचो मूँडो कर नाक रा फुरणा शूँ धूळो उड़ाय, तणखा तोड़े। सीताजी रे जनावरॉ रो शोख तो हो हीज, सो अणी हरण ने देखतां ही बड़ा राजी व्हिया, ने राम भगवान ने वतायो के देखजे यो सोना रो हरण कश्यो रूपाळो है, ने अणी रे धोळी धोळी टपक्यां जाणें हीरा चमके ज्यूँ चमक रो' है। अशी जात रो हरण तो आज तक म्हां भी नी देख्यो। यूँ हुकम कर रामचन्द्र भगवान लक्ष्मणजी ने हेलो पाड़, ने हुकम कीधो, के देख भाई थें भी कधी अश्यो हरण देख्यो हो ? यो थारे भाभी रे नजरे आयो है, ने अणां रे घणो दाय लागो है। लक्ष्मणजी देख अरज कीधी यो तो रागशाँ रो छळ दीखे है, आपाँ रे, ने वणां रे दुशमणी व्हे'गी है, सो आपाँ ने अबे सावधान रे'णो चावे। जदी सीता जी हुकम कीधो आवजी आपने तो भे'म घणो आवे है। रागश

वेर थांघ ने हरण का' शारू वगे। अणी छळ शूँ वणां रे कई फायदो। फेर भगवान ने अरज कीधी, के यां हरएयो तो हाते आप जाय, तो अठे भी म्हारे चोखो तमाशो रे'वे गा, ने अयोध्या में भी घे'नां ने केवूँगा, के वन शूँ थारे यो तमाशो लाई हूँ, ने ई ने देखवाने नराई गाम रा लोग लुगाई आवे गा, सो अणीने तो जरूर आप पकडाय देवावो, ने नी आवतो दीखे, तो खोडो कीधाँ ही आय जाय, तो ठीक, नी तो अणीरी खाल ही लें'जाय, ने देखावाँ गा, के म्हाँ तो वन में अश्या अश्या तमाशा देख्या हा। जदी तो राम भगवान कमर में भातो बाँध ने धनुप बाण ले'ने लछमणजी ने हुकम कीधो; भाई, थारी भोजाई री थूँ अठे रखवाळी राखजे, ने धीरे धीरे वणी हरण ने पकड़वा पधार्या। हरण भी अणजाण री नांई धीरे धीरे आगे वध तो जाय, ने रामभगवान भी अबे वारमें आवे अबे वारमें आवे करतां करतां छेटी पधारवा लागा। पछे वारमें आवतो नी देख्यो, जदी खोड़ो करवाने टाँग पे तीर ताक्यो, ने तो वो ठेकड़ी दे' छेटी जाय, पछो फेर नजीक पधारया, ने फेर छेटी भाग गियो, ने अबे तो ऊभो ही नी रे'वे, जदी तो राम भगवान भी रीश में आय, वीं ने मारवा ने बाण खेंच्यो, ने वो झट रूँखडा री आड़ में व्हे' ने छेटी निकळ गियो। भगवान ने तो यूँ वणी जगा रा गेला री खबर ही नी री', ने

यूँ ही यूँ नराई छेटी पधार गिया, ने यो तो आगे छेटी जाय 'हाय सीता, हाय भाई लक्ष्मण दोड रे, म्हने मारे है, म्हने बंचावो रे! झट आवो रे! यूँ जोरजोर शूँ हेलो पाडवा लागो। यूँ हेलो शुणतां ही राम भगवान ने लक्ष्मणजी री बात याद आयगी' के यो तो रागशां रो छळ है। अबे तो राम भगवान भी जोर शूँ हेलो पाड्यो, के भाई आवे मती, आवे मती पण साथे साथे यो भी नीच छप्यो थको हाक कर रियो के 'झट आव, झट आव, सो दो ही हेला मिलजावा शूँ पे'ली रा हेला री तो खबर पड़ गी'। पछे राम ने रागश री बोली मिली मिली शमळाने, सो कई खबर नी पड़े। जदी राम भगवान वणी रागश री बोली रे समचे तीर वायो। जींरी लागवा शूँ नीच मारीच तो हरण रो रूप छोड़ मर गियो, ने वणी रागश ने मरयो देख, राम पाछा आगता आगता कुटी कानी पधारया पण गेलो भुलाय गियो। क्यूँ के वो अश्या हीज उजाड कानी ले' गियो हो। अठीं ने रावण शिंयाळ्या री बोली बोल्यो, सो आखा वन रा शियाळ्या हुवो हुवो मचाय दीधी, सो कई हेलो हाको शुणाय ही नी शके। वणा वगत सीताजी कियो, लालजी झट दोड़ो आप रा भाई पे दुःख पड्यो, झट जावो' जदी लक्ष्मण जी अरज कीधी, 'दुःखमें धीरज राखणो चावे, आगत शूँ काम वगड़े है, दादाजी म्हने आपने शूँप ने पधारया है। म्हं आप ने छोड़ ने परो जाऊँ, ने पाछे कई

ओछो वत्तो व्हे' जाय, तो पछे म्हूँ मनखां में मूंडो बताबा जोगो नी रेऊँ। म्हारा दादाजी ने कणी री मूंडो है, मो दुःख दे शके। आप घबराबो मती। अबार दादाजी पधारया, के पधारया हैं।

जदी तो सीताजी ने रीश आय गी' ने कियो के *'हे हत्यारा, थने लोभ आगे भाई री दया नी आवे। अशो* दुःख री वात शुण ने तो हरकोई ही दौड जावे, जणी में म्हूँ के'री' हूँ, ने सगा भाई पे बगत पड़ी है, तो भी आप धीरप री वाताँ कर रिया है। सांची है, भाई जश्यो शेण नी, ने भाई जश्यो दुशमण नी, पण रखवाळी माँग रिया हैं, जणा री तो रखवाळी नी करे, ने म्हूँ घर में बैठी हूँ, जणी री रखवाळी करवा निराज्या है। अणां वातां शूँ तो म्हने थारी दानत खोटी दीखे है। पण याद राखजे, सीता अशी वशी लुगाई नी है। अबरुयाजी शूँ म्हूँ प्राण छोड थारी रीत भी शीखी हूँ, सो अबार प्राण छोड दूँगा। अणी भरोशे भूले ही मती। यूँ रीश ही रीश में घबराया थका सीतामाता कई-रा-कई बकवा लाग गिया। जदी लक्ष्मणजी शिव शिव कर ने काना आडा हाथ दे' ने अरज कीधी, के 'म्हूँ तो जाणतो, के कैकयी माँ अयोध्या में रे'गिया। पण ई तो म्हारा केकई माँ साथे ही पधारया दीखे है, ने म्हने भूठो अपराध लगावो हो, तो आप ने ही भूठो अपराध लागे गा। आप भगे मती। म्हूँ

तो यो निकळ्यो । पण पछे आप ने पछतावणो पड़ेगा । फेर भी या अरज करूँ हूं, के या म्हारी वणाई थकी ओवरी अशी गाढ़ी है के ईं में विराज, ने आप मायली शांकळी झड लेगा, तो, दो पे'र तक म्होटो रागश खपेगा, तो भी आपने नी निकाळ शकेगा, । हे माता लछमी, कृपा कर अणी में शूँ बारणे पधारो मती ।' यूँ कें' ने राम रा हेला री शूध पे दोड गिया, ने सीता माता मायली शॉकळी झड़ ओवरी में विराज गिया।

अतराक में रावण साधू रो रूप कर लांबा लांबा टीला टपका कर, ने म्होटी म्होटी माळा पे'र ने खांख में पोथी दाबने आय ने अलख जगाई । सीता माता तो छाना माना मॉय ने विराज्या रिया । जदी तो कपटी साधू ओवरी नखे जाय, ने बोल्यो, म्हूँ तो जाणतो हो, के अठे कोई वसतो व्हे'गा। पण यो घर तो सूनो हीज दीखे है, वसतो वाश उजडताँ कई देर लागे । या बात शुण ने तो सीता माता डरप्या के साधू भूखो जाय । मो भी पाप लागे, ने ई रा मूंडा में शूँ कई निकळ जायगा तो भी आछो नी । यूँ विचार सीता माता मॉय शूँ बोल्या, बावजी आप आशीश देवो सो ई घर हर्‌या भर्‌या रे'वे । जदी रावण कियो यो कश्यो घर है, जी में अभ्यागत ने भीख भी नी मिले या शुण ने सीता माता बोल्या मिले क्यूँ नी बावजी ! पण घरवाळा तो बारणे पधार्‌या है । वणां रा छोटा भाई भी अबार हीज पधार्‌या है । आप थोड़ो देर

पे'ली पधारता तो मिल लेता, ने वी आप री आछी शेवा करता अबे भी थोड़ाक अणी चोंतरा पे आप विराज जाओ, सो पधार्‌या-के-पधार्‌या है। जदी रावण कियो म्हां साधु हाँ, गंडकड़ा री नांई रोटी रे वासते वारणा पे पड्या नी रे'वाँ। म्हाँ तो एक दाण हेलो पाड़ चल्या जावाँ। पण म्हें जाएयो म्हारे सूनो जावा शूँ घरवाळो हामोहीतो दोरो होज व्हेगा। जदी तो सीता माता री छाती धड़क धड़क करवा लागी, ने नोज, आपने भीख कूण नी देवे। अणी बारी नीचे फोळी मांडो सो कन्द-मूल-फळ देवूँ। जदी तो रावण कियो के म्हूँ तो जी रोकण में व्हे' ने भंगी ने देवे, ज्यूँ देवे वणी तीरा शूँ भीख नी लेवुँ। खेर संसार है, म्हूँ कणी कणी रो शोच करूँ। थांरी भीख रे'वा देवो। मूँ सूनाँ हाथा जावूँ हूँ। जदी तो सीता माता वारणे पधार गिया ने किये के, लो महाराज म्हूँ बँधी नी हूँ, और बारणे आई हूँ। जदी तो रावण सीता माता रा रूप ने देख चकित व्हे' गियो और बोल्यो के ए अबला, थूँ तो घणी रूपाळी है। वन में रे'वा लायक नी। थूँ तो कणी राजा रे मे'लां में पटराणी व्हे'ने रे'वा लायक है। थारी जवानी सुख में बीतवा लायक है। थारो धणी गँवार है, जो थने वन में दुःखी राखे और आप रो स्वारथ पूरो करे। थारी दया ही नी देखे। जी शूँ थने भी चावे के, जो थने सुख देवे वींरे अठे रे'वे। वो थारी बड़ाई

ने जाणे। थूँ लका रा राजा रे मे'लां में पटराणी व्हे' ने रे'। वठे थने कई दुःख नी व्हे'गा। अणी वात री हामल म्हूँ देवूँ हूँ। वणी रा शे'र रे चार ही आड़ो समन्दर है। घणी फौज है। वणी रो नगर धन माल शूँ भर्‌यो पूरो है। वठे थारा घणी ओर देवर नी जाय शके है। वणी री बराबरी देवता भी नी कर शके। देवता भी वीं ने माथो नमावे है। जदी तो सीता माता समझ गिया, के यो तो साधु नी दीखे, कोई दुष्ट है। यूँ जाण झट पाछा ओवरी में घुशवा भागा और शांकळ दे'ने माँय ने बेठवारो विचार कीधो। पण रावण वणांने भागता देख दौड़ ने पछाड़ी शूँ सीता माता ने बांध, रथ में न्हाख, रथ दोड़ाय ने भाग गियो, जदी तो सीता माता हे लक्ष्मण! हे नाथ! यो नीच म्हने पकड़ ने ले' जावे है। यूँ जोर जोर शूँ वाराँ करवा लागा। पण रथ री घड़घड़ाट शूँ मोर्‌या बोलवा लाग गिया। वणी उजाड वन में एक पतळा कंठरी वार कुण शुणे। सीता माता घणा ही खीजे, ने जोर जोर शूँ हेला पाडे। पण कोई वणी पुकार ने शुणवा वाळो नी लाधो, रावण जो पवन री नांई रथ ने जोर शूँ दौड़ाय दीधो। वींने अबे दो ही भाई आया, आया, या धाक लाग री' ही, सो नटाटूट जाय रियो हो। वणी सीता माता ने कियो के थूँ क्यूँ घबरावे है। म्हूँ राखशां रो राजा रावण हूँ। थने लंका में कणी तरे' री अबकाई नी पड़ेगा। थारो

पंखेरू दशरथजी रो मित्र हो, ने जटायु अणी रो नाम हो, यो राम भगवान नखे पंचवटी पे भी आयाँ जायाँ करतो हो, राम भगवान अणी रो दशरथ जी ज्यूं घणो आदर करता हा। अणी दाने पंखेरू सीता जी, ने रावण ने ओळख लीधा, ने सीता जी ने यूँ विलाप करता देख अणी री भती मूंडो हो तो भी नी रे'णी आयो। अणी रावण ने कियो, के हे रावण! रागशाँ रा राजा! यो कई कर रियो है। बामदी ने बगड़ा में बाँधने कठे ले' जावे है मय रागशाँ री क्यूँ रावोड़ो करावे है। म्हारो कियो मान, सीता ने छोड़ ने परो जा। पण रावण तो बोल्यो ही नी। जदी तो वो क्रोध कर ने झपट्यो, ने कियो के बेटी सीता डरपे मती। यो म्हूँ आयो। यूँ के' ने एक झापट अशी मारी, के रावण रा मुकट नीचे पड़ गिया, ने चोटी भरराट्या खावा लागगी। ने दूसरी झपट में वीं रो धनुष चाँच शूँ तोड़ नाख्यो। रावण घणो ही वंचावे, ने जाणे, के यो रोक लेगा, तो अवार दोही भाई आय जायगा। पण अणी तो मार झपटां आगे रावण ने घबराय नाख्यो। शेवट में यो दानो घणो हो, सो थाक गियो। जदी सीताजी ने पंजा में ठाम ने पंचवटी कानी उडवा लागो। जदी रावण विचारी, अबे वठी शूँ वी आवता व्हे'गा तो अबकाई पड़ेगा। यूँ जाण वणी महादेवजी री दीधी थकी चन्द्रहाम नाम री-तरवार शूँ वणी रा पांख काट

आखी लंका पे, ने देवता-दानवां पे भी हुकम चालेगा।

जदी सीता माता ने खबर पड़ी के रावण रावण शुणता हा, सो यो है। पछे सीता माता हुकम कीधो आप म्हारे पिता री जगा' हो। आप पुलस्त्य नाम रा धर्मात्मा रिषी रा पोता हो। आपने धर्मात्मा व्हे'ने पराया री बहू बेट्यां ने नी ताकणी चावे। आप पाछो रथ फेरो, ने म्हने जनक जी दीधी ज्यूँ ही आप भी म्हारा पति ने पाछी दे' देवो। अणी शूँ आपरी बड़ी शोभा व्हे'गा ने अयोध्या शूँ आप री सनातन व्हे' जायगा। आपरा अयोध्या रा राजा जमाई व्हे' जायगा, ने म्हूँ आप री बेटी हूं हीज। जो अशी वातां पे नालायक ध्यान देता व्हे' तो संसार में पाप ही नी रे'वे। वणी रीश कर ने कियो अबे तो थें शपना में ही वणां

पंखेरू दशरथजी रो मित्र हो, ने जटायु अणी रो नाम हो, यो राम भगवान नखे पंचवटी पे भी आयाँ जायाँ करतो हो, राम भगवान अणी रो दशरथ जी ज्यूं घणो आदर करता हा। अणी दाने पंखेरू सीता जी, ने रावण ने ओळख लीधा, ने सीता जी ने यूँ विलाप करता देख अणी री मती बूढो हो तो भी नी रे'णी आयो। अणी रावण ने कियो, के हे रावण! रागशाँ रा राजा! यो कई कर रियो है। चासदी ने कपड़ा में बाँधने कठे ले' जावे है सब रागशाँ रो क्यूँ राखोड़ो करावे है। म्हारो कियो मान, सीता ने छोड़ ने परो जा। पण रावण तो बोल्यो ही नी। जदी तो वो क्रोध कर ने झपट्यो, ने कियो के बेटी सीता डरपे मती। यो म्हूँ आयो। यूँ के' ने एक झापट अशी मारी, के रावण रा मुकट नीचे पड़ गिया, ने चोटी भर्राट्या खावा लागगीं. ने दूसरी झपट में वीं रो धनुप चाँच शूँ तोड़ नाख्यो। रावण घणो ही वंचावे, ने जाणे, के यो रोक लेगा, तो अबार दोही भाई आय जायगा। पण अणी तो मार झपटां आगे रावण ने घबराय नाख्यो। शेवट में यो दानो घणो हो, सो थाक गियो। जदी सीताजी ने पंजा में ठाम ने पंचवटी कानी उडवा लागो। जदी रावण विचारी, अबे वठी शूँ वी आवता व्हे'गा तो अबकाई पड़ेगा। यूँ जाण वणी महादेवजी री दीधी थकी चन्द्रहास नाम री तरवार शूँ वणी रा पांख काट

नाख्या । जणी शूँ यो शंख्यो धरती पे पड़, ने तडफड तडफड करवा लागो, ने रावण फेर रथ ने जोर शूँ दौडाय, दीधो । पण थनरके अणी आकाश में रथ दौडायो है सो यो रथ धरती, पाणी, ने आकाश में एक सरीखो दौडतो हो, अणी देखी अने धरती पे चलाना शूँ फेर कोई विघन व्हे' जायगा । अतरी देर तो ऊँचो रथ वणां दोही भायां ने दीख जातो । अने नरी छेटी पडगी' सो नी दीख शकेगा । यूँ विचार वणी आकाश में रथ ने दोडावणो शरू कीधो । सीता माता विलाप करता जाय रिया हा, ने हाय, म्हारा पिता री जगा जटायु हा, वणा ने ही अणी गंडक मार नाख्या । मने अनुसूया माता कियो के लुगाई ने आपे नी व्हे'णो चावे । पण हाय म्हूँ क्यूं बारणे निकळी, लालजी, तो पे'ली ही कियो हो । पण म्हें या कई विना अक्ल री बात कर ने दोयाँ ने ही एक हरण्या रे वासते मोकल दीधा । म्हारी दनदशा अशी कई आई ।

यूँ विलाप करतां करतां वणा रे एक मंगरा पे पाँच वाँदरा बेठा नजर आय गिया, सो झट आपणा पगाँ री नेवरयां, ने कनफूल, पोछावणा, वांदरा पे फेंक दीधा, के या शे'लाणी भगवान नखे पूग जावेगा, ने ई सब बात के' देवे गा । अने रावण सीता माता ने समुद्र पे व्हे' ने लंका में ले' ने परो गियो, ने वठे घणा ही धमकाया

समझाया ने लोभ दीधा । पण सीता माता रो मन नी डग्यो । जदी एक अशोक नाम री वाडी में कैद कर राख्या, ने वठे रागशण्यां रा पे'रा वेठाय दीधा, सो वी सीताजी ने वगत वगत पे डरपावे, ने समझावती रे'वे । अणी रावण नरी नागकन्या, देवतां री लुगायाँ, ने गंधर्वां रा साथ री ने, नी मानती जदी यू हीज राखी ही । पण थोडा थोडा दिनां में वी रावण रा रावळा में घुश जाती ही । यू ही सीताजी ने भी वो जाणतो हो । पण वी ने या खबर नी ही के या तो सब रागशाँ रो खाटो कडावा लंका में आई है । मे'ला में रे'वावाळी ने संसारी सुख चा'वावाळी, ओर व्हे' है ।

अठी ने लक्ष्मणजी आगे मंगरा री नाळ में व्हे'ने हेलो पाडता पाडता पधारया । जदी राम भगवान भी भाई रो हेलो शुण, झट दोड ने हुकम कीधो । अरे भाई या कई कीधी । सीता कठे है, म्हारे नखे कई लेना आयो । रागशाँ रो दाव लाग गियो दीखे है । जदी तो लक्ष्मणजी सब अरज कीधी । जदी 'भावो !' यूँ के' ने दोई भाई दोड ने पधार, ने देखे तो पंचवटी रो कुटी तो सूनो पडी दीखी । अने लक्ष्मणजी जोर जोर शूं हेलो पाडवा लागा, भाभीजी ? भाभीजी ? पण कई जवाब नी मिले । राम भगवान हेलो पाडे जानकी ! तो पाछो कई पण उत्तर नी मिले, ने वठे पण उत्तर

देवावाळो हो ही कुण । खाली पाणी री तीर शूँ ने मंगरा र
शूँ आगे दोही भायाँ री कूटी काड़े ज्यूँ पाछा पड़ग्यो मामीजी
मामीजी, मामीजी, जानकी जानकी फरतो हो ! जदी तो
छेटी नजीक हेर ने खोज काढता काढता दोही भाई आगे
पधार्या । ऐ'ली कुटी नखे, सीताजी रा पग थारणे थावता,
ने पछे पाछा जावता नजर आया, ने एक मनख रा म्होटा
म्होटा पगरा आंगळा मंड्या दीख्या, ने फळ फूल-बखर्या
देख, आगे रथ रा पेड़ा देख, दोही भाई आगे पधार्या ।
तो वणी पंखेरू ने पड़्यो देख्यो वणी दो'ही भायाँ ने देख
अटकताँ अटकताँ वणो खरो समाचार कियो, ने के'ताँ के'ताँ
ही वणी री तो प्राण निकळ गियो । जदी दोही भायाँ वणी री
पिता री नांई क्रिया कीधी, ने नरोही सोचकर सीता ने शोधता
शोधता फेर आगे पधार्या । वठे राम हुकम कीधो भाई !
यो तो अजाण्यो उजाड़ वन दीखे है, अठे नी तो रथ रा पेड़ा
दीखे, ने नी कई ओर खोज दीखे है । जदी लक्ष्मणजी
अरज कीधी के आपणी पंचवटी तो अठा शूँ नरी छेटी रे'गी
है । अणी भयंकर वनी ने देखताँ, जाणी जाय के यो कुंज
नाम री वन आय गियो दीखे है । कबंध नाम रो रागश
अठे हीज रे'तो शुण्यो हो । यूँ के' दोही भाई न्यारा न्यारा
वणी वन ने हेरवा लागा अतराकमें एक कूक जोर शूँ शुणी,
के 'ओर ! कोई म्हने छुडावो रे, कोई दोड़ो रे, यो रागश

म्हने खावे'। जदी लक्ष्मणजी दौड़ने देख्यो तो एक रागश एक भीलड़ी ने पकड़ ने मूंडा में घालवा लागो। जतरेक लक्ष्मणजी दौडने 'छोड़ छोड़ अणी बापडी ने क्यूं मारे है। यूं हुकम कीधो। जतरेक तो दूसरा हात शूं वीं लक्ष्मणजी ने भी पकड़ ने मूंडा माय मेलवारी कीधी। जदी तो लक्ष्मणजी झट तरवार निकाळ वीं रा दोई हाथ काट ने माथा में उमी वाई सो वीं रो माथो बच में शूं फाट गियो। यो कबंध नाम रो रागश हो। अणी री गाबड़ी घड़ में घश री' ही, ने पग भी पेट में घश रिया हा। और दोही हाथ लंबा लंबा हा, वणा शूं छेटी नजीक रा जनावरां ने पकड़ पकड़ ने यो, 'केंकड़ो जळ रा जीवॉ ने खावे' ज्यूं खाय जातो हो। आज लक्ष्मण जी, ई ने मार गेला रो यो काँटो भी मिटाय दीधो। जदी वणी लुगाई लक्ष्मणजी री वाहवाई कर कियो म्हें शुणी के अयोध्या रा दो राजकुँवर ने वड़ा राजकुंवराणीजी, वन में पधार्या है, सो म्हूँ वणां रा दरशण करवा ने जावती ही, पण हे परोपकारी वीर! आप कुण हो आप अवार म्हारी वार पे नी पधारता तो आज म्हारे वणां धर्म रा रखवाळा, राम लक्ष्मण रा दरशणां री मन-री-मन में ही रे' जाती। जदी लक्ष्मणजी हुकम कीधो वी भगवान राम अठे नजीक होज है, ने, म्हूँ वणां रो छोटो भाई लक्ष्मण हूं। थारी वार शुण अठी आयो, ने थारो जीव बंच गियो, सो म्हारी मे'नत

सुफळ व्हीं' पण धूँकूण है, ने थने अयोध्यानाथ रा दरशणां-
री अभिलाषा क्यूँ लागी। जदी वणी कियो म्हूँ भीलण हूँ,
अठे मतंग नाम रा महात्मा रे'वा हा। वणां री धूणी अठा
शूँ नजीक हीज है। वणा महात्माने तो शरीर छोड़्याँ नराई
दिन व्हे' गिया। पण वणांरी धूणी आज भी विना लकड़्यां
रे सुलग री' है। म्हें बाळक पणा शूँ ही वणी आश्रम री
सेवा करूँ हूं, ने योगाभ्यास करूं हूं। अठे म्हने खबर लागी,
के राम रे ने रागशाँ रे विरोध व्हे' गियो है, ने रावण सीता-
जी ने हर लीधा है, सो म्हूं या अरज करवा ने हीज आवती
ही के ई रो आप ने कई शोच नी करणो चावे। परन्तु झट
ही सुग्रीव शूँ मित्रता कर लेणी चावे। क्यूँ के अठे वानराँ रो
राजा वाली है। वणी रे ने रावण रे मित्रता है, सो वो वाली
तो आपरी कानी नी व्हे' शकेगा, ने वणी वाली रो छोटो
भाई सुग्रीव है। वणी रे ने वालीरे नी वणे है, वो सुग्रीव अठे
नजीक हीज अणी रिष्यमूक नाम रा मंगरा पे रे'वे है, ने
दुःखी है, सो वो आप शूं मित्रता कर लेगा, ने सीताजी
ने हेरवा में आपरी पूरी मदद करेगा। म्हें शुणी
के सीताजी रा केईक गे'णा भी गेला में पड़
गिया, सो भी वणी अवेर राख्या है। यूं दोही वातां करता
करता श्रीराम भगवान नखे आया, ने लक्ष्मणजी सब वात
अरज कीधी, ने शबरी भीलण हाथ जोड़ अरज कीधी, के या

मतंग नामरा महात्मा री जगा'-है। आज अठे ही विराज जे, ने अठे म्हं भी रे'वूं हूँ, सो म्हारी भी झूँपड़ी पवित्र व्हे' जायगा।

जदी तो दोही भाई वठे पधार्या। वठे चणी नराई दिनां शूँ राम भगवान रे वनमें पधारवा री शुण राखी ही, सो आछा आछा बोर अणीज वासते भेळा कर राख्या हा, के अठे पामणा करूँगा ने बोर जीमावूं गा, सो आज वीं रो मनोरथ पूरो व्हियो। राम भगवान ने प्रेम रा वी बोर घणा सवाद लागा, सो घड़ी घड़ी सराय सराय ने मंगाय मंगाय ने खूब अरोग्या, ने ई शूँ वा भीलण घणी राजी व्ही'। पछे परभाते राम भगवान वठा शूं पधारवा लागा। जदी घणी भीलण अरज कीधी, के म्हारी अवस्था तो व्हे'गी है पण योग शूँ शरीर ने अणीज वासते राख मेल्यो हो, के अठे राम भगवान पधारें गा, सो दरशण कर पछे शरीर छोड़ देवूंगा। अबे म्हूं अणी शरीर ने योग शू छोड़ूं हूं। यूं कें' ने वा प्राण छोड भगवान रा रूप में मिलगी' ने दोई भाई वणी री वड़ाई करता करता आगे पधारया 'धन्य है, अणी भीलण ने जो अतरो योग साध ने परमात्मा रा रूपने पायगी।

यूं श्री मानवमित्ररामचरित्र रो वनचरित्र समाप्त व्हियो।

अथ
किष्किंधा चरित्र
प्रारम्भः

अबे तो दोही भाई सीताजी ने हेरता हेरता रिष्यमूक नामरा मंगरा कानी पधारवा लागा । वणी मंगरा रे मथारे सुग्रीव नामरो एक बांदरो बेठो बेठो देख रियो हो । अणी, अणां दोही भायां ने आवता देख हनुमानजी ने बुलाय, ने कियो देखो तो हनुमानजी ई दो जणा अठीने कुण आयरिया है । अणांरे नखे तो शसतर भी है, ने जाणे कई हेरता व्हे' ज्यूं दीखे है । व्हे'नेव्हे'तो ई बाली रा मोकल्या थका है, ने आपां ने हीज हेरता व्हे'गा । आप ही देखो नी कश्याक धार धार ने ई आपांणा मंगरा कानी देख रिया है । जदी तो हनुमानजी भी सुग्रीव री आँगळी री सूध पे देखने के'वा लागा 'सांची है । ई कोई अश्या वश्या मनख तो नी दीखे है । अणी रागशां रा घोर उजाड़ वन में दो मनखांरो यूं निडर फिरणों शौ'ल बात नी है । ई कणी ने कशी म्होटा कामरे

वासते आया व्हे'गा, ने अणांरी चालढाल शूंही दीखे, के ई से'जरा मनख नी है। यूँ शुण सुग्रीव क्रियो देखां आप अणांरी खबर पाड़ो, के ई कूण है ? ने अठी रा उठी की'ने हेर रिया है। जदी तो हनुमानजी बामण रो भेप कर दोई भायां नखे जाय ने पूछी, के आप दोही वड़ा राजा सरीखा दीखो हो। पण यो साधुरो भेप आप क्यूं कीधो है ? आप कई शोध रिया हो। जदी दो ही भायां क्रियो, के म्हें अयोध्या रा राजा दशरथजी रा बेटा हां। राम ने लक्ष्मण म्हांरो नाम है, ने हे वरामण देवता, आप अठे कूंकर पधारचा, ने अबे कठी पधारो गा। या शुणतां ही हनुमानजी दोई भायां रे पगां लागा, ने वरामण रो भेप पाछो उतार ने क्रियो के म्हारा आज आछा भाग है, जो धरम रा राखवा वाळा रा घर बैठां हीं दरशण व्हे'गिया। म्हारो नाम हनुमान है, म्हारी माता रो नाम अंजनी ओर पितारो नाम केशरी है। पवन रा वरदान शूँ म्हारो जन्म व्हियो। जणी शूं म्हने पवनपुत्र भा कें'वे है। अठे किष्किधा नाम री नगरी है। चठे वांदरां रो राजा वाली राज करे है। वणी वाली रे, ने रागशां रा राजा रावण रे पूरो मेळ है। अणी वाली, अणीरा छोटा भाई सुग्रीव ने मारकूट ने घरमे शू निकाळ ने सुग्रीव गरीब री लुगाई ने भी खोश लीधी, ने फेर मारवारे वास्ते हेरतो फिरे है। पण अणी रिष्यमूक नामरा मगरा पे, चो

आय-नी शके है। एक साधु वालीने फटकार दे' दीधो, सो अणी मगरा पे आवे तो वाली रो जीव निकळ जावे। अणी शूं सुग्रीव अणी मगरा पे जीव छुपायने बैठो है। दूज्यूं तो सुग्रीव ने अणी पापी कदकोई मारयो व्हे' तो। या वात शुण रामभगवान ने वाली पे रीश आई, ने सुग्रीव पे दया आई, ने हनुमानजी ने हुकम कीधो, वो सुग्रीव कठे है, वणीरा दुःख ने म्हं मिटावुंगा। ई धनुप ने तीर अणीज वासते रजपूत उंचावे है, के आछारी रखवाळी ने खोटा ने खोटाई रो दंड दे'शके। आज म्हने सीतारा चोर ने हेरतां हेरतां एक फेर वश्यो हीज दूजो चोर लाध गियो। ज्यूं एक ना'र री भाळ व्हे' ने दो ना'र निकळवाशूं शिकारी रो मन राजी व्हे' यूं ही आज म्हारो मन राजी व्हियो है। कजाणा कतरा पाप अणी धरती पे व्हे' रिया व्हे'गा। यूं केतां केतां भगवान रे लाल कमळ री पांखड़ी जशी आंखां में फोरो फोरो जळ आवा लागो। जाणे हिया मायली दया ने रीश आंख में व्हे' ने सामी दीखवा लागी। जदी तो हनुमानजी दोई भायां ने सुग्रीव नखे, ले'गया, ने सुग्रीव ने सब वाता शूं वाकब करने कियो, के जाणे आपांरो पुरबरो पुन्न हीज आज-जाग्यो है। जदीज तो ई अयोध्यानाथ अणांरा छोटा भाई से'थी आपांणे अठे पधारया है। अणां रे हाथमें यो धनुप वाण नी है, पण जाणे आछा मनखां रा दुखरा कांटा काढ़वारो'

सुयो, ने चोप्यो है । अणांरी चाकरी करवा शूँ आपणों भी जनम सुधर जावे गा । जदी तो सुग्रीव दौडने भगवान रे पगामें धोक देवा लागो, ने भगवान वणीने छाती रे लगाय ने मिल्या । ने हुकम कीधो के हे मित्र ! आपरो दु:ख म्हारी भती नी खमाय है । वाली आपरो नी, पण म्हारो वैरी है । जो अनीती पे चाले वो म्हारो वैरी है, ने जो नीती पे चाले वो म्हारो शेण है । जदी सुग्रीवजी भी या ही अरज कीधी, के आज शूँ ही म्हूं भी यूँ हीज गरवूंगा । अबे तो दोयां रे ही घणो मित्रता व्हे'गी' । वणी वगत लक्ष्मणजी सुग्रीवजी ने पूछी, के अठीने कठीने ही सीता मातारा भी चाशेड लागा है ? । जदी सुग्रीव जी कियो के हां अठीने आकाश मे एक पतळा कंठरी लुगाई रो रोवणो म्हां शुण्यो हो । वींरे समचे म्हां ऊँचो देख्यो, तो तारो टूटे ने रींगटी री रींगटी पडे जशी रींगटी म्हां ने आकाश में दीखी । वो म्हारी जाणमें वेराण हो'ने घणो वेग शूँ जाय रियो हो ।' वोतो देखतां देखतां मेंही अलोप व्हे'गियो । पण वणी वगत आकाश में शूँ या हसताडारो गांठडो म्हारे मूंडा आगे आय पडी । जणीशूँ म्हांने आशरो वंच्यो, के व्हे'ने व्हे' तो या वेराण में शूँ हीज पडी है । यूं के'ने भट्ट गुफा में शूँ लायने या गांठडी रामभगवान रे नजर कर दीधी । रामभगवान लक्ष्मणजी ने हुकम कीधो, के देखां देखजे भाई ई में कई है ।

जदी तो लक्ष्मणजी, वणी हसताड़ा पे अनुसूयाजी रो नाम बांचने अरज कीधी, यो तो अनुसूया माता भाभी मां ने वगस्यो वो हसताड़ो दीखे है । यूं के'ने वणी गांटने खोली तो माय नूं दो पोछां दो रमझोळ ने दो कनफूल निकळ्या । भगवान हुकम कीधो देखां, लक्ष्मण अणां गेणाने धारने ओळख ई कणीरा है । जदी लक्ष्मणजी अरज कीधी, अणां पोंछारी ने कनफूलां री तो निश्चय अरज नी कर शकूं । पण ई रमझोळ तो भाभी मां रे धारणरा ही ज है । यूं केतां केतां लक्ष्मणजी रे आंखां में शूं मोती रा मोती आंशू ढळकवा लाग गिया, ने वणां रमझोळां रे धरती रे माथो लगाय ने धोक दीधी, ने अरज कीधी प्रभाते सदा ही भाभी मां रे धोक देतो, जदी अणां रमझोळांरा दरशण वे'ता हा । रामभगवान वणां गेणां ने छातीरे लगाय लीधा ने रोकतां रोकतां भी वणां वड़ी वड़ी आंखां में शूँ वड़ी वड़ी बुंदां टपकवा लाग गी' । पछे वणीज हसताड़ा शूँ आंखां पूंछ, हुकम कीधो, यो वेवाण कणी आड़ी गियो हो । जदी सुग्रीव कियो अठाशूँ तो लंकाउ कानी गियो हो । आगेरी खबर नी । भगवान हुकम कीधो, अणीरी खबर कूंकर पड़े । सुग्रीव अरज कीधी, अणीरी आप कई चिंता नी करावे । वांदरा पाणी में शूँ भी खोज लगाय शके है । फेर-अखेला ई अंजनी कुँवर हनुमानजी ही तीन ही लोक ने हेर शके है । भगवान हुकम कीधो, पें'ली आपरा ठाम

वैरी ने छोड़ म्हारा वैरी ने हेरणो म्हने नीं चावे। क्यूं के आपरो वैरी है वो म्हारो ही ज वैरी है। जदी आपरो दुख आजही मिट शके, तो वणी में देर क्युं करणी। यूं के'ने धनुष बाण ले'ने सुग्रीव लक्ष्मण हनुमानजी ने साथे ले'ने सब बाली री नगरी कानी पधार्‌या। वणी वगत शूर्पणखा भी बाली नखे आय गी ही। अणी ने रावण सिखाय ने मेली ही या बालीरे राली डोरा री वे'न ही ने रावण तो बाली रे धर्म रो भाई हो। अणी शूर्पणखा आपने बालीरे मूंडा आगे रोय ने कियो, के अयोध्यारा राजारा वेटा पंचवटी में म्हारा गेले चालतां नाक कान काट न्हाख्या। जदी रावण वणीरो वैर लेवा रे वास्ते वणांरी लुगाई ने अठे पकड़ लायो। अबे वी हेरता हेरता अठीने आवे, जदी आप मोको देख धोखो दे'ने दोयां ने ही मार न्हाखजो। या आप रे धर्मरे भाई राजा रावण के'वाई है, ने म्हूं भी आप नखाशूं यो ही ज कापड़ो मांगवाने आई हूँ। जदी वाली कियो वे'न ! थां दोई बे'न भायां रे वास्ते म्हूँ प्राण छोड़वाने भी त्यार हूँ। पण मनुजी रा वंशरा राजा कणी लुगाई रा गेले चालतां' ही नाक कान काट न्हाखे, या तो म्हारे आसे नी आवे। वणारा बड़ावा तो धरम री मरजाद् बांधी, ने वणांरा वंशरा हीज भलां वीं ने कूंकर लोपे। जदी तो शूर्पणखा चरड़ ने बोली, वी धरमवाळा व्हे'ता तो सगो बाप देश निकाळो क्यूं दे तो, ने माधू व्हे'ने शरधूणी क्यूं

राखता । हाथीरा दांत देखावा रा और व्हे' है, ने खावारा और व्हे' है । वणां सरीखा पापी कूण व्हे'गा । धरम रो नाम ले'ने मनखां ने गेले चालतां ही डंडे । बात बात पे यूं ही अधर्म व्हे' यूं ही अधर्म व्हे, यूं करने सबांने दुखी कर राख्या है । धर्मवाळा तो आपरा धर्म रा भाई राजा रावण है, सो वणी बात री रोंक टोंक नीं राखे । सामा धर्मरा नाम शूं सगत दुख देखे वणांने भी मारे कूटे, ने ज्यूं व्हे-ज्यूं वणारो वो खोडीलो सुभाव छोडाय देवे । देखो नी मलां म्हें कश्या म्हारा हाथां शूं ही तो ई म्हारा हीज तो नाक कान नी काट्या व्हे'गा ? जदी वाली कियो के'न शूर्पणखा, थें कियो जो म्हूँ करवाने त्यार हूँ । पण धर्म ने पाप तो म्हारी भतीं नी के'णी आवेगा और नी जो कीने ही धोखो देवूं गा । पण अबे थूं नक्की जाण के अणी संसार में के क तो राम हीज रे'वे गा, ने केक वाली हीज रे'वेगा । जदी तो शूर्पणखा घणी हरखी ने कियो के आप वळ करवा में कमर राखो मती । अतराक में सुग्रीव ने साथ लेंने राम भगवान भी वाली री नगरी नखे पधार गिया, ने वाली शूं लड़वारी सुग्रीव ने सिखाय ने आप एक जाड़ा रूंखड़ा आळखे छुपने विराज गिया । वणी वगत सुग्रीव घणां जोरशूं वाली ने धाकल ने हेलो पाड्यो । सुग्रीव री ललकार सुणतां ही वाली भी दौड़ ने सुग्रीव शूं आय भिड़्यो। जाणे आज घणा दिना शुं दोई भायां री छाती शूं

छाती मिली । जाणे दो लोहरा लाल तना पीलाय रिहा है। दोयां रे ही घणा दिनां रा वैर री वामदी आज सांची भडकगी' । जो जाणे आखा ही डील में शूं फूट ने निकळवा लागगी है। आखां शूं जाणे एक एक ने बाळ न्हाखेगा । दांता ने जोर जोर शूं पीस ने जाणे आखा जगत ने भरड खावेगा। मुंक्याशूं जाणे वखेर न्हाखेगा । गर्जने हाक शूं जाणे उडाय देगा। दोही भिडे है, उछळे है, दवे है, डावा जीमणा मल्क जाय है, तरे' तरे' रा दाव-पेच कर ने एक एक रो जीव लेवा री घात में लाग रिया है। राम लक्ष्मण दोही भाई वाली सुग्रीव दोही भायां री लड़ाई रूंखडारी आड में शू देख रिया है। सांची वात है, 'भाई जश्या शेण नी ने भाई सरीखो दुशमन भी नी। सुग्रीव तो राम भगवान रे भरोसे वाली जश्या म्होटा वैरी शूं लड रियो है, ने वाली ने आपणा वळ रो घमंड है। वाली सुग्रीव री आज पाप काटवाने हीज दाव खेल रियो है। यूं लडतां लडतां सुग्रीव घणो थाक गियो। पण रणरा मद में वणी ने सुध नी री'। राम भगवान जाण गिया के सुग्रीव रो वळ अबे घटवा लाग गियो है। अबे यो भाग ने म्हारे शरणे आय जावे, तो पछे म्हारे ने वाली रे युद्ध व्हेवा लाग जावे। क्यूं के वाली तो इंने छोडेगा नी, ने म्हूं ज्यो शरणे आया ने मारवा दूंगा नी। यूं भगवान विचार ही रिया हा अतराक में तो वाली कन फेडी री थाप सुग्रीव रे असी दीधी

के वणीरे झरणाट छाय गी, ने फेर जतराक में गाढ़ी मुक्की बांध ने वाली सुग्रीव रे छाती में देवे देवे जतरे-क भट राम भगवान इन्द्रबाण री वाली री छाती में दे' पाड़ी। जो भगवान रे बाण वावामें अंछेकई देर व्हे' जाय, तो सुग्रीव री हंसो उड़ जाव तो। पड़वारी तो सुग्रीव रे आई ही पण बाण लागता ही मंगरा रा मथारा री नांई वाली धड़ाम देती रो धरती पे पड़ गियो। अतराक में राम भगवान धनुष खेंच, वालीरे सामां आय ऊभा व्हिया। वाली भी शूरापण शूँ पाछो ऊभो तो व्हे'गियो, पण फेर गरखेटो खाय ने पड़ गियो। फेर ऊभो व्हेवा री कीधी पण अबरके बेठो व्हे' ने हीज पड़ गियो। ज्यूं दारूरो पीधो ऊभो व्हेवे ने पड़े है। यूंही वाली बेठो व्हेवे ने पड़वा लागो। पण रामरो वो बाण वणी ने धरती री कानीज धकेल ग्यो हो ने लोही री छरर्यां छूट री ही वणी वगत राम भगवान घणां उदास व्हे'ने वाली री या दशा देख रिया हा सब वांदरा कर्यांटचा करवा लाग गिया। जदी वाली भगवान कानी देख ने के'वा लागो, आपने यूं लड़णो कठे गुरू शिखायो। म्हारो तो लड़ती वगत मामी छाती बाण शूं मार ने परलोक सुधार दीधो। पण अणीशूं आपने संसार कईं के'वेगा के एक वांदरा रे सामांभी आपने आपरी भती नी लड़णी आयो। रावण संसार ने जीतवा वाळो है, ने वणी ने सहस्त्रबाहू राजा जीत लीधो, ने वणी सहस्र बाहू ने पाशरामजी

जीत गिया। वणां परशरामजीने जीतवा वाला राम दशरथरा कुंवरभी वाली-रे सामा तो नी आय शक्या। यूं के'ने धावण्यो बाळक हंसतो हंसतो मां रा खोळा में सूय जावे, यूंही सूय गियो, ने पाछो जागो ही नी। अबे तो थोडीक देरमें ई समाचार आखी किष्किन्धा नगरी में फैल गिया, ने वांदरा ने वांदरयां हजारां वठे आय भेळा व्हे'गिया। वालीरा गुण याद कर कर ने सब रोवा लागा। वाली री राणी तारा ने वणी रो बेटो अंगद भी वठे दोडद्या आया, ने बाली ने देख धरती पे पछाड़ खायने पड़ गिया। वणी वगत हनुमानजी जामवंतजी सबां ने समझाया। सुग्रीव भी दुशमणी भूल ने नाना बाळक ज्यूं रोवा लाग गियो। पछे सारा ही जणा भेळा व्हे'ने वाली री क्रिया काप्टा कीधी, ने राम भगवान रा हुकम शूं सुग्रीव ने लछमणजी राजगादी बैठायो। ने सुग्रीव रे खोळ्यां बाली री बेटा अंगद ने बैठायो. ने वींने पाटवी कुँवर बणायो। वणां-दिनां चौमासो आय गियो हो, सो वठे ही प्रवर्षण नाम रा मंगरा पे राम भगवान ने लक्ष्मणजी विराज गिया। क्युंके चौमासा में वांदरा रे फिरवा री अवकाई रे'वे। यूं सुग्रीव अर्ज कराई ही। यूं भगवान चार ही महीना चौमासा रा वठे पूरा कीधा ने चौमासो उतरयां, दोही भाई आगे फेर सीता जी ने हेरवा पधारवा लागा। जदी हनुमानजी सुग्रीव ने कियो के यूं आप ने गुणचोर व्हे'ने वांदरा रा वंश में गाळ नी

लगावणी चावे । एक तो राम भगवान ने देखणा चावे, के आपरे वास्ते कड्यो काम कीधो, ने एक अबे भी आप वणां री चाकरी नी करो हो । जदी तो सुग्रीव कियो म्हूँ ने म्हारो सब राज, राम रे वास्ते प्राण देवा ने त्यार हां । आपां ने तन मन धन शूं राम री शेवा करणी चावे । यूं कें' ने सुग्रीव देश देशावर रा तरे' तरे' रा सब वांदरां री फौजां भेळी कीधी, ने वणा में रींछा रा राजा जामवंतजी भी हा सो वणां रीछडांरी फौजां एकठी कर' ने सब राम भगवान रे आय हाजर व्हिया । रावण री खोटाई शूं सब ही वणी पे खारा हा, ने राम भगवान शूं सारा ही राजी हा। जी शूं सब ही राम भगवानरी आडी आय हाजर व्हिया। जाये आखी धरती पे वांदरा ने रींछडा ही ज छाय गिया हा । सब उछळउछळ ने राम भगवान रा दर्शण कर कर ने राजी व्हें रिया हा । अबे सुग्रीवजी राम भगवान ने अर्ज कर चार ही कानी ठावा ठावा वांदरा ने वांरी फौजां ने सीताजी ने हेरवा मोकल्या । लंका री कानी सब में शरनामो वांदरा री फौज मेजी। वणी में हनुमानजी, कुँवर अंगदजी रीछांरा राजा जांमवानजी, द्विविद, मेंद, नल, नील, ई नामी नामी हा । अणांरे साथे ओर भी नरी फोज ही । भगवान हनुमानजी ने हाथ में धारण री वींटी बगसी, ने हुकम कीधो, सीता ने या म्हारी सैदाणी दे'दीजो, ने ई समाचार के'दीजो, ने या भी की' जो, के खबर नी लागवा शूं हीज अतरा दिन लागा है ।

हनुमानजी घोक दे'ने या वींटी ले'ने सबां से'ती लंकाऊ कानी सीताजी ने हेरवा पधार गिया । और कानी रा वांदरा तो एक महीना में हेर ने पाछा आय गिया । सीता मातारा कठे ही खावोड नी लागा । अबे तो सारा ही लंकाउ कानी रा वांदरा री वाट देखवा लागा ने अठी ने ही ज भे'म भी हो । पण अठी ने तो वन में हेरतां हेरतां नराई दिन व्हे'गिया ने एक कांकड में तो वांदरा अश्या भूल गिया के नराई दिन वठे ही वीत गिया । यूं फिरतां फिरतां घणा दिना में समुद्र नखे पूगा । वठे एक संवळो रे'तो हो । अणी रो नाम संपाती हो । यो जटायु गीध-जो रावण शूं लड ने काम आयो, वणांरो वडो भाई हो । अणी कियो के सौ जोजन री छेटी अठा शूं लंकापुरी है । वच्चे यो म्होटो सागर है । जो ईं रे पार जाय-ने पाछो आय शके, वो ही पाछो राम भगवान नखे जाय, सब समाचार अर्ज कर शकेगा । अबे सागर नखे बैठा सब विचार बांधवा लागा, के अबे आपां ने कईं करणो चावे ।

यूं श्रीमानवमित्र रामचरित्र रो किष्किन्धा चरित्र समाप्त व्हियो ।

अथ सुन्दर चरित्र

प्रारम्भः

अबे तो सब बांदरा समुद्र रे कांठे बैठा बैठा के'वा लागा, के अणी समुद्र शूं तो जीव घबरावे है। आपां में कूण अड्यो है, जो ईंरे पेले पार जाय ने राखशां री पुरी में फिरने सीताजी री खबर लाय ने पाछो जीवतो जागतो आय जावे? यो काम थोड़ी समझ, ने थोड़ा बळ रो नीं है। यूं के'ने सघळा रींछां रा राजा जामवंतजी रे कानी देखवा लागा। जामवंतजी दाना हा, ने सघळा रा बळने और बुद्धिने भी जाणता हा, ने समझणा भी हा। वणां कियो, 'आपांमें वाली रा कुँवर जस्यो कोई बळने बुद्धिमान नी है। पण एक अंजनी रो कुँवर दीखे है यो चावे तो दश दाण अठीरो वठी लंकामें जाय आवे। यो चावे तो सब राखशां ने लंका में शूं उजाड़ ने जमलोक में बसाय देवे। एक लंका कई आखा संसार ने यो उजाड़ भी देवे, ने बसाय भी शके है। म्हूँ बाळक पणांशूं ही अणीने जाणूं हूँ, ने म्हूँ या भी जाणतो हो, के कदी-न कदी काम पड़ेगा तो बांदरा रो नाम यो उजळो करेगा।'

जदी अंगदजी कियो के 'वीर भाई हनुमान, म्हें सघळा

घराय रिया हाँ, ने मरजादा पुरषोत्तम राम रो काम है, ने
वी शिरोमणि सीता रो काम है और जति वीर लछमण रो
म है। आपां रा राजा सुगरीव रो काम है। धरमात्मा साधु
ह्मणां रो काम है। थांरा मित्र अंगद रो काम है। चोंद
उज पवन आदि सघळा देवता रो काम है, ने दाना जामवंत
।, सूरज वंश रो काम है, ने वांदरा रा वंश रो काम है।
थांरा जनम रो पण यो हीज काम है, के खोटाने दंड देवे, ने
भलारी रखवाळी करे। अणी शूं वत्तो धरम रो थारे दूजो
कई काम है। अवे थूं बैठो बैठो कई देखे है ? कई थारी
कानी रो काम तीन ही लोक में दूजो कोई करवा वाळो
है, जणीरी थूं वाट न्हाळ रियो है ?' या सुणतां
सुणतां हनुमानजी रो डील फूलवा लागो, ने चे'रो रातो
रातो चमकवा लागो, मै म्होटी पूंछ सांपरी नांई पलटा खावा
लागी। रूंगच्या ऊंचा ऊंचा फूलवा लागा, ने एक हाक करने
उछळ मगरा री चोटी पे जाय विराज्या, ने वठाशूं कियो,
ओ कुंवरजी ! ओ जामवंतजी ! हे सारा ही वांदरां ! थें
क्यूं घवराय रिया हो। कई रावण री दंटी मरोड़ावो हो ? के
लंकाने समुद्र में डुबोवारी मुरजी है ? के राखशां रो हीज खोज
मिटावणो चावो हो ? वोलो वोलो म्हां शूं कई काम चावो
हो ? भलांरी रखवाळी करवा रो, ने खोटांने दंड देवारो तो
म्हारो ने म्हारा धणी रो सुभाव हीज है। जदी जामवंतजी

कृपा आपन राम भगवान वींटी बगशी ही, के सीता ने दीजो, ने वठारो खबर पाछी झट ही लावजो सो अबार तो थणयां री आज्ञा परमाणे यो हीज काम करणो चावे, फेर ज्या ज्या आज्ञा व्हे'गा वा वा करता रे'वां गा।' जदी हनुमानजी 'घणो आछो,' यूं के'ता ही एकही फलांग में समुद्र रे पेले पार जाय पूगा, ने वठे मांफ पड़ना दे'ने, लंका नामरा गढ़ में छानेरा-छाने घुश गिया। आखी रात लंकामें सघळा घरां ने और मे'लां ने हेर लीधा। चानणी रात ही, रागशां री सघळी वाताशूं एकही रातमें जाणकार व्हे'गिया। फौज ने असतर शस्तर सघळांरो अठोठो बांध लीधो। फेर विचारी सीता माता कठे है? कई रागशां वणी पतिवरता ने कठे ही ओर जगा' घुशाय दीधी, के मारने खाय गिया, के रामरा वियोग में वणांरो शरीर हीज छूट-गियो, के कई व्हियो? । लंकाने तीन तीन दाण आखी समाळ लीधी। पण पत्तो नी लागो। अबे कई करणो चावे। यूं विचारता विचारता एक वाडी नजर आई। जीशूं विचारी, के देखां अठे ही व्हे'तो इने भी हेरलॉं। यूं विचार वाड़ी में हेरवा लागा। वठे आशापालव रा रूंखड़ा घणां हा। जींशूं वणीने अशोक वाटिका अर्थात आशापालव री वाड़ी के'ता हा। वणी अशोक वाटिका में आगे जायने देखे तो रागशण्या नागी तळवारॉं ले' ने पे'रो दे'रे'ही। हनुमानजी विचारी अठे यूं कणीरो पे'रो दे'रो'है। फेर आगे जायने देखे तो

नरो रागशण्यां रळक रळक जीभां काढ़ री'है, ने एक नकटी
मूंची रागशणी खाँधा पे नागो तळवार लीधाँ, अठी उठी टे'ल
री' है। वा की ने ही सुवा नी देवे। हनुमानजी विचारी यातो
किष्किंधा में आयां जायां करती ही। वा हीज शूरपणखा
दीखे है। ईरा नाक कान नो व्हेवा शूं अबे श्रोळखणी ही नी
आई, व्हे-नीव्हे' सीतामाता अठै हीज व्हे'गा। ईने रावण
वणांरी रखवाळी पे राली व्हे'गा। अतराक में तो वा नकटी
अजामुखी नामरी रागशणी नखे बैठ ने के'वा लागी, कई करां,
अज्जु! श्रणी मनखणी री तो भाटा वचे ही हियो गाढ़ो है।
मरवा ने त्यार है, पण आपाँरी तो वानाँ ही नी शुणे। बाई,
अशी भी लुगायाँ व्हे'है। यातो म्हूँ नी जाणती ही। देख,
अतरी म्हारे भाई रे रावळा में राण्यां है, पण अशी
पण थाँ कोई देखी है। आखो' दिन पतिव्रत पतिव्रत
करयां करे। बाई, पतिव्रत कजाणा कई व्हे'है। एक तो मेघा री
वऊ सुलोचना ने एक विभीषण री वऊ शरमा ने त्रिजटा, ई
ईरी वाताँ शुण शुण ने के'वे के 'धन है, सीता थारा माता
पिता ने धन है।' यूं शुण शुण ने या वत्ती वत्ती फूँकरयां
चढ़े है। अबे तो अणां रॉडों ने रोकी है। तो भी भाई, आखी
आखी रात जागाँ ने आखो आखो दिन अणी रा कानड़ा
खावाँ, पण अणीरे तो कई गनार में ही कोय नी। ईरो तो
सुभाव ही खोड़ीलो है। म्हारो चायो लागे तो अशी रीर

आवे के ईरी पेटी मरोड़, ने लोही पीजाऊँ। जदी अजामुखी बोली वाइ शा, पेटी मरोड़तां तो कई देर लागे, पण मारयां केड़े पछे आपणो कई जोर चालेगा। मरवा शूँ तो या राजी हीज है। आखर में के'क नो आपणो के'णो माने, के'क ईंरा शुळाँरी गोठ तो व्हे'गा हीज। पण दिन दिन दूबळी व्हे'ती जावे है, सो पछे मांस रो अश्यो सवाद नी रे'वे गा। अणी वात शूँ हनुमानजी ने नरी समझ पड़ी ने नखे हीज एक रुँखड़ो हो, वणी ऊपरे अदर शूँ चढ़ने वणीरी डाळीपे व्हे'ने आगेरा रुँखड़ा पे पधारवा लागा, तो आगे जायने कई देखे है, के एक लुगाई शीशम रा रुँखड़ा नीचे वेठी है और वणी री म्होटी म्होटी कमळ री पाँखडी जशी आँख्यां में शूँ मोती रा दाणा-रा-दाणा आँशू ढळक रिया है। डील दूबळो व्हे'रियो है। जाणे कोई तपशी तपश्या कर रियो है। माथ रा केशाँ ने भेळा करने जूडो बाँध राख्यो है। कणी कणी दाण यूं भी बोले है, के 'हे नाथ! हे दयाशागर! ने कणीक दाण हे लाल! लछमण! यूंभी बोल जावे है।' वणी वेळां आँखां में रीश भी दीखवा लाग जावे है। जाणे तळवार हाथमें आय जावे, तो दुरगा भवानी री नांई एकली ही सघळा दुष्टां रा माथा काट न्हाखे। कणी दाण नेतरां में अश्यो शूरापणो दीखे है, के एक रावण कई करोड़ रावण व्हे' जदीभी म्हारो कई नी करशके। एक क्षण में प्राण छोड़ दूंगा।

अतराकमें हनुमानजी सुण्यो, के 'खम्मा घणी खम्मा, अनदाता, लंकानाथ ने घणी खम्मा !' जदी तो हनुमानजी वठी ने देखवा लागा, तो रावण आवतो थको नजर आयो, ने सघळी रागशण्या हाथ जोड़ जोड़ने ऊभी व्हे'गी, ने कतरी ही रागशण्या हलालां ने दीवटां ले'ले' ने आगे आगे चाल री' ही। कणीरे हाथ में छत्तर हो ने कोई चँवर कर री'ही, ने कणीरा हाथ में कूंजो, कणीरा हाथ में झारी, कणी नखे इतरदान, कणी तीरे दारूरी सुसकी, कोइक प्याला ने कोई बोतलां लीधां लीधां आगे पाछे ने डावे जीमणे चार ही कानी खम्मा, घणी खम्मा, करती थकी चाल री'ही। जदीतो हनुमानजी रूँखड़ा रा पाना में छुपने देखवा लागा, ने सीता माता तो रावण ने आवतो देख पे'ली तो थोड़ाक घबराया। पण पछे निरभे व्हे'ने विराज गिया। ज्यूं खरगोश्या ने आवतो देख ना'रड़ी बेठे है यूं विराज गिया। सीतामाता ने अनुसूया जी प्राण छोड़वारी रीत जोगरी क्रिया शूं बताय दीधी ही, जीं शूं निरभे रे'ता हा। अतराक में तो नीच रावण सीतामाता रे थोड़ी-क छेटी ऊभो रे' ने नीची ऊँची नरी वातां की'। पण सीतामाता वणीं ने अश्यो धुधकारयो के सघळी राग-शण्यां ने राण्यां देखती रे'गी। जणी रावण रा नाम शूं इन्दर आदिक देवता ने भी ठंड चढ़ती ही, वश्या ने एक मंडयाव कुत्ता ने ज्यूं धुधकारे यूँ हीज धुधकारवा लागा। पण

खोटा स्वार्थी तो अशी बात शुणने भी आपने बड़ा जाणे है। पण बड़ारे मूँडा आगे रे'वा शूं अश्या खोटा ने खबर पड़े के बड़ापणो तो आछा काम रा करवा शूं वाजे है। बड़ा मनखां रे तीरे रे'वा शूं बड़ापणरी जाण पड़े है। सीता रा धरम रे आगे रावण रा मूँडा फीका पड़ गिया। फेर सीतामाता हुकम कीधो 'हे रावण! थूं अश्यो हीज नी जनम्यो है। थारा दादा तो पुलस्त्य ऋषि हा ने कुबेर जश्या थारे भाई है, ने विश्रवा जश्या थारे पिता है। थूं भगवान्, पारवती-वल्लभ, जो काम रा वैरी शिव है, वणांरा तिलक छापा करे है, ने रुद्राक्ष भी धारण करे है। थें तपश्या करने राज पायो है। थने यूं पराई लुगायां ने पकड़ लावणो, ने वणांरो धरम विगाड़वा रो मन करणो शोभा नी देवे है। देख अतरी लुगायां रो थें धरम भ्रष्ट कर दीधो। अणांरो स्त्री जनम ही विगड़ गियो। थने विचारणी चावे, के अवार थारी मन्दोदरी ने अथवा थारी बे'न बेटी ने कोई यूं के'वे, तो थने कशीक लागे। आपणी नांई ही ज दूजांरो विचार कर ने अधरम शूं दरपणो चावे, आखर में मरणो है। जणी यो शरीर दीधो है, वणीरो भी विचार राखणो चावे। अबे थने तो यूं चावे, के म्हने म्हारा पति नखे पाछी पुगाय देवे। सीतामाता रा ई वचन, दुष्ट रावण क्यूं मानवा लागो। यूं नीच मनख आछा धरमात्मा मनखां री बात मान लेवे, तो पछे अधरम कठे रे'वे।

अतरी वात शुणने रावण बोल्यो, हे सीता ! थारा ओछा ने नीचा सघळा वचन म्हूँ खम रियो हूँ, यो म्हारो कई ओछो धरम है ? म्हूँ चाऊं तो अवार थारी कशी दुरदशा कर शकूं। पण म्हें म्हारा धरम ने विचार थारो सत नी बिगाड़्यो शुण सीता ! रावणां रो तो यो हीज धरम है, के पराई चीजने आपणी हीज समझणी । शास्त्र में भी कियो है, के आपणी ज्यूं ही परायारी समझणी भेदभाव नीं राखणो । जदी सीता-माता सोची, के यो नीच समझायां शूं समझे जश्यो नी है । अणी वास्ते कियो के हे रावण ! पूरब रो सूरज भलेही पछम मे ऊगजावे, पण सीता आपरो सत नी छोडे गा । प्राण जाता कर देगा, पण सत नी जावा दे'गा । हे पापी ! थूं जो दशरथ रा बेटारी वऊ, ने जनक री बेटी है, जींरो मन रत्ती भरयो पण नी डगाय शकेगा । हे नीच ! कई कुत्तो न्हे'ने ना'र री वऊ रे सामो देखेगा । अतरी वांता सीताजी री शुण ने रावण ने रीश आई ने वणी तीरे चंद्रहास नामरी तरवार ही, जींने म्यान में शूं काढ़ी । अणीज तरवार शूं पे'ली गीधराज रा पांखडा काट्या हा । वणीज शूं सीताजी ने मारवा ने दोड्यो। पण वणी दांण वणी री राणी धान्यमालिनी रावण ने हाथ लीधो ने के'वा लागी के हे प्राणनाथ ! अशी वना शानरी लुगायां शूं आप सरीखा राजा ने बोलणो ही नी चावे। अशीरे बोलवा में खळ खांच नी व्हियां करे है, यूँ के'ने रावण रो हाथ

खेंचने पाछो लाई। वणी दाण रावण जातां जातां यूँ के'गियो के हे सीता ! आज तो थारो जीव अणी चंचाय दीघो है, पण अबे दो महिना केडे थनें कोई नी वंचाय शकेगा। दो महिना में म्हारो के'णो नी मान्यो तो परभातरा जीमण में थारो हीज मांस रांध्यो जावे गा। यूँ के'तो के'तो परो गियो और वणी दाण पे'रावाळी रागशण्यां भी रावण रे लारां लारां परी गी' ने थोडी आगे जायने हाथ जोड रावण ने के'वा लागी के या मनखणी तो मरवाने त्यार है, पण अणीरी हठ तो या छोडे जशी नी दीखे। आज म्हांने छै. छै. महिना समझावतां समझावतां व्हिया, पण अणीरे तो एकनी एक वात है। म्हां चावां तो भाटा ने पिघाळ देवां, पण अणी लुगाई पे तो म्हांरो जोर नी चाले । जदी रावण कियो म्हारी या चाकरी पूरी गा वणीने घणी रीझ ने मान मिलेगा । अणीमें कशर राखेगा तो माथा कटाय न्हाखूंगा। जदी तो लोभ ने भय शूँ ज्यू भागी फोज पाछी फिरने लडवा लागे है, यूं रांडां रीश में आयने सीताजी नखे आई । वणां में शूँ कतरीक तो मीठी मीठी बोल ने सीताजी ने समझावा लागी । कतरीक डरपावा लागी। कतरीक लोभ देवा लागी, यूं आपरा, आपरा, करतब करवा लागी। वखीवगत वणांरी वातां, शुण शुण ने हनुमानजी ने घणी रीश आय री'ही । हनुमानजी तो वणी दांण रावण रो हाथ धान्यमालिनी नी पकडती तो वणीरा कंठ पकड

लेता। पण वीतो वगत देखने सघळी खमरिया हा। हनुमानजी मापला मन में कें'वा लागा के म्हूं तो जाणतो के अश्या धरम वाळा तो एक राम हीज है, पण अणी सीतामाता री वरोवरी तो राम भगवान् शूँ भी नी व्हे'शकें। म्हूं तो के'तो के अश्या धीरज वाळा राम एक लुगाई रे वास्ते आँखाँ में शूँ जळ कई नाखवा लाग जावे। पण अशी सीता विना तो राम अतरा दिन शरीर राख लीधो, याही गजब कीधो है। हे सीतामाता! थने म्हारा हजार हजार प्रणाम है। यूं के' ने हाथजोड़ फेर हनुमानजी मनोमन धीर शू नमस्कार कीधो, ने वणांरे आँखाँ में शू प्रेम रा आंशू वे'वा लाग गिया, वणी वगत एक रागशणी कियो, थोड़ी देर अणी ने कई मती के'वो। थोड़ो ईने विचार लेवा दो वापड़ी कायी व्हे'गी' है। थोड़ी देर शूँ थें के'वो गा वोही मान लेवे गा। या वात दूसरी सघळी रागशण्यां रे भी आछी आय गी'ने वणीदांण पाछली थोड़ीक रात रे'ही। वी रागशण्यां आखी रात रा जागवा शूँ अठी उठी पड़ने गे'री नींद मे घोरवा लागी। वणी दांण सीतामाता अकेला विराज्या विराज्या खीज रिया हा। म्होटी म्होटी आँखाँ में शूँ मोती रा दाणा रा दाणा आशूँ ढळक रिया हा। वणी कणी दांण परमात्मा जनकजी रो नाम लेता हा। कणी दांण माता सुनयनाजी रो नाम लेता हा। कणी दांण कें'ता हा के कोशल्या शाशूजी आपरी वउ ने आज ई रांडा

मूंडा में आवे ज्यूं बोल री' है । आज अठे म्हारो कोई नी है । ई रांडा म्हने मारन्हाखे ने खाय जाय तो अश्या दुःख शूँ तो छूट जाउं । अबे ई कई मारे, म्हूं होज आप घात करने मरजाउं । पण अनख्वाजी हुकम कीधो हो के आपघाती महा पापी व्हे' है सो आगला भव में तो कजाणा कई पाप कीधा, ज्यो पति री चाकरी शूँ छेटी पड़ी । ने हाल तो म्हारो धर्म जावा रो वगत भी नी आयो है । हाल दो महिना में देखां भगवान् कई देखावे है । शरीर तो जणी वगत चाऊंगा वणी ही वगत छोड़ देऊंगा । अतराक में एक छोटी मी छोरी आई, ने सीतामाता शूँ छाने छाने वातां कर ने पाछी परी गी' । अबे हनुमानजी विचारी या वगत है । अबे सीतामाता ने धरोज वंधावणो चावे । अबे जो सीतामाता ने समाचार नी मिलेगा तो कदी-ने-कदी शरीर छोड़ देवे गा । यूं विचार ने हनुमानजी धीरेक शूँ बोल्या के एक राजा हा वणांरो नाम दशरथ हो । या शुणतां ही सीताजी रो मन शुशराजी रो नाम शुण वठीने गियो ने ध्यान दे'ने शुणवा लागा । जदी फेर हनुमानजी बोल्या वणांरा बड़ा कुंवर ने देश निकालो व्हे' गियो । वणांरा कुँवराणीजी ने रावण पंचवटी में शूँ पकड़ ने ले' गियो । वणां सीताजी ने हेरता हेरता राम लक्ष्मण दोही भाई क्रिष्किन्धा वानरां री नगरी में आय, वठे सुग्रीव ने .राज दे'ने वणी रा वड़ा भाई ने मार न्हाख्यो । क्यूं के वो

वानरां रो राजा पापी हो ने राम रा मित्र सुग्रीव ने मारवा री कीधी ही । अने सुग्रीव चारही कानी सीताजी ने हेरवा वांदरा री फोजां मोकली है, वणां मायलो एक हनुमान नाम रो वांदरो अठे लंका में सीताजी ने हेरवा ने आयो है, ने वणीरे साथे राम भगवान सीताजी नखे हाथ में धारण री या वींटी सैंदाणी रे वास्ते पुगाई है । यूं के'ने धीरप शूँ या वींटी सीतामाता रा खोळा में न्हाख नें हनुमानजी छाना माना छुपने बैठ गिया । सीतामाता खोळा में वींटी पडी देखने वणीं वींटी ने ले'ने विचारवा लागा, या सपना री वात सांची व्हे'जाय ज्यूं या वींटी क्ठा शूँ आय पडी म्हूं तो जाणी के म्हने सपनो आयरियो है । पण यातो चोडे म्हारा नाथ रे हाथ रे धारण री वींटी है । यूं विचार आंखां मसळ ने फेर वींटी ऊपरलो "राम" नाम वांच ने घणा राजी व्हिया, ने 'या लायो कूण है' यूं विचार सीता माता हुकम कीधो, हे-भाई ! वींटी लावा वाळा ने म्हारा नाथ रा समाचार देवा वाळा थूं चौडे क्यूं नी आवे है । यूं सीताजी धीरेक शूं हुकम कीधो। जदी तो हनुमानजी पाना में शूँ रातो मुंडो निकाळ नाना नाना हाथ जोड माथो नमायो । जदी सीता माता ने भे'म आयो, के कई यो रागशां रो छळ तो नी है । यूं विचार हुकम कीधो के हे भाई वांदरा ! थूं अठे कूंकर आयो । म्हूं दु ख में हूं जणी शू म्हने भे'म आवे है । 'दूध रो दाज्यो छाछ ने भी

फ़ंके हैं। अणी शूं म्हारा मे'म ने मिटावा ने पूछूं हूं, सो सब समाचार सांचा सांचा कीजे। जदी हनुमानजी नखे जाय हाथ जोड़ ने अर्ज कीधी हे माता! म्हारो आप मे'म मती करो। म्हूं आपरो बेटो हूं। म्हारो नाम हनुमान है। यूं के'ने सब समाचार राम भगवान रा अर्ज कीधा। जदी तो सगी मां नाना बाळक पे मोह करे ज्यूं ही हनुमानजी पे मोह करने हुकम कीधो, बेटा! अतरा दिना में आज थारा पिता रा थारा मूंडा शूं सांचा समाचार शुण्या है। भाई! म्हने अठे घणो दुःख दे'राख्यो है। थोड़ी देर पे'ली आयो न्हें तो तो थूं भी देखतो के अणां कतरी धामर ताळ लगाय राखी है। जदी हनुमानजी अर्ज कीधी के सांझरो ही म्हूं लंका में हूं। आखी रात लंका में फिरयो हूं। आधी ढळ्तां रो तो अठे हीज बैठो हूं। म्हें अणांरी ने आपरी सब वातां छुप्ये छुप्ये शुणी है। हे माता! अशी वातां आप शूं हीज वण आवे। धन है, आपरा माता पिता ने और आपने, ने म्हारा भी आज धन भाग है, के आपरा दर्शण व्हिया। यूं तो नराही महात्मा रा दर्शण कीधा, पण आप सरीखा महात्मा रा तो म्हारा पे'ली रा घणा पुन्ना शूं आज हीज दर्शण व्हिया है। आपरा तेज शूं या लंका बळने म्हने तो राखोड़ो व्हीं' थकी दीख री' है। अबे तो म्हारे पाछा जावा री देर है। 'राम भगवान पधारया नी ने लंका रो धुंवो व्हियो नी। जदी

सीतामाता हुकम कीधो बेटा ! थारे जरया सपूतां रो यो हीज काम है, के मां बाप रो दुःख मिटावे। जदी हनुमानजी अर्ज कीधी, आपरो दुःख बांदरो कई मिटाय शके, ने आप ने तीन ही लोक में दुःख देवा वाळो है ही कूण। यो तो आप रा मन शूं हीज आप दुःख देखने संसार ने देखाय रिया हो, के यूं म्होटो दुःख पड़े तो भी धर्म ने यूं राखणो चावे, ने रावण रा तो अबे गरया सांस घट रिया है। जदी सीता माता हुकम कीधो बेटा ! थूं अतरो चाल्यो सो थाक गियो व्हे'गा। अबे थारे वास्ते अठे रोकण में म्हूं कई करूं ? थूं भूखो तरश्यो व्हे'गा। जदी हनुमानजी अर्ज कीधो, म्हारी भूख तो अणां रागशां रा प्राण शूं मिटेगा, तरपा तो आपरा दर्शणां री, ही सो पूरी व्ही' पण अवार हुकम व्हे' तो ई पाका पाका नराँई फळ लाग रिया है, सो खाय लूं। जदी सीतामाता हुकम कीधो, अठे अणारा नराई रखवाळा रियां करे है, सो ओशान शूं खावजे। हनुमानजी अर्ज कीधी आपरो बाळक अणां माखा रखवाळा शूं कई डरपे गा। आप अकेला आखी लंका शूं भी नी डरपो हो, जदी म्हूं अतराक शूं कई डरपूं गा। आप कई विचार नी करावे। आप रा तेज प्रताप शूं आप रा बाळक रो तीन ही लोक में कोई भी रुंगच्यो भी बांको नी करशके है। यूं अर्ज कर सीख मांग ने वाड़ी में घुश गिया ने खाधा जी खाधा ने रिया जणा रूंखड़ां री

उंची जड़ तळ डाळा करवा लागा, रूंखां रे टूटवा री हरड़ाटो शुण ने रागशएया चमक ने जागी, ने देखे तो एक वांदरो विकराळ ऊधम मचाय रियो हो । वणांने नजीक आवा दे'ने हनुमानजी फोरीक हाक कर सामा दोड़या, सो वी तो पड़ती दड़ती हाका करती भाग गी' । कतरीक रावण ने जायने पुकारी ने कतरीक वाड़ी रा पेरावाळा ने हाका पाड़वा लागी पण रखवाळा तो आय ने वणां रा प्राण रा रखवाळा ने याद करता करता यो संसार छोड़ने परा गिया । वणीं वेळां ई समाचार शुण रावण रीश शूं रातो लोह व्हे'गियो, ने परभात रा चाकरां ने दौड़ापा सो वी भी हनुमानजी री भुजा रा दर्वाजा में व्हे' ने सूधा परलोक में पूग गिया । अतराक में जंबुमाली नामरो रागश आयो । वणीने भी रावण वठीने दौड़ाय दीधो । अतराक में सात प्रधान रा कुँवर आया नै वणां ने भी रावण मोकल्या, सो पाछा फिरने नी आया । जदी तो फौज रा मुखियां ने भी काळरा मुख में रावण झोंक दीधा । अबे तो रावण रीश करने मंदोदरी रा छोटा बेटा अक्षकुमार ने हनुमानजी शूं लड़वा मेल्यो, ने यो घणो आछो लड़यो । पण पवन रे मूंडा आगे दीवो आखर कतरोक टके । अबे तो रावण जाणी, यो कई वांदरो है, के आखी लंकारो काळ हीज आय गियो है ? अबे तो केक तो म्हूं हीज जावूं, के पाटवी कुँवर मेघनाद ने मेलूं जदी है । पण एकला वादरां शूं लंका रा

ठाकर री लड़णो ने उंछी नीछी व्हे'जाय तो फेर ठीक नी लागे। अणी वास्ते मेघनाद लड़वा ने उमाय हीज रियो हो वीने समझाय ने मेल्यो ने कियो के चांदरा रे भरोशे रे'जावे मती। म्हने यो चांदरा रा भेष में कोई आपणो म्होटो वैरी आयो दीखे है। पण थारे मूंडा आगे तो कोई म्होटो नी है, तो पण रीजे हुंस्यार ! अबे तो मेघनाद हनुमानजी शूं लड़वा आयो। ईने देखने हनुमानजी घणा राजी व्हिया, ने दकाल ने सामा श्रायने बाथक घाथ्यां, ने गुथ्थम गुथ्यां आय गिया। अणी भी तीर तरवार घणा ही वाया ने फौज रा रागशां भी घणा ही रोक्या, पण भूखो सांड धान रा खेत में आय घशे ज्यूं सबां ने तोड़ता बखेरता भगावता ने भटकना थका हनुमान वीर मेघनाद शूं आय ने भिड़या, सो श्राय ही भिड़या। अबे तो दो हाथी मद में आया थका, लड़े ज्यूं लड़वा लागा। जाणे दो मंगरा में जीव आयने लड़रिया व्हे' ज्यूं कुश्ती व्हेवा लागी। या कुश्ती देख, देखवा वाळा सारा ही वाह वाह करवा लाग गिया। आखर में पवन पुत्र रावण रा पुत्र ने वार वार धरती पे दचोकवा लागो, ने वो भी पड़ा री दड़ी री नांई ऊठ ऊठ ने लड़वा लागो। जदी तो हनुमानजी तांण ने एक मुकी री अशी दीधी जीं शूं वो जीव भूल गियो। पड़ग्या थका ने मारणो पाप जाण हनुमानजी वराज गिया। पण जदी वीने सुध आई, जदी वणी पड़ये पड़ये ही यूं विचारी के यो तो चांदरो

नी है। यो तो सती सीता रो क्रोध हीजं वांदरो वणने आयो है। अबे तो आपां तपस्या करने जो बाण पायो है वणी विना काम नी चाले गा। दूज्यूं यो वांदरो आज सघळी लंका ने भगदने परो जावेगा। यूं विचार वणीं झट ऊठतां ही धनुष पे ब्रह्मबाण चढ़ाय अचाणचूक री हनुमानजी रे दे' पाड़ी। जींरी लागवा शूं हनुमानजी ने थोड़ीक जांफ आय गी'। पछे अतराक में रागशां दौड़ने झट हनुमानजी ने नागफांस शूं बांध लीधा, ने यूं के'वा लागा, के 'यो चोर है, लुचो है, पकड़ लीधो है, पकड़ लीधो है' यूं बघ बघ ने हाका करवा लागा, ने शे'र में व्हे'ने रावण रा मे'लां में ले' गिया। जदी रावण हनुमानजी ने देखने प्रहस्त नाम रा कामदार ने यूं कियो, अणी मूरख ने पूछो के-'अठे आय, यूं खोटायां क्यूं कीधी।' जदी कामदार कियो हे वांदरा ! सांच सांच के' देवे गा, तो थूं छूट जावे गा ने भूट बोले गा तो जीव खोय देवे गा। जदी हनुमानजी रावण सामा न्हाळ ने बोल्या के 'आपने भी सांच सुवावे ? यातो घणी आछी बात है। म्हांतो दूज्यूं ही सांच हीज बोला हां। यूं तो भूठ बोलतो व्हे' जींने के'णो चावे ने भूठा ने तो सांच पण भूठ ही दीख्यां करे है। म्हूं राम रा मित्र सुग्रीव रो हलकारो हूं, सीताजी ने शोधवा ने म्हां नराई जणां निकळ्यां हां। वणां में शूं म्हूं अठे आयो, ने अशोक वाड़ी में आप सीताजी ने

मेल्या, वठे म्हें' शीशम रा रूंखडा नीचे देख लीधा है। पण आप राजा व्हे'ने अश्यो चोरी रो काम करो हो या म्हारे आशे नी आई। पण जदी चोडे म्हें जानकीजी रा दरशण अठे कर लीधा, जदी अणी में अवे भे'म ही कई रियो। रूंखडा तोडवा रो ने फळ खावा रो तो म्हारो सुभाव हीज है। अणीमें म्हे कई खोटी कीधी। आप तो बामण हो आपने दारूमांस खावारो ने अश्या अनाचारां रा काम रो डंड नी मिले, तो वांदरा ने फळ खावारो ने रूंखडा तोडवारो कई डंड मिलेगा। म्हने मारवा आया, वणां ने म्हे भी मारया। अणीं में म्हारो कई दोष है। यो काम तो म्हें आप रा दरशण करवा रे वास्ते कीधो हो के अणीं में ही आप रा दरशण व्हे'गिया श्रौर आपने म्हँ या अरज पण करू हूँ के पराई लुगायां ने यूं पकड लावणो आप जश्या वेदपाठी, ने शिव रा भगत वाजवा वाळा पुलस्त्य ऋषि रा पोता ने नी शोभे है। अवे भी म्हारी संमती है, के आप सीता माता ने राम भगवान ने पाछा शूंप दो। दुजूं अतरा दिन रो आपरो जश वांदरा शे'ल में बिगाड नाखे गा। आपने खबर व्हे'गा ही के रामरी कानी म्हूँ अकेलो ही नी हूँ। म्हारे जश्या वराई है, ने अकेला राम ही आप शघळां रे सारुं घणा है। या सीता नी है, पण आप रा अतरा दिनां रो पाप रो घडो फूट्यो है। वणीज घडा में शूं या आप सघळा रागशां री मौत निकळी है, ने आप ईने ले

आया हो।' यूं हनुमानजी रा वचन शुण रावण बोल्यो, 'अणी वांदरा री मौत आय गी' दीखे है। शियाळ री मौत आवे जदीज गाम कानी मूंडो करे है। अठे ईंन ईंरी मौत हीज घेर लाई है, ने वाहीज ईंने यूं बोलाय री है। दूज्यूं वेद रा जाणवा वाळा वड़ा समझणा, रागशां रा राजा ने वांदरो ज्ञान देवा ने त्यार व्हूंकर व्हे' अबे ईंने झट मार नाखो।' जदी तो नराई रागश आवध ले'ने हनुमानजी ने मारवा दोड़्या। पण वणां ने आवता देख हनुमानजी तो हंसवा लाग गिया। अतराक में रावण रो छोटो भाई विभीषण या वात शुण वठे आयने हाथ जोड़ वड़ा भाई शूं करज कीधी, के दूत ने मारवारी रीत नी है, काले आपरा दूतने भी दूजा मार नाखेगा। जदी रावण कियो के अणी री पूंछ म्होटी है, सो अणी री पूंछ ने वाळ नाखो।' जदी तो रागश घर घर शूं फाटाटूटा गोदड़ा गांठड़ा लाय ने पूंछ रे लपेट ने वींपे तेल न्हाख, नगरी में चारहो कानी हनुमानजी ने फेरवा लागा। रागशण्यां करड़का मरोड़ मरोड़ ने हनुमानजी ने गाळ्यां देवा लागी, ने कोई तो लाकड़ी री, ने कोई छाणां री, ने कोई तो ईंटा रा घटकारी देवा लागी। यूं हनुमानजीने सब लंका वासी जठी ले'जावे वठीने ही दुख देवे, ने ढोल वजाय वजाय हाका कर करने के'ता जाय के राजा रावण रो गुनो करे वींरा ई हवाल व्हे' है। रागश हनुमानजी पे घणां खारा

हा । क्यूंके वणां री लागती वळगती रा ने हनुमानजी लड़ाई में मार नाख्या हा । जीशूं वी सघळा जाणता हा के म्हांरे कूटवा शूं ई में पाछो जावा री आमगण नी रे'वे गा । जदी तो पछे फेर ईने धीरे धीरे जगद जगद ने मार न्हाखां गा । यूं सघळा लंकावासी छोटा म्होटा आदमी लुगायां ने बाळक पण हनुमानजी रे देता हा । पण हनुमानजी सघळा री मार खम्यां गिया । वी छूटणो चावता तो शे'ल में ही पाश में शूं निकळ जाता ने तोड़ भी नांखता । क्यूं के वी छोटो म्होटो चावतो जश्यो आपणो डोल कर शकता हा । पण वणां विचारी अणां सघळा रो रण एकठो ही चुकाय दूंगा । अबे तो यूं सघळी नगरी में फेर फेर ने वणां रागशां हनुमानजी री पूँछ में बासदी लगाय दीधी । जदी तो हलाल री नांई छींतरा सळगवा लागा, ने तो हनुमानजी फंदा ने वणीज बासदी शूं बाळ ने निकळ गिया, ने जोर शूं हूक कीधी । जदी तो सघळा बोलवा लागा, के वांदरो 'छूट गियो ! छूट गियो !!' यूं हाका हूक मच गई । अबे तो हनुमानजी दौड़ दौड़ रागशां रा घरां में लाय लगावा लागा ने रागश 'हाय लाय हाय लाय' करता थका अठी रा उठी भागवा लागा । पण जठे जावे चठे ही बासदी लपटां लेती नजर आवा लागी, ने कणीरी डाढ़ी ने कणीरा माथा रा केश ने कींरा मूंडा ने कींरी भांपण्यां बाळ नाखी । आखी लंका में ने रावण रा

मे'लां में हाय हाय मच गी' ने हनुमानजी कूदता जावे ने वासदी सळगावता जावे ने के'ता जावे के राजा राम रा हलकारा रो कसूर करे जींरा ईज हवाल व्हे'है, ने सती सीता रा कसूर करवा वाळा रो तो हाल वाकीज है, या कें'ने लंका वाळ ने समंदर में कूद ने पूंछ बुझोय श्रीसीतामाता नखे जाय हाथ जोड़ ने शीख मांगी वणी दांण श्रीसीता माता नखे कोई रागशणी पेरा पे नो ही। क्यूं के हनुमानजी री तराप शूं सघळी भाग गी' ही। सीतामाता हनुमानजी ने देख घणा राजी व्हिया, ने हुकम कीधो 'वेटा! थूँ ही पाछो जावे है, अवे, अठे म्हारो कूण है। पण थारे गियां विना काम नी चालेगा। भगवान् थारे जश्या सपूत रो रूँवो भी वांको व्हेवा दो मती, ने थने चिरंजीव राखजो।' जदी हनुमानजी अरज कीधी हे माता! आप जश्यारी सेवा वण आवे यो हीज म्हूं म्हारे जीवा रो फळ समझूं हूं। आप कई विचार नी करावे। म्हूँ जावतां ही ने भगवान् रामचन्द्र ने अरज करूंगा, सो सघळी फौज ले'ने भगवान् पधारया-के-पधारया ही समझवा में आवे, ने अणां वापड़ा मारवां रो हरावणो कई है। राम-भगवान रो हुकम व्हेवा री देर है। जदी सीता माता सघळा वांदरां ने और अंगदजी जामवंतजी आदि मुखिया मुखिया रा नाम ले'ने कीने ही वारणा कीने ही आशीश ने कीने ही पगां लागणो के'वायो, ने हुकम कीधो के लालजी ने अरज

करजे 'म्हें जो आपने कड़वा वचन किया चणीरो दुःख म्हूँ भुगत री' एं अबे आप म्हारी वणां वातां ने भूल ने म्हारो अपराध छमा करजो, ने झटही म्हने अणी संकट में शूं छुड़ावजो। पछे से'दाणी रे वास्ते शाड़ीरा पल्ला शूं खोलने चोर हनुमानजी ने वगश्यो, के अणी शूं भगवान् ने म्हारी याद आय जावेगा, जदी हनुमानजी सीतामातारे चरणां में धोक दे'ने समंदर रे भड़ला मंगरापे चढ़ने जोरशूं गरजने पाछा कूदती दाण, यूं के'ता थका के म्हूँ आछो ऊछो रागशां ने मार लंका ने बाळ पाछो जावूं हूँ। अबे लंकारा नीच रागशांने आपणी आपणी खाटल्यां झट त्यार कराय राखणी चावे। या वात शुण ने सघळा लंका वासियांरी छाती धूझ गी' ने अठीने हनुमानजी कूदने पेला तीरपे जायने सघळा वांदरा शूं मिल लंकारी वातां करता करता श्री रामभगवान नखे पधारया। रामभगवान दूरा शूं अयांने आवता देख जोर शूं हेलो पाड़ पूछायो के कई जानकी री पतो लागोके? जदी तो जामवंतजी अरज कीधी, सीतामातारा दरशण व्हे'गिया। यूं के'ने सघळा दौड़ रामभगवान रे, ने लछमणजीरे ने सुगरीवजीरे धोक दीधी, ने दूजा वांदरां शूँ घड़ा प्रेम शूँ मिल्या, ने सघळी वातां लंकारी जामवंतजी भगवान् ने मालुम कीधी। जदी राममगवान् हुकम कीधो, के धीरे धीरे मीठी बोलवावाळी, राता राता पातळा होठां वाळी,

जानकी कई कई कियो, सो हनुमान म्हने घड़ी घड़ीरी घणीरी वात ने कयांही जाव। जदी हनुमानजी अरज कीधी सांझ रो लंका में गियो ने ढळती रात में अशोक वाड़ी में गियो। वठे सीतामाता ने रागशख्यां धमकाय ने समझाय री'ही सो म्हूँ छुपने देख्यां कीधो। फेर रावण भी आयने नरोही कड़वी वातां सीतामाता ने के'ने परो गियो, ने फेर रागशख्यां घणां जोर शोर शूं सीतामातारे दोव्ह व्ही कणी तो कियो जनक ने नरो जागीर देवाय दाँगा। कणी कियो राम तो अठे समंदर रे वच्चे लंकागढ़ में आयही नी शकेगा। कणी कियो रामने मार न्हाखे जदीतो थूं रावण रे अठे रे' जायगा के ? कणी कियो या तो वेंडी है। लंकानाथ जश्या राजारे तो नी रे'वे ने एक कॉंगला रे वारते हाय हाय कर री' है। देख अठे रावण रे अतरी राण्यां है, अणां में कणी कणी रो अपजश व्हियो है, मामा रावणरा रावळामें रे'वा शूं अणांरो ने अणांरा पीर शाशरारो मान वध गियो है। आज अणांरा पीर शाशरावाळाने देखाय मँगाव रावणरी शुभ नजर शूँ वणांरे कणी वातरी कमी नी है। थूंतो पटराणी वाजेगा। जतराक में तो एक रागशणी रुद्राक्षरी माळा पेरयां ने भस्मी रा तिलक कीधा ने रेशम पोत पे'रने 'शिव पारवती वल्लभ, पतिव्रता शिरोमणि पारवती' यूं जप करती ने पावड़यां खट खटावती, ने

अघर अघर पग मेलती जाखे कांटा में उयाणी चालती व्हे' ज्यूं चठे आई । म्हूं भी जाणयो या तो कोई म्होटी भगतण दीखे है। चणी घरमरी वातां कर कर ने पुराणांरा ओ'ठा दे' दे' ने सघळा ने ववड़ायने सीता माताने नराई समझाया के 'रावण रा रावळा में कई दोष नी है । थने नरोई धन मिलेगा, सो पाछो खूब पुन्न कर काड़ जे।' जदी सीता माता हुकम कीधो 'हे बुगली ! लुगाई जातरे पतिव्रत शिवाय दूजो पुन्न धरम कोई नी है, ने जनक री बेटी ने थारो ज्ञान नी लागे गा। हजार दाण के'वावे तो एक वात है, ने एक दाण के'वावे तो एक वात है। रामरे सिवाय सीता दूजारी कानो मर जाय तो पण नी देखेगा।' जदी तो वणी चरड़ ने दूजी रागशण्यां ने हेलो पाड़ ने कियो के 'या तो नष्ट देवरी भ्रष्ट पूजा ज्यूं है । समझायां शूं नी मानेगा। अबे ईने मारकूट ने अदमरी करन्हाखो, ने मर जाय तो के' दोजो के समझावतां समझावतां मर गी,'। जीरो कई करां।' यूं वणी री वात शुण कुरूपणी रागशण्यां आवा लागी, वणां रागशण्यां रा दोखवा शूं ही ताव-चढ़ जावे । पण जानकी माता ने धन है के वी वणां कुरूपी रागशण्यां शूं नाम नी डरपता हा। वणां में शूँ एक तो भालो ले'ने सीताजी ने मारवाने दौड़ी । दूजी वाने ऊभी राख के'वा लागी, ईरी

गांवड़ी मरोड़ न्हाखो, दूज्यूं लोही खेरु व्हे' जायगा । एक कियो म्हूँ चाट जाऊँगा, एक कियो जीवतो ने ही शेक न्हाखो । जदी शुरपणखा बोली कीरी मूँडी है, जो कोई दूजी अणीरे हाथ लगाय देवे । ई ने तो म्हारा हाथां शूं मारूंगा । अणीज म्हारा नाक ने कान कटाया है । ईंरा शूना कारने निकुंभला-मातारा (नामरी) मन्दिर में घूमर लेवांगा, ने दारू पीवाँगा । वणांरी वातां शुण शुण ने जानकी माता हुकम करता, के चावे जो करो सीता तो थारी वा हीज है । सीता तो थांगे वात कदीभी मानवा वाळी नी है । जदीतो वी हार पछताय पसीगे' ने अश्वी रातरी जागी थकी ही सो पड़ र्‌' वणीदांण कलानामरी विभीषण री वेटी वठे आई । वा छोटीसी छोरी ही तो भी घणी शमझणी ही । जीशूँ वणी धीर धीर कियो 'म्हालो वाई आपले ढोक डेवाई है । ले अलज कलाई है, के आप कई छोच नो कलावे, म्हें आपला चाकल हां काले आछा डल आवे है ।' जदी सीतामाता धीरे शूँ हुकम कीधो 'वेटा ! कलु ! अणी वगत में तो म्हारी मां गणूं तो थें हो, ने वाप गणूं तो थें हो । अणी लंकामें म्हारो आज अशी दुखरी वगत में कूण है, जो थांरो विश्वास नी व्हे'तो तो म्हंतो कदकी ही मरी व्हेतो । पण वेटा ! दुष्ट रावण ने खवर पड़ जायगा, तो म्हारे वास्ते थांने दुःख पड़ जायगा । जदी कला वोली 'म्हें 'धलम ले वाछते वाजी छूं भी नी दलफां हां । यूं के'ने वा

नानीक छोरी छानेरी छाने पाळी परी गी'ने वंणी ने छोटी भोळी छोरी जाण, वणीरो कोई भे'म भी नी करतो हो, ने एक त्रिजटा नामरी रागशणी भो सीता मातागे मन लगायने चाकरी करे है। एकंत में व्हे' जदी वणांने विश्वासे है। यूं ई वातां शुण रामभगवान ने और लछमणजी, सुगरीवजी श्रोर सघळा वांदरा ने भी घणी अचकाई आई, सो झट फोज री त्यारी करने लंका पे चढाई कर दीधो वा फौज समंदर रे भडे जाय पूगी। जठे सघळा विचारो के अबे समंदर ने पार करने कूंकर आगे जावां। वठीने लंकामें खबर लागी के रींछ ने वांदरांरी फौज ले' ने राम लछमण समंदर रे पे'ले तीर तो श्राय गिया है। जदी तो लंकामें रागशांरा डोया ऊंचा चढवा लागा, ने यूं केवा लागा के एकले राम चवदा हजार रागशां ने और खर दूषण और बालो सरीखा महाबली ने मारन्हाख्या। अबे अणांरी फोज आई है, के लंकारी मौत आई है। यूं सघळा ने घबरावता थका देख रावण सवांने समझावाने दरीखानो कीधो। वणी में मन ठावा ठावा रागश भेळा व्हे' गिया। जदी रावण सवांने कियो, के 'बड़ा अचंभारी बात है, के वांदरा ने मनखांरी फौज शूं लंका वाशी रागश डरपे है! यातो अशी डरपण है, ज्यूं मनख धानरी बाळद शूं डरपे।' जदी विभीषण कियो, 'ई धान रा दाणा नी है, पण तोपांरा गोळा है।' जदी रावण कियो, 'विभीषण थूं शुझे मती। थने

तो चुड़यां पे'रने ताळ्यां बजावणी सोवे है। शूगरी सभा में बोलया जश्यो थूं नी है।' जदी तो सब गवण गी हां में हां मिलावां लागा ने केवा लागा। अणां वांदरां ने तो पांगि मीत, निनाट्ट वड़तरी लियां, लंका में खेंचने लाय न्हाख्या है, ने आप भी बड़ी समझ री बात कीवी, जो मीतानें भी लायानें म्हांरे गोठ री भी सामगरी कर दीवी।' यूं मन माफक वातां शुण ने रावण घणो राजी व्हियो ने वणां ने घणी रीझ दे'ने शीख दे'ने मे'लां में परो गियो। राते मन्दोदरी भी रावण ने नरोई समझायो, पण वणींरी वातने भी यूं जाण नो मानी के मीताग ख्यार शूं के'ती व्हे'गा, के सीता अठे रे' जायगा तो पछे म्हने कूण पूछेगा, ने समंदर रे पेले पार हीज पड्या पड्या वांदरा ने मनख तो वणांरी उमर पूरी कर देगा। विभीषण विचारी के सवांमें केवा शूं रावण ने रीश आयगी' व्हे'गा सो प्रभाते ठंडाई री वगत में समझाय ने केऊं गा।' यूं विचार प्रभात पे'ली जाय भुजगे कर हाथ जोड़ पगां में धोक देने अग्ज कीधी, के 'म्हारो काम है, के आपरी विपदा ने टाळूं, पण दूसरारी विपदा दूसरा शूं नी टळ शके है। या कोमतहीज दुखरो वारणो है। अणी खोटी समझ रो भरोसो करवा लागे, जदी जाण ले'णो के अबे खोटादिन आय लागा है। मनख देवी. देवने मनावता फिरे। पण आपणे मायने हीज वैठो वैठो आपणो' धरम केवे। वणीपे कान नी'मांडे है। हे रागशां

रा नाथ ! म्हूं नकी कर केऊं हूं के महादेवजी भी आपरी रखवाळी नी करेगा । वणांने भी धरम सुंवावे है । वी पोते ही वांदरा रो भें'प करने धरमात्मा राम री चाकरी करवा लाग गिया है । म्हारो कें'णो आपरा भलारे वास्ते है । आपने चावे के सीता सती ने दे'ने राम शूं मेळ कर लो । दूज्यूं आपरो आसर में कोई भीड़ नो व्हे'गा ।' जदी रावण कियो, 'हे नालायक नीच ! थने कणी कियो हो, के म्हने अक्कल सीखावजे । म्हूं वडो बुद्धिमान हूं । म्हारी समझ शूं काम कर रियो हूं । दूजो तो कोई म्हारी बुराई नी करे है, ने सबही जगा' म्हारी चाह चाई व्हे'री' है । पण एक थनेहीज म्हारी चाह चाही नी खटे मो थूंहीज जदी व्हे' जदी दुशमणांरी कानी बोले है ।' विभीषण कियो 'हेनाथ ! ई मूंडे देखी वडायां काम नी देवेगा । ई तो दो घडी मन राजी कर लेवारी वातां है अणांरे कई दूखे जो सॉचो केवे, ने आपने वेराजी करे । वडाई तो वडा काम शूं करावणी चावे ।' जदी रावण कियो, 'हां थारे हीज दूखे है, थूंहीज म्हारो भलो चावे है, ओर सब म्हारा वेरी है ।' जदी मेघनाद कियो 'काकाजी ! आप बात करो जशी रागश तो कई पण रागशांरा पाशवान्यो भी अशी वात नी करे । आपरो अणी वंश में कूंकर जनम व्हियो ।' जदी विभीषण कियो, 'वापू कोई मां, ने जावे है ने कोई वापने । म्हारे वापरो सुभाव आयो है, ने थारे पिता में मां रो सुभाव आयो है, ने थारे में

तो बोलवारी खळ खांच ही नी है । थूंतो ठेठ शूं हीज आपापंथी है । थने वचे बोलतां नी रोके वणांरी समझ चरवा गी' है ।' जदी रावण कियो, 'हे तपस्यांरा भांड, थूं तो माड़े शुवे है, ने म्हारा शूरा बेटा मेघारी ने म्हारी खोटी के' रियो है ।' जदो विभीपण ने भी रीश आय गी' सो कियो के हे रावण ! थोड़ा दिनां में खबर पड़ जायगा, के आछो सीख नी माने जींरो कई हवाल व्हे' है, ने तपस्यां री वाह वाही तो सब संसार कर रियो है, ने जठा तक सूरज ने चांद रेवेगा, वठा तक अणांरो जश संसार गावेगा । जदीतो रावण ने रीश आई सो खेंचने एक लात जोर शूं साधू विभीपण रे देने कियो के चल्योजा अठाशूं ! अबे म्हने मूंडो देखावे मती ।' जदी विभीपण कियो 'जोहुकम, आप बड़ा भाई हो सो पितारी जगा' हो भले ही लातरी देवो । पण व्या दुष्टबुद्धि छोड़यां विना आपरो भलो नी है ।' जदी रावण कियो पधारो, अठाशूं वेगो हो कळोमूंडो करो । अश्यो भलो तपस्यां कांगला रो करो, ने वणां ने शिखावो ।' जदी तो विभीपण वठा शूं ऊठने जावती दांण कियो, 'म्हारोतो एक काळो मूंडो करतां कई अबकाई नीआवे है । पण आपरा दश मूंडा काळा व्हे'गा जदी खबर पड़ जायगा फेरभी मान जावो । अबे म्हारो दोप नी है । म्हूं अयोध्या नाथरे शरणे जाउं हूं । यूं के' विभीपणजी वणांरी मां नखा शूं शीख मांग अलकापुरी में कुवेर शूं मिल भगवान् शंकर

रा दर्शण करने राम भगवान् रे शरखे चार रागशां ने साथे ले'ने पधारया वणी दांण महादेवजी हुकम कीधो के 'विभीपण थें घणी आछी विचारी। रावण री तो बुद्धि फरगी' है। थने थारा पुन्ना शूं आछी बुद्धि उपजी सो वळती लायमें शूं निकळ आनंद रा सागर रामरे शरणे जावे है। अठी ने अवे विभीपणजी ने आवतां देख पे'रा वाळा वांदरा सामा जाय पूछ ताछ कर पाछा आय सुगरीवजी ने अरज कीधी।सुगरीव जी राम भगवान् ने अरज करी, जदी मघळांरी संमती लेवा पे सवांरी एक राय नी व्ही'। जदी रामभगवान् हुकम फरमायो, शरणागतने तो नी छोड़णी आवे। जदी हनुमानजी अरज कीधो, म्हारी भी या हीज अरज है। जदी तो सवांरी राय शूं विभीपणजी ने बुलाय लीधा, ने भगवान ऊभा व्हे'ने नखे वैठायने लंकानाथ री पदवी वगश दीधी, ने लंकारो राज तिलक विभीपणजी रे कर दीधो, ने पछे समंदर पे पुळ वांधवा री राय नैं'चे करी। जदी पुळ वांधणो आरंभ व्हियो।

इति श्री मानवमित्र रामचरित्र में सुन्दरचरित्र पूरो व्हियो .

तो बोलवारी खळ खांच ही नी है । थूंतो टेठ शूं हीज थापापंथी है । थने बचे बोलतां नी रोके वणीरी समझ चरवा गी' है ।' जदी रावण कियो, 'हे तपस्यांरा भांड, थूं तो माड़े भूशे है, ने म्हारा शूरा वेटा मेघारी ने म्हारी खोटी के' रियो है ।' जदो विभीपण ने भी रीश आय गी' सो कियो के हे रावण ! थोड़ा दिनां में खवर पड़ जायगा, के आछी सीख नी माने जींरो कई हवाल व्हे' है, ने तपस्यां री वाह वाही तो सब संसार कर रियो है, ने जठा तक सूरज ने चांद रेवेगा, वठा तक अणांरो जश संसार गावेगा । जदीतो रावण ने रीश आई सो खेंचने एक लात जोर शूं साधू विभीपण रे देने कियो के चल्योजा अठाशूं ! अबे म्हने मूंडो देखावे मती !' जदी विभीपण कियो 'जोहुकम, आप बड़ा भाई हो सो पितारी जगा' हो भले ही लातरी देवो । पण या दुष्टबुद्धि छोड़यां विना आपरो भलो नी है ।' जदी रावण कियो पधारो, अठाशूं वेगो ही कळोमूंडो करो । अश्यो भलो तपस्यां कांगला रो फरो, ने वणां ने शिखावो ।' जदी तो विभीपण वठा शूं ऊठने जावती दांण कियो, 'म्हारोतो एक काळो मूंडो करतां कई अबकाई नीआवे है। पण आपरा दश मूंडा काळा व्हे'गा जदो खवर पड़ जायगा फेरभी मान जावो। अबे म्हारो दोप नी है । म्हूं अयोध्या नाथरे शरणे जाउं हूं । यूं के' विभीपणजो वणांरी मां नखा शूं शीख मांग अलकापुरी में कुवेर शूं मिल भगवान् शंकर

रा दर्शण करने राम भगवान् रे शरणे चार राणशां ने साथे ले'ने पधारया वणी दांण महादेवजी हुकम कीधो के 'विभीषण थें घणी आछो विचारी । रावण री तो बुद्धि फरगी' है । थने थारा पुन्ना शूं आछी बुद्धि उपजी सो बळती लायमें शूं निकळ आनंद रा सागर रामरे शरणे जावे है । अठी ने अबे विभीषणजी ने आवतां देख पे'रा वाळा वांदरा सामा जाय पूछ ताछ कर पाछा आय सुगरीवजी ने अरज कीधी ।सुगरीव जी राम भगवान् ने अरज करी, जदी सघळांरी संमती लेवा पे सवांरी एक राय नी व्ही' । जदी रामभगवान् हुकम फरमायो, शरणागतने तो नी छोड़णी आवे । जदी हनुमानजी अरज कीधी, म्हारी भी या हीज अरज है । जदी तो सवांरी राय शूं विभीषणजी ने बुलाय लीधा, ने भगवान ऊभा व्हे'ने नखे बैठायने लंकानाथ री पदवी बगश दीधी, ने लंकारो राज तिलक विभीषणजी रे कर दीधो, ने पछे समंदर पे पुळ बांधवा री राय नें'चे करी । जदी पुळ बांधणो आरंभ व्हियो ।

इति श्री मानवमित्र रामचरित्र में सुन्दरचरित्र पूरो व्हियो

न किपो, हे हठीलो जणीरा जोर पे पोमावतो ही वो भी
ठरो खायो चांदरा रींछडा री फोज भेळी कर समंदर
पे पुळ बाँध अठे पधारयो ने फेर पोड गियो, ने अश्या ही
नोफा चांदरा भी नीन्द काढ़ना लागा। जीशूं म्हारा वीर
रागशां अचाण चूकमें अङ्गद सुग्रीव हनुमान जांमवान नल नील
सघळां ने मार भगाया ने रामने मार, व्हाँरो माथो ने धनुप
अठे ले'आया, सो देखाँ हाथीपगी थूं जायने व्ही ले'आन।
जदी हाथीपगी रागशणी नारणे शूं माथो ने धनुप लाय सीता-
जीने बतायो। वणांने देखनाँही सोताजी घबरायने जीव भूल
गिया। जदी रावण हँसतो हँसतो बारणे परो गियो। त्रिजटा
रागशणी पछे ठंडा पाणीरा आला आला हाय सीताजीरे आँरयां पे
फेरया। वणी शूं सीताजीने ओशान आई। जदी त्रिजटा
कियो के आप कश्या नी जाणो के रागशाँरा बडा बडा छळ
व्हे' है। या तो करतनो माथो ने धनुप है। यू के'वणी माथा
में शूं रूई काडने बताई। जदी सीताजी ने भरोसो आयगियो।
अतराक में तो लडाई रा नगारो व्हियो। जदी कियो के यो
कवच पेरनारो नगारो व्हियो है। फोज भागती तो लडाई रो
नगारो क्यूं व्हे' तो ने यो चांदरारो गरजणो शुणाय रियो है।
दूजो नगारो व्हे'गा ने सघळी फोज त्यार व्हे' ने तीजो नगारो
व्हेयापे चढाई कर देगा। अने म्हू भी जावूँ हूँ, ने लडाई
देख, जो समाचार व्हे'गा वो म्हू आपने अरज कर दूंगा।

शुक और सारण नामरा दूतां ने छाने खबर लावाने मेल्या के फोज में कूण कूण कस्यो कस्यो है, ने राम पे कणी कणी रो मोह ने वैर है। जदी व्ही रावण बांदरा रो रूप करने वठे जाय धार धारने फोजने देखरिया हा। अतराकमें विभीषणजी वणॉने ओळख लीधा, सो पकडाय ने राम रे नजर कीधा। जदी वणां दूतां सघळी वात भगवानने अरज कर दीधी। जदी राम भगवान हुकम कीधो,के ई जोजो पूछे अणांने महीं सही वाकब करदो ने ई देखणो चावे सो देखाय दो। जाद तो विभीषणजी साथे रे' ने वणां ने सब बताय दीधा ने पाछी रामचन्द्र भगवान नखे लाय ऊभा राख्या। जदी भगवान हुकम कीधो के रावण ने कें' दीजो के काले म्हॉरी चढाई लंका पे व्हे'गा वणी वेळा खबर पडेगा के कणी में कतरो बळ है, सो त्यार रेवे अथवा जानकी ने लाय शरणे आय जावे। नी तर लक्ष्मणजी रा तीर खमवा त्यार व्हे' जावे। जदी दोई दूतां राम भगवान रे हाथ जोड शीख मॉग ने लंका में आय रावण ने सब वातॉं वाकब कर दीधी। जदी रावण लडाई रे वास्ते फोज री त्यारी कराई। अठी ने राम भगवान भी आपरी फौजरी चार पांती कराय ने लंकापुरी रा चार ही वारणा रोकाय लीधा, ने अङ्गदजी ने हुकम कीधो, थें रावण नखे जावो। जदी अङ्गदजी रावण नखे जाय वणी ने कियो के म्हने राम भगवान मोकल्यो है। अबे थांरी राम रा

शुक और सारण नामरा दूतां ने छाने खबर लावाने मेल्या के फौज में कूण कूण कस्यो कस्यो है, ने राम पे कणी कणी रो मोह ने वैर है। जदी व्ही रावण वांदरा रो रूप करने वठे जाय धार धारने फौजने देखरिया हा। अतराकमें विभीषणजी वणॉने ओळख लीधा, सो पकड़ाय ने राम रे नजर कीधा। जदी वणां दूतां सघळी बात भगवानने अरज कर दीधी। जदी राम भगवान हुकम कीधो,के ई जोजो पूछे अणांने मही सही वाकव करदो ने ई देखणो चावे सो देखाय दो। जाद तो विभीषणजी माथे रे' ने वणां ने मय वताय दीधा ने पाछी रामचन्द्र भगवान नखे लाय ऊभा राख्या। जदी भगवान हुकम कीधो के रावण ने के' दीजो के काले म्हॉरी चढ़ाई लंका पे व्हे'गा वणी वेळा खबर पड़ेगा के कणी में कतरो वळ है, सो त्यार रेवे अथवा जानकी ने लाय शरणे आय जावे। नी तर लक्ष्मणजी रा तीर खमवा त्यार व्हे' जावे। जदी दोई दूतां राम भगवान रे हाथ जोड़ शीख माँग ने लंका में आय रावण ने सब वातॉ वाकव कर दीधी। जदी रावण लड़ाई रे वास्ते फोज री त्यारी कराई। अठी ने राम भगवान भी आपरी फौजरी चार पांती कराय ने लंकापुरी रा चार ही वारणा रोकाय लीधा, ने अङ्गदजी ने हुकम कीधो, थें रावण नखे जावो। जदी अङ्गदजी रावण नखे जाय वर्णा ने कियो के म्हने राम भगवान मोकल्यो है। अबे थांरी राम रा

सीता माता राम भगवान रे जीत व्हेवारी परमेशर शूं अरज करवा लागा और वठीनें रावणरी फौज भी त्यार व्हे'ने लड़वाने निरळी। अठी ने तो राम भगवान री फौज त्यार हीज। पछे दोई फोजाँ आपस में भिड गी' ने करडी भाक भीक मची। पण शेवट में रागशां रा पग उपलवा लागा ने वांदरा वणांने दवावता थका ववरा लागा। या श्रात रावण जाणतांई यूं केवा लागो के अचरज है! वांदरा शूं रागश हटे। पछे तो भट आप रो रथ त्यार कराय ने भट कवच पेर लंका रा नामी नामी योद्धाने लारां ले'ने रावण आपहीज लडवा दोड्यो। अठीने राम लक्ष्मण, हनुमान, सुग्रीव, ने अंगदभी उमंगशूं आगे वध्या। राम रावण री लडाई देखवारी घणां दिनां शूं देव दानव ने मनसा ने लालसा ही। जींशूं आकाश में नराई विमाण में देवता गंधर्व, यत्त ने ऋषियोंरी भीड भराय गी' लोग के'वा लागा के आज यो राम रावण रो युद्ध नी है, पण धर्म अधर्म रो युद्ध है। राम भगवान भी लक्ष्मणजी ने हुक्म कीधो, हे भाई लक्ष्मण आपांरा गुरु विश्वामित्रजी आपांने लडाईरी विद्या अणीज दिन रे वास्ते शिखाई ही। आज अधमियांरा मुखियाने मारने गुरुजी शूं उऋण व्हे'णो है। रावणभी वणीरा वेटा मेघनाद ने कियो के बेटा मेघ, आज जनमरा वैरी रामने मारने संसार पे आपणी धाक जमावणी है। अतरा दिनारा म्हारा जपरो देवरो है। वणीपे आज कलश चढ़ावणो

है। यूं घणा दिना शूं एक एकरा सुभावरा वैरी राम रावण रो युद्ध कइ है, जाणे आखा संसाररो रंग फिरवारो दिन है। केक तो संसार में आज शूंही धरम रो नाम नीं रेवेगा, ने केक अधरम रो खोज ही नी लादेगा। राम ने रावण दोई गुरु है, सो अतरादिन राम तो मनखपणो कइ व्हे' है, यो पाठ संसार-ने भणावता हा, ने रावण ढॉढापणा रो पाठ ससार ने शिखा-वतो हो। अबे कई व्हे'गा, कई व्हे'गा। वणी वगत रावणरे आगे आगे रावणरी फोज चाल री'ही। वणी फोज मे अकं-पन, कुमुख, अतिकाय, नरातक, देवांतक, वज्रदंत, कुंभ, निकुंभ ने प्रहस्त जइया बडा बडा शूर वीर सेनापति हा। वणीरे डावी कानी मेघनाद धनुष लेने चालरियो हो, ने रावण रा एकमो वेटा भो, वठीने हीज लारां चालरिया हा, श्रोर जीमणी कानी, नींद शू जाग्यो थको, ने अगास्यों खावतो थको ने, घणो म्होटो म्होटो मुदगर हाथ में उछाळतो थको, जाणे मगरो रो मॅगरो कुंभकरण चालरियो हो। और छेटी नजीकरा भाई बंध ने रावण रा मित्र रागश हा, ओर पाछे पाछे रावण रे मामेरा रा दानवांरी फोज हो, ने सबांरे बचे रावणरे छतर चमर व्हे'ता थका ने धनुष ने ताणतो थको जाय रियो हो। अशी रावण री पूरी चढ़ाई आज दिन पेली कणी पे नी व्हीं'ही। श्रणां मांयलो एक एक जणो तीन ही लोकॉने धुजाय न्हाखे जश्यो हो। यूं रामने रावण री फौजां

रण रे आमी शामी भिड़ गी' । वांदरा ने और रागशांने घणी दिनां री ऊर निकाळवारी तक मिल गी' । ज्यूं छूट पल्ला हाथ्यांरी टक्करां व्हेवा लागी । शरीखा शूं शरीखा भिड़गिया । जाणे दो समुद्र उमड़ उमड़ने लड़ रिया है । तरवारां, लाठ्यां, टोळा, तीर, रूंखड़ा गदा, शूळा और भाला अश्या हजारां आवधां शूं हजारां लड़ रिया हा, ने सैंकड़ां, हजारां ने लाखां धरती पे पड़ गिया हा । कतराई तो मर गिया हा ने कतराई अधमरया व्हे' गिया । नराई रीप में खबर ही नी रेचा शूं शस्त्र अस्त्र ने रूंख भाटा व्हेवा पे भी गुत्थंगुत्था ने बाथकबीथ्यां आय गिया, ने दांतां शूं ने नखां शूं ने हाथां, लातां ने घूमां मुक्यां शूं ज्यूं आवे ज्यूंई एक दूसरा ने मारवा लागा । यूं तरे'तरे'री लडायां वणी जगा' व्हेवा लागी । वणी दांण लडाई शूं कोई नवरो न्ही हो । एक एक शूं गुथाय रिया हा । वणी दांण मेघनादरे ने लक्ष्मणजीरे ने रावण रा नानारे ने जामवंतजीरे, ने कुंभकरण और हनुमानजीरे और राम शूं रावणरे वडो भयंकर युद्ध व्हे'रियो हो परंतु मेघनाद वड़ो छळी हो पण लक्ष्मणजी तो छळरी लड़ाई नो' करता हा । वणी दांण मेघनाद लड़तो लड़तो लक्ष्मणजी ने छेटी ले' गियो । अठी ने राम भगवानरे और रावणरे धनुष भट भट उठक बेठक करवा लागा । दोयांरा हाथा में शूं जाणे तीरांरी नद्यां व्हे'री ही । और अठी कुंभकरण ने हनुमानजीरे

अनोखो ही युद्ध व्हे'रियो हो। हनुमानजी तो वणी पे मंगरा पटकता हा, ने कुंभकरण अवासां खावतो हो ने मन में यूं जाणतो के जाणे एक दो महिना अठे होज सोय जावां। वणीरी तो ऊंघ-ही नीं गी'। अदी तो हनुमानजी दौड़ ने वींरे एक रैपट मेली ने लारां-रो-लारां एक मुको वणींरी छाती पे वजेड़ दीधो। जणी शूं कुंभकरण ने गरखेटो आय गियो। पण वणी पड़ते पड़ते ही हनुमानजी रे एक मुक्को अशो दीधो, के हनुमानजी गरखेटो खायने पड़ गिया। दोई जणा ने जाणे साथे ही नींद आय गी'। पण कुंभकरण तो पाछो झट चेन गियो। अबे कुंभकरण शूं लड़रावाळो कोई खाली नी रियो। ने वठी ने लछमणजी मेघनाद ने वाणांरी मार शूं अधमरयो कर नाख्यो। या रावण देखने विचारी के अबे तो मेघा वेगा हीज मरता दीखे है। यूं सोचने रावण कुंभकरण ने कियो के थूं राम ने रोक। पछे रावण झट दौड़ने लछमणजी पे वाणांरी वरषा कर दीधी। अबे दोई बाप बेटा वाणां शूं अकेला लछमणजी ने पटकवारी करवा लागा। पण वो वीर राम रो छोटो भाई आणां दोई वडा टणका रागशांने भी वाणांरी मार शूं थकावा लागो। या तरे' देखने राम भगवान भाई री भीड़पे पधारवा लागा। पण बचे ही कुंभकरण मंगरारी नांई आय ने राम भगवान पे मुगदर ने मंगरा और वांदरा पकड़ पकड़ ने फेंकवा लागो, ने राम भगवान ने रोक

लीधा। राम भगवान वणीरा फेंक्यां मेंगरा मुग्दरां ने तो फाटनाख्या। पण आपग वांदरा ने तो आपरा हाथ श्ूं कूंकर काटे। अतराक में हनुमानजी ने शुध आई सो, वी झपटने रावण पे दौड्या। जतरेक तो मेघनाद शक्ति वाणरी लक्ष्मणजी रे दे'पाड़ी। जणी शूं लक्ष्मणजी ने मूर्छा आयगी' अतराक में रावण हंमतो हंमतो पाछो आय राम भगवान शूं लड़वा लागो। ने मेघनाद हनुमानजी शूं लड़वा लागो। जतरे सुग्रीवजी अकंपनने पटक देखे, तो रावण ने कुंभकरण दोई भाई अकेला राम भगवान शूं लड़ रिया है। पण राम भगवान रे तो कई गनारही नी ही। जदी तो सुग्रीवजी कुंभकरण ने आय धाकल्यो, सो अबे तो बालीरा भाई रे, ने रावण रा भाई रे लड़ाई व्हेवा लागी। वणीं दांण सुग्रीवजी री थाप शूं कुंभकरण पड़ने भट उठते ही सुग्रीवजी रे पाछी दीधी। जीशूं सुग्रीवजीने मूर्छा आय गी'। जदी वणी झट वणां ने कांख में दाव लीधा। अतराक में जामवंतजी रावणरा नाना ने मुरछित कर वठे आय पूगा, ने सुग्रीवजी भी शुध में आय वणीरी कांख में शूं निकळ गिया। जदी जामवंतजी कियो आपांने मेघनाद कानी जावणो, चावे वठे चावना है। अणांने तो रामभगवान समाळ लेवेगा। रागश नराई तो मर गिया है, ने आपांरी फौजरा वीर वधवधने वार कर रिया है। अतराक में विभीषणजी भी कुसुखने पटक वठे

आय गिया, ने अङ्गदजी भी वज्रदंतने पटकने खुलांसा व्हे' गिया हा। जदी सुग्रीवजी अङ्गदजी ने कियो अंगु, थूं अंदाना‍री चाकरी में रीजे, यूं के'ने कुम्भकरणरा नाक कान काटने मेघनाद शूं लड़वा परा गिया, ने विभीषणजी और जामवंतजी भी वठे जायने देखे तो लक्ष्मणजीरी छाती में भारी घाव लागो हो ने वी अचेत पड्या थका हा, जदी जामवंतजी हनुमानजीने ओषध लेवाने दौड़ाया, और सुग्रीवजी मेघनादने रोक लीवो, ने अठी ने कुम्भकरण नकटो व्हेयो थको रीश में भरायने रामपे झपट्यो जदी राम वणी पे बाण वावा लागा, पण वणा बाणाने रावण काटवा लागो जतराक में अंगदजी कूदने रावणरा हाथमें शूं धनुष कोपने वणीरे एक रेपट जोररी यू दीधी ज्यूं कोई छोरांरे देवे ने कियो के हे अधर्मी हे दुष्ट थां दो दो जणां एक एक शूं लड़ो हो थांने लाज नीं आवे, अठीने आव जो युद्धरो श्वाद चखाय दूं के वाली रो बेटो वाली शूं ओछो नी है, जदी तो रावण अंगदजीपे दूजो धनुष लेने वावा लागो, ने केवा लागो के हे मूरख बाप खांणा वंशरा कलंक शत्रु रा मित्र मित्र रा शत्रु म्हें तो मित्ररो बेटो जाणने टाळरियो छूं जदी अङ्गदजी कियो के राम रो शत्रु कोई नी है, वी संसाररी खोटायां मटावा ने आया है और म्हें सब वणांरी अणी चाकरी में लागा हां, म्हारा पिता में खोटायां थारी सङ्गत शूं आई सो आज म्हारा बापरी

वैर थांशूं लेणो है। जदी तो रावण झट दूजो धनुष लेने अंगद जी पे वावा लागो। जतराक में राम भगवान् कुंभकरण रो एक हीज बाणमें माथा शूं धड़ न्यारो करने धरती पे सोवाय दीधो, ने अङ्गदजी ने रावण शूं लड़ता देख लक्ष्मणजी नखे पधार, । वां ने वणांरी छाती में ऊंडो घाव देख आणे भगवान रे भी छाती में घाव पड़ गियो। पण अतराक में तो हनुमानजी ओषद ले आया वणीं शूं लक्ष्मणजी आळम मरोड़ने जाणे नींद शूं जाग गिया, ने सब पीड़ा मिट नी' ने फेर मेघनाद शूं ललकार ने जाय भिड़्या। रावण भी झट अङ्गदजी ने अचेत कर राम भगवान शूं आय भिड़्यो। अबे तो पाछो राम रावण रो ने लक्ष्मण मेघनादरो झगड़ो व्हेवा लागो, ने देखवा वाळा रो मन हींदारी पाटकड़ी री नांई अठीरो उठी फरवा लागो। वणां रे हाथरी ने शरीररी आगत और मनरी-धीरप ने सुभावरी उमङ्ग देख देखने दंग व्हे'गिया। वणीं वगत लक्ष्मणजी मेघनादने धाकल ने कियो, के हे वीर इन्द्रजीत ओशान राख यो म्हारो बाण थारो प्राण लेवाने आवे है। यूं के'ने कान तक ताणने वणींपे बाण वायो, वो बाण मेघनाद रे रोकवा शूं भी नीं रुक्यो'ने धड़ गावड़रो हेत छोड़ायने ऊगता सूरजरा रङ्ग सरीखो लोया शूं रातो व्हियो थको पे'ली कानी जातो पड़्यो। यूं बेटाने मरतो देख रावण मरणीक व्हे'ने रामपे बाणांरी वरषा कर दीधी। जदी तो राम भगवानभी पूरा जोर

शूं लड़ाई शुरू करदीधी। दोयांने ही घणां दिनांरी ऊर मेंटवां री तक मिल गी'ही। जाणे चौमासों चरता थका दो डाको सांड टांडता-टांडताआय भिड़या। जाणे विना अगड़रे दो मदा हाथी लड़वा लागा। वणी वगत रावण तो रथ में बैठो थको हो, ने राम भगवान तो अरवाणा पगां घरती पे ऊभा हा। या देखने राजा इन्द्र आपरो रथ राम भगवानरे वास्ते पुगाय ने आप आकाश में कुवेररा रथ में बैठने लड़ाई देखवा लागो। राम भगवान ने रथपे सवार देखने रामजी री फौजमें दूणी उमङ्ग आय गी'ने वणी दांण रावण ने रामरी घणी फौज घेर लीधी। जदी राम भगवान हुकम कीधो के एक शूं घणांरो लड़यो अधरम है। रागश नराई छीज गिया है। अबे थें'म्हां दोयांरी लड़ाई देखो। या शुणने रावण कियो म्हं एकही त्रिलोकी रे वास्ते मोकळो हूं। जदी राम भगवान हुकम कीधो, हे रावण अबारणू या बातांरी वगत नीं है। या तो नींठ नींठ आज आपांने हाथां रो करतब देखावारी तक मिली है। जदी तो रावण यूं बोल्यो के देख यूं के'ने एक म्होटो भालो रामपे जोर कर ने वायो। पण भगवान वणां सांप सरीखा मालाने दूसरो भालो फेंक घरती पे पटक दीधो। जाणे दो सांप लड़ने पड़ गिया। अबे तो रावण तरे' तरे'रा तीर ने आवघांरी राम भगवान पे वरषा कर दीधी। पण भगवान भी पाछा वरस्यारा-वस्या तीरने आवध वायने वणांने वचे ही काटने नाख दीधा।

यूं रावण भी रामरा बाणांने काटने नाखवा लाग्यो। जाणे घणां दिनांरो लेखो दो माहूकार चव-चव-ने जव-जव चुकाय रिया है । देखवा वाळा चतरामरा व्हे'ज्यूं व्हे'रिया हा। जाणे रामें रावणरी लड़ाई दूजांने दौड़नो शिखाय रिया है। तीरां ने तरवारांरी धारां फेराय फेरायने चामदीरा तड़ंग्या उछळरिया हा । दोई शूर वीर जाणे केशूळा फूल्या व्हे'ज्यूं व्हे'रिया हा। घायल वीर भी रणखेत में पड़्या थका या लड़ाई देखने तरप ने घावांरी पीड़ा भूल गिया हा। रामने रावणरा रथ अतरी आगत शूं अठी-रा-अठी फिर रियाहा, के रामने देखताजठे रावणने और रावणने देखता जठे रामने कतरोही ठांण नजर आय जाता हा, ने वणांरे साथे दौड़णो छोड़ने सबांरी आंखां देवतांरी आंखां व्हे'ज्यूं ठेर'गो । एक-एक वारमें अनेक-अनेक दावन फेर वणो में कणो री वारी कणी री वारी देखवालागा, ने वाह वाह कर रिया हा ने देवतांरा हाथां में शूं फूल वरप रिया हा। जाणे अशी लड़ाई में शामल व्हेवा ने रण खेत में उतर रिया हा । जाणे शंकर हीज दो रूप धार लड़रिया है। राम रावण रो युद्ध राम रावण जश्यो हीज व्हियो । अबे तो राम रा दो हाथां रो जवाब देवाने रावण रा बीस हाथ अटकवा लागा। जाणे राम रो लेणो रावण शूं नी चुकावणी आयो । जींशूं माथाने हाथांने चरणामें देवा लागो, ने ज्यूं ज्यूं राम. वत्ता वत्ता लेवें ज्यूं ज्यूं

वो पत्ता वत्ता देवे । अणी में राम री लोभने रावण री उदारता देखवा जशी ही। या दशा देखने सब देवता डरप गिया, ने रागश हरप शूं खेंखारा करने गरजवा लागा । रावण भी फेर निडर व्हे'ने राम भगवान शूं लड़वा लागो, ने धणी यूं विचारी के अबे विभीषण जो भेद नी बतावे, तो हजार राम शूं पण नी हारूं पे'लो अणी विभीषणने मारने म्हूं अमर व्हे'आवूं । यूं विचार धणी ब्रह्माजीरो दीधो थको भालो विभीषणपे जोर शूं अचाणचूकरो वाय दीधो । पण विभीषणने भगवान बचावाने झट रथपे शूं कूद आपणी चौड़ी छाती पे धणो भालाने झेल लीधो, राम भगवान रे यो भालो लागो । जींशूं थोड़ाक अचेन व्हे'गिया हा। अणी भालारो यो सुभाव हो जणी रे अणी भालारी लाग जाती वो मर जातो । पण अणी भालारो यो पण सुभाव होके जो ईंने परोपकारी मनख पे वावे तो यो भालो वावा वाळारी ऊमर ले'ने ब्रह्मलोक में परो जावे । अश्यो ईंने वरदान हो जींशूं अणी राम भगवान ने परोपकारी जाणने रावण री ऊमर नष्ट कर ब्रह्मलोक में परो गियो । अबे तो विभीषणरा मनशूं भाईरी ममता निकळ'गी ने जगत बन्धु राम भगवानने अर्ज कीधो के अणी दुष्टरे डूंठी में अमृत है सो वो अमृत नी सूखे'गा जतरे ईंरी कई नो विगड़ेगा । य शुणनांही राम भगवान झट अग्नी बाण ले'ने रावणने हुकम कीधो, हे साधु ब्राह्मण रा वैरी रावण, अबे सावचेत व्हे'जा

यो म्हारो बाण थारो प्राण लेवे है । रावण भी नराई बाण चाया, पण रामरो बाण तो वणींरी डूंठी में घुस ने कोठीरा खेणा शरीलो खाड़ो पाड़ही नाख्यो, ने मतीरारी पोट विखरे ज्यूं वणींरा माथा बखेर नाख्या, ने बीस बाण बायने बुवारीरा टींडका ज्यूं बीसही हाथ न्यारा न्यारा फेंक दीधा । यूं आपणा हाथांरी आगत निशाणा पे ठीक लागवारो अभ्यास भुजांरो जोर देखवावाळावो देखता ही रे'गिया, ने रावण मंगरा रा माथा री नांई धूजने धरतीपे धमाक दे तीरो पड़गियो । अवेतो चारही कानी शूं राम भगवान री जैजैकार व्हेवा लागी, ने नजर नक्करावळा व्हेवा लागी, ने या खबर लंका में पूगतांई सब राणशण्यां रोवती कूटती वठे आई । मेघनाद री वहू तो सती व्हे'गी । दूजी रोय रींख पाछी घरे गी' । वणी वगत रावणरी राणी मंदोदरी राम भगवानने अरज कीधी के कोईतो अणांने रोवावाळो वाको राख्यो व्हे'तो जदी भगवान हुकम कीधो अज्ञानरी वातां रावणरो रोज है, सो बरोबर संसार रेवेगा, जतरे अज्ञानो ईने रोवताहो रेवेगा । पछे विभीपणजी ने हुकम कीधो सो वणां रावणरी क्रिया काण्टा कीधी, ने दूजां राणशांरी भी कराई । पछे राम भगवानरा हुकम शूं लक्ष्मणजी और सुग्रीव सब जणां जाय विभीपणजी ने लंका री गादी वैठाय दीधा । जदी विभीपणजी जानकी माताने वड़ा आदर शूं श्रीरामभगवान विराजता वठे पधराया । वणी वगत राम

भगवान हुकम कीधो, जानकीजीने पेदल ही लावो । क्यूंके म्हारी सब फोज जानकीजीने देखणो चावे है। जदी सीतामाता म्याना में शूं उतर पैदल पैदल भगवान विराज्या चठे पधारया, ने सब वांदरा और रीछां झुक झुक ने मुजरा कीधा सो सीतामाता वारणा लेवाया ने लक्ष्मणजी झट दौड़ने चरणां में धोक दीधी, ने घणा राजी व्हिया । सीतामाता हुकम कीधो लालजी आपरो अपराध कीधो जणीरो में दुख भुगत लीधो । जदी लक्ष्मणजी अरज कीधी अपराध तो म्हारो है, के रीशमें फइरी-कइ अरज करायगी' । पण ईरो म्हने तो कई विचार नी है । क्यूंके छोरू करोड़ अपराध करे तो भी माईत तो दयाहीज करे है । अबे श्रीराम भगवान रा नराई दिना शूं दरशण व्हिया । जीशूं श्रीभगवानने और सीताजीने अरयो श्रानन्द व्हियो, सो कई वात करे । यूंही याद नी श्रावे । अबे श्री सीतारामरी जुगल जोड़ीरा सब जणां दर्शण कर आपरा धन धन भाग मानवा लागा । अबे राम भगवान हुकम कीधो अठे लच्मण इन्द्रजीत ने मारयो ने शक्ती शूं घायल व्हियो वणी दांण हनुमान श्रौर जामवंतरी राय शूं औपद कीधी । अठे अणां रींछने वांदरा थांरे वास्ते प्राण झांक झोंकने लड़ाई कीधी, ही वणी वगत सब जणां कियो म्हांरे वास्ते ने आखा संसाररे वास्ते आप और सीतामाता कतरा कतरा दुःख देख्या । म्हें आपरी कई चाकरी कर शक्या । यातो श्रीसीता-

मातारी दया है । पछे सब देवता और ऋषियां सीतारामरी स्तुति कीधी । वणी वेळां विभीषणजी अरज कीधी, लंकारी विजय व्हीं है सो फौजने लंका लूटवारो हुकम व्हे' जावे। जदी भगवान हुकम कीधां लंका तो थणारीज है अबे कई लूटे । जदी विभीषणजी लंकामें शूँ गे'णा, गांठा, कपड़ा, लायने सबांने पेराय ने खूब पकवान बैठाय बैठायने जीमाया ने अरज कीधी, अबे लंका में विराजने. अणी दास पे करपा करावे । जदी भगवान हुकम कीधो अबे काले भरत नखे नी पूगणी आवेगा, तो भरत भाई प्राण छोड़ देवेगा, ने अयोध्या छेटी है जीं शूँ वठे जावारो कईंक उपाय करणो चावे । जदी विभीषणजी अरज कीधी के पुष्पक विमाण घणो तेज़ चाले है सो वणी में विराजने काले-रो-काले पधारबो व्हे' शके है। पण एक रात ही लंका में विराजवो व्हेवे तो लंका पवित्र व्हे'जावे । जदी भगवान हुकम कीधो हाल चवदा वर्ष में एक दिन फेर बाकी है, जतरे नगरी में म्हने नी जाणो चावे, ने भरत दुःख देखे जतरे म्हने भी सुख नी करणो। अणीं वास्ते भाई विभीषण म्हने क्षमा कर। जदी विभीषणजी सब फौजरी घणी खातरी कीधी, ने विमाण लाया, सो सीताराम वणीपे सवार व्हेवाय गया, ने पछे लछमणजी सुग्रीवजी जामवंतजी आदि बांदरा भी वणीमें बैठ गिया । पछे विभी-षणजी ,वणीपे बैठने राम भगवानरा हुकम परमाणे विमाण ने

चलावा लागा, ने हनुमानजीने आगे अयोध्या में वधाई देवाने भेज दीधा । श्रीराम भगवानरा हुकम शूँ विभीषणजी विमाणने चलायो । पे'लो तो विमाण धरती परशूँ ऊंचो चढ़यो पछे अयोध्यारी कानी जोर शूँ दौड़वा लागो । वणी वगत श्रीराम भगवान सीताजीने हुकम करवा लागा देखो, यो विमाण कश्या वेग शूँ दौड़ रियो है, जाणे लंकातो भाग री' है, ने समुद्र साथे साथे दौड़ रियो व्हे' ज्यूं दीखरियो है । सीताजी हाथ जोड़ने अरज कीधी समुद्ररे वचे रींगटो रो रींगटो कईं दौड़ रियो है । जदी भगवान हुकम कीधो या नल नील पुळ बांधी है । अणीपे व्हे'ने हांज सब फौज पार व्ही' ही और यो श्रीशंकर भगवान रो मन्दिर है । जदी श्रीसीतामाता हाथ जोड़ महादेवजीरे नमस्कार कीधो और भगवान हुकम कीधो यी धोळा धोळा मे'ल'दीख रिया है, या अणां सुग्रीवजीरी नगरी है । जदी लक्ष्मणजी अरज कीधी अठा रा वाली नामरा बड़ा वली राजा ने एक हीज वाण में भगवान मार न्हाख्यो हो । वणी वाली, रावण ने भी कांखमें दवाय लीधो हो । जदी सुग्रीवने विभीषणजी भी अरज कीधी या किष्किन्धाने लंकातो आप रीज है, ने म्हेंतो आपराहीज सेवक हां । पछे भगवान हुकम कीधो, अठे शवरी भीलण मिली ही । वणीं म्हांरो घणों आदर मान कीधो हो।या वावड़ी यो गढ़ है ने यो पञ्चवटी रो वन दीखवा लाग गियो । अठे गिद्धराजरी क्रिया

कीधो ही या शुण सीतामाता रे आखां में शूँ आंशूँ पड़वा लाग गिया, ने हुकम कीधो, हे दाना पिता गिद्धराज, म्हारे वास्ते थां प्राण छोड़ दीधो हो। ओ हो म्हारे वास्ते कतरा कतरा महात्माने कतरा कतरा दुःख देखणां पड़्या। जदी जामवंतजी अरज कीधी आपरे वास्ते कणी भी दुःख नी देख्यो। पर आपरा नाम शूँ सैंकड़ा रा जनम सुधर गिया। भलां रींछड़ा बांदराने पापी पखेरू रो श्राप नी व्हे'ता तो उद्धार कूंकर व्हे'तो, ने आगे भी आपरा चरित्र विना संसार कणीं गेले चालतो। अणीं शूँ आखाही संसाररा जनम जनम रा दुःख मिट गिया। भगवान हुकम कीधो यो वो हाथी रो बचो म्होटो व्हे' गियो, दीखे है ने यो वो हीज मोर दीखे है, या पंचवटी भी आय गी'। साधुवांरा, आश्रम दीखवा लाग गिया। जदी सबां वणांरे धोक दीधी, ने विमाण आगे निकळ गियो सो चित्रकूट पे व्हे'ने एक समचे आगे वध गियो। वठे शृङ्गवेरपुर में निषादराज सब बाळ बच्चा सेती बाट न्हाळ रियो हो। वठे विमाण ने उतारवारो हुकम व्हियो। जदी विभीषणजी विमाण ने नीचे उतारयो। झट विमाण शूँ उतर भगवान निषादराज ने छाती शूँ लगाय ने मिल्या, ने सुग्रीव विभीषण आदि शूँ वणांने वाकब कीधा, ने सीतामाता निषादराजरी मातारे पगां लागा, ने भरतजी शूँ मिलवारी आगत है, यूं के'ने सब पाछा चढ़ने विमाण ने आगे दौड़ाया।

वणी वगत सीताजी छेटी शूँ देखने हुकम कीधो यो धूळो कई उड़ रियो है। जदी लक्ष्मणजी अरज कीधो दादाजीने सब अयोध्या वासी सामा पधरावता दीखे है, ने या सरयू- नदीने वी अयोध्या रा महल ने वगीचा भी दीखवा लाग गिया। अतराक में नराई आदमी तो पाछे पाछे आय रिया ने आगे आगे एक दाना साधुने वणांरे पाछे एक फेर मोट्यार नजर आया। सीतामाता हुकम कीधो अणांमें वड़ा लालजी कठे है, जदी लक्ष्मणजी अरज कीधी ई आगे आगे वशिष्ठजी पधार गिया है, ने वणांरे पाछे सुमंत्रजी आय रिया है, ने ई राम भगवानरे ने म्हारे साथे खेलवा वाळा म्हांरा मित्र आय रिया है, ने वी वठीने माताने भाभीजी ने बहू श्रुतकीर्ति ने आपरे सखियां विमाणरी कानी देखता देखता आगता आगता आय रिया है। ई छोटा छोटा छोरा छोरी घणाव करकरने किलकारियां करता आय रिया है। जाणे आज अयोध्या में पाछो जीव आय गियो है। सीतामाता हुकम कीधो बहूजी और लालजी ने चैनांने अयोध्यावासी अश्या दूबळा व्हे'गिया, जो धार धार ने देख्यां विना ओळखणी ही नी आवे। पण चैन मांडवीने श्रुतकीर्ती रे वचे या कूण है, वणी वगत भग- वानरा हुकम शूँ विमाण नीचे उतरयो ने सब जणा वेवाण शूँ उतर पैदल पैदल दौड़ने गुरुजी वशिष्ठजी रे धोक दीधी। गुरु वशिष्ठजी माथा पे हाथ मेल सबांने आशीश दीधी।

फेर छोटा बड़ा सब एक एक शूँ मिल्या, । वो प्रेम कठा तक के'णी आवे । चवदावर्ष चवदाजुग वचे भी वत्ता निकल्या हा । आज पाछा रामचंद्र रा दरशण कर सबां रे हरपरो पार नी रियो । भगवान सबांने सुग्रीव विभीषण जामवंतजी शूँ याकब कीधा, ने अणांने भी आपणा मित्र गुरु, मन्त्री, भाई, माता, शूं वाकब कीधा । अबे वी आपस में एक एक शूँ मिले, ने एक एकरी बड़ाई करे । यूं बड़ा आनंद शूँ सब अयोध्या में पधारया ने शुभ मौरत में श्रीरामरे राज तिलक व्हियो । और बड़ो उच्छब व्हियो, ने अबे अयोध्या पाछी हरी भरी व्हे'गी' । जणी जगा' राम राज करे वणी जगा'रा सुखरी कई के'णी आवे । सब संसार में राम राज शूँ सुखही सुख छाय गियो । नरकांरो तो गेलोही ऊजड़ व्हे'गियो । अणी तरेशूँ श्री रामचन्द्र आनन्द शूँ राज करवा लागा, ने संसार सुखी व्हे'गियो । परमात्मा जणी वास्ते आप अवकाई देख मनखां रो रूप धारण करने उपदेश कीधो, वो उपदेश आखा संसार में फेलगियो । जगा' जगा' मनखने लुगायां श्रीराम रने सीताजी री कथा करवा लागा, ने यूं घर घर में सीताने रामरा चरित्ररी चरचा कर आखो संसार सुधरवा लागो, यो राम चरित्र कई है मानव मात्ररो मित्र है ।

अनेभी अणी मुजब आपरा चरित्र राखेगा वणांपे
मानव अवतार धरना वाळा साक्षात्
श्रीसीताराम परमात्मा प्रसन्न व्हेगा।

इति श्री मानव मित्र रामचरित्र रा निजय
चरित्र समाप्त हियो।

इति श्रीमानव मित्र राम चरित्र समाप्त।

अरज

विजयचरित्र तक तो रामायण महाराज साहब लिखी ने आगे, जणी तरे' वाल्मीकजी लंकाकाण्ड तक बणाय ने हीज छोड दीधी, यूं ही आप भी छोड दीवी। परंतु कुछ मित्रां रो आग्रह व्हियो, के अगर उत्तर चरित भी अणी रे साथ जोड दियो जायगा, तो राम भगवान् रा अवतार शूं लेय, ने पाछा वैकुंठ धाम पधारवा तक रो पूरो रामचरित्र आय जायगा।

अबे म्हारो या नालायकी भक्तगण ने दाय नी लागे तो भले नी वांचे, ने राम भगवान् रो गुणगान समझ वांचवा री दया करे तो वणां री बलिहारी है। या नालायकी कर तो काढ़ी।

गिरिधर लाल शास्त्री।

॥ श्री हरिः ॥

उत्तर चरित्र ।

राम भगवान् रागशां ने मार सिंहासन पर विराज अयोध्यारो राज करवा लागा। अवे तो अयोध्या नगरी रा घर घर में वधावा गावा लागा। रामचन्द्रजी रो यो प्रण हो, के चावे सनेह टूट जावे, चावे दया चली जावे ने चावे प्राण-प्यारी सीता ने ही छोडणी पड़े, तो पण म्हूं यो सब करवाने त्यार हूं। पर म्हारो प्रजाने कणी वात रो दुख नी व्हे'णो चावे-वा सदा ही आनंद में रे'णी चावे। वणी री सुख दुख री वातां जाणवा रे वास्ते हीज राम भगवान् कतरा ही जणां ने नोकर राख लीधा हा। सो वी आय ने शे'र री भली बुरी सब वातां रामचन्द्रजी ने अरज कर देता हा। वणी में एक भद्रमुख नाम रो हलकारो हो। एक दिन वणी आय ने खबर दीधी के अन्नदाता, लोग केवे है, के सीताने रावण पकड़ ने ले गयो हो। दस अग्यारा महीना तक वणीरा घरमें री' ने अब रामचन्द्र पाछी लायने आपणा घरमें राख लीधी। आज तो राजारी राणी गी', ने काले म्हांरी लुगायां भी परी जायगा, ने पाछी आवा पर म्हांने पण वणां ने राखणी हीज

पड़ेगा। राम, या आछी नी कीधी। राजा व्हे' ने अश्यो अधरम रो काम करणो जोग नी है। पण वी तो बड़ा है, सो वणांने कृण केवे। अश्यो काम छोटा करे, तो पण मारया जाय ने बड़ा री बातां डुलले तो पण मारया जाय। शिव! शिव!! आज राजा दशरथ याद आवे है। आज वी जो व्हेता' तो अश्यो अनरथ नी व्हे' शकतो।

या बात शुणतां ही भगवान् सुन्न व्हे' गया। थोडीक दांण केड़े आपणां तीन ही भायां ने बुलाय ने कियो, के 'लंका में सीता अग्नि री ने सब देवतां री साखी देवाई, जदी तो म्हूं वींने अंगीकार करने अयोध्या में लायो। पण अठारा लोग फेर वणी पे दोष लगावे है, के रावण रा घरमें री' थकी सीताने राम राख लीधी। प्रजाने राजी राखणो म्हारो धरम है, सो म्हने अब एक यो-हीज उपाय दीख्यो है, के सीता ने गंगाजी रे पेले पार तमसा नाम री नदी रे तीर पर वाल्मीकजी रा आश्रम में छोड़ आवणी, या बात सीता पण चावे है। क्यूं के म्हें एक दांण वणी ने कही, के थूं गर्भवती है सो कणी बात री मनमें राखे मती, जो चावे सो कीं'जे ने जो इच्छा व्हे' वो मांगजे। क्यूंके गर्भवती लुगाई चोरी चकारी करने छाने खावा पीवा री इच्छा राखे ने आपणा पति रा पास शूं नी मांगे, तो पछे वणी रो बाळक के'क तो चटोरो व्हे'ने के'क चोर व्हे'। वणी वगत वणी कही

के, हे प्राणनाथ ! म्हारी इच्छा एक दांण फेर गंगामाता रा, ने मुनिराजां रा दरशण करवा री लाग री' है। सो अब एक पंथ दो काज व्हे' जायगा। सो हे लच्मण थूं जाय ने सीता ने वन में मेल आव। अणी में हां-ना कुछ नीं करणो।'

या शुणतां ही लक्ष्मणजी रा हाथ पग ठंडा पड़ गया। पण कर कई शकें। भावी प्रबल है।

थोड़ी देर बाद बड़ा भाई रा हुकम री तामील करवा रे वास्ते लक्ष्मणजी सुमंत्रजी ने रथ लावा रो हुकम कीधो। पछे जाय ने सीतामाता ने अरज कीधी, के 'आप दाताजी ने या बात की' ही के एक दांण फेर म्हूं गंगाजी रा, ने मुनिराजां रा दर्शण करणो चाऊं हूँ, सो अबे पधारो।' सीता माता या शुणतां ही त्यार व्हे' गया। पण जावती वगत वणां री जीमणी आंख फरकवा लागी, ने अपशुकन व्हेवा लागा। जदी तो वार वार देवतां शूं वीनती करवा लागी, ने लक्ष्मणजी ने केवा लागी के लालजी, आज म्हारी जीमणी आंख क्यूं फरके है, या कई करेगा, कई अबे तो राम भगवान् शू विछड़ा नी व्हे' जायगा ?' पछे रथमें बैठ सीतामाता लक्ष्मणजी रे साथे वनमें पधार गया। जगा' जगा' मुनिराजां रा दर्शण करता करता गंगाजी रा तीर पर पहुँच गया। वठे गंगाजी में स्नान कर नावमें बैठ पेले पार उतरया। वठे रथमें शूं नीचा उतार लच्मणजी सीतामाता ने अरज कीधी, के अठे पासमें

ही मुनिराज वाल्मीकजी रेवे है । आप आपरो मन लागे जतरे री' ज्यो । थोड़ा दिन वाद म्हूं पाछो आय ने आपने ले जाऊंगा ।' जदी सीताजी हुकम कीधो-'लालजी, घणा दिन तो लगावो मती वा । पाछी म्हने झट हीज समाळ जो । आप रे दादाजी ने अरज करजो सो म्हने झट परो ले जाय ।' लच्मणजी अरज कीधी, के 'दादाजी ने म्हूं अरज तो करदूंगा, पण —।' सीताजी रा मनमें संदेह व्हे' गयो । वणां पूछी, 'लालजी, अणी 'पण' रो कई मतलब है ? आप कें'ता के'ता ही क्यूं रुक गया । कई आपरा दादाजी अब म्हने कदी ही नी बुलावेगा ? आप ने म्हारा जीव री सौगन है । बात सांच सांच व्हे' जो के' दो ।' या शुणतां ही ने तो लक्ष्मणजी रो मूंडो छूट गयो । दोही हाथ मूंडा आड़ा दे, नीचो माथो कर ने झळक झळक डशूका भरवा लागा । जदी तो सीताजी ने निश्चय व्हे' गयो, के बात कई-क-ने-कई-क दूजी है । पछे गाढ़ी छाती कर ने सीतामाता हुकम कीधो, के'हे लक्ष्मणजी, अतरा घवरावो क्यूं हो । कई आप रा दादाजी म्हने वन में छोड़वा रे वास्ते आपने कियो है - के और कोई बात है । घवरावो मती, ने साफ साफ समझाय, ने म्हने को' ।' जदी तो लक्ष्मणजी अरज करवा लागा, के 'दादाजी साव या जाणे है के आप शुद्ध हो, ने अगनीरा सौगन, खाय ने भी आप लंकामें सब ने विशास कराय दीधो । पण अठारा लोग ,या बात नी

जावे, सो वी कारारूरी करे हैं। मूंडो कणोरो पकड़ शको। दादाजी ने आपने कणी या अरज कर दीधी सो वणां आपने वाल्मीकजी रा आश्रम में मेल आवारो हुकम कीधो है। अबे आप रीजो, ने म्हूं पाछो, जाऊँ हूँ।' जदी सीतामाता हुकम कीधो, के 'अतरीक वात रे वास्ते आपने अतरो सोच पड़ गयो। म्हारो तो जनम होज वनमें व्हियो, वनमें होज आपरा दादाजी रे साथ पण, री' ने अब फेर वनमें रेणो पड़ेगा, या कई वड़ी वात है ? म्हने तो माता अनुसूयाजी रो उपदेश है, के पति रा हुकम री तामील बराबर करणी, नी तो नरक में जाणो पड़े है। लालजी अब आप जावो-म्हने अठे छोड़ जावो। वनमें रेवामें म्हने कोई अवखाई नी है। पण, मुनिराज जदी म्हने पूछेगा, के सीता, थने देशनिकालो क्यूं व्हियो, तो म्हूं वणां ने कई जवाब दूंगा, यो शोच थोड़ोक सो है। विचार व्हे' के अणी शरीर ने छोड़ होज देणो। परंतु करूं कई ! हाल तक यो पेट०—खैर, लालजी अब आप जावो। आप राजा रा हुकम में रीजो। राजा ही सब रो मालिक है। बोलतो देवता है। सब सासुवां रे चरणां में म्हारो पगे लागणो अरज करजो। आपरा भाई ने अरज करजो, के आप सावधानी शूं प्रजारो पालन करजो। या तो आप जाणो होज हो, के म्हूं शुद्ध हूँ। तो पण, प्रजा ने राजी राखवा रे वास्ते म्हने छोड दीधी सो ठीक होज व्हियो। क्यूं

के म्हने छोड़तां ही आप रो कलंक मिट जावे, तो अणा सिवाय आपरी सेवा म्हारा शरीर शूँ और कई व्हे' शके है। आप म्हारे वास्ते समंदर रे ऊपरे पाळ बांधी, बाँदरां शूँ मित्रता कीधी ने लंकामें आयने बड़ा ही बळवान् रावण सरीखा राजा ने मारयो ने म्हने वणो दुख शूँ छुड़ाई। हे विधाता, जनम जनम अणा सरीखा हीज पति मिलजो।' या कें' ने सीतामाता झुर झुर रोवा लागा। यूं रोवती थकी सीताजीने छोड़ने लक्ष्मणजी रथमें बैठ पाछा अयोध्या में पधार गया। ने जायने रामभगवान् ने सब अरज कर दीधी।

सीतामाता रो रोवणो शुण ने मुनिराज वाल्मीकजी, वणां रे पास आय ने केवा लागा। 'हे पतिव्रता, थूं राजा दशरथ रा बेटा री वहू ने राजा जनक री कन्या है। थारी वात म्हारा शूं छिपी नी है, थूं शुद्ध है। धीरज धर। यो आश्रम थारो घर हीज है।' मुनिराज रा वचन शुण ने सीता माता ने गाढ़ बंधो ने वणां रे पाछे पाछे सीताजी आश्रम में पधारया। कुछ समय बाद वठे वणांरे दो जोड़ला बाळक व्हिया। जणांरो नाम कुश ने लव राख्यो। मुनिराज वणां ने भणाय पढ़ाय ने लायक वणाया—अस्त्र शस्त्र चलावा में खूब चतुर वणाय दीधा। पछे आपणी वणाई थकी पूरी रामायण पढ़ाई। सो वी दोही भाई वणी ने बड़ा राग शूँ गायां करता हा।

अठी ने राम भगवान् एक दिन एकांत में बैठा बैठा विचार कीधो, के म्हे राक्षसां ने मार मुनि लोगां रा दुख ने दूर कीधो, ने जानकी तक ने बनमें भेजने प्रजा ने राजी राखी। अब एक अश्वमेध यज्ञ कर ने देवतां नै प्रसन्न करणा चावे। सब मायां री, ने गुरु महाराज वसिष्ठजी री राय शूँ घोड़ो छोड्यो गयो ने सब सामगरी एकठी व्हेवा लागी। अब तो आय ने या बात अडी के यज्ञ, स्त्री रे बिना व्हे' नी शके है–जोडा शूँ बैठणो पड़े है। जदी कई करणो चावे। राम भगवान् सब शुण समझ ने हुकम कीधो, के 'म्हूं दूजो ब्याव तो करूंगा, नी, ने सीताने पण पाछी बुलावणी ठीक नी। सो म्हारी समझ में या आवे है, के सोना री सीता बणाय ने वणी रे साथ बैठ ने यज्ञ करणो।' या शुण सब जणा राम भगवान् री सराहना कीधी, के ई कतरा मरजादा रा पाका है। धन है।

यज्ञ रो नूतो मिलतां ही मुनिराज वाल्मीकजी भी दोई चेला लव कुश ने, ने सीतामाता ने साथ लेने अयोध्या में पधार गया। वठे जाय मुनिराज आपणां चेलां ने हुकम कीधो, के 'म्हारी वणाई थकी रामायण थां जगा' जगा' गावता फिरो। देखो, लोभ करो मती, ने कोई कई देवे तो लेजो मती। अगर थांने कोई पूछे के थां कणी रा बालक हो, तो की' जो के म्हां मुनिराज वाल्मीकजी रा चेला हां।'

रामायण गांवारी तारीफ शुण ने राम भगवान् भी वणां दोयां ने आपणे पास बुलाय ने शुणवा लागा। वणी वगत सब लोगांरा मूंडा शूं या हीज निकळनी ही के 'अरे अरे अणां रो सरूप तो राम भगवान् शूं मिलतो-जुलतो है। कई ई सीतामाता रा कंवर हीज तो नी व्हे'गा ?' पछे राम भगवान् वणां ने पास में बुलाय ने कुछ देवा लागा। पण वणां कई चीज नी लीधी। जद राम भगवान् पूछ्यो के 'यो काव्य कतरो बड़ो है, ने अणी में कई कई बात लिखी है, और अणीने वणायो कणी है ?' वणां पाछी अरज कीधी, के 'हे महाराज, अणी ने मुनिराज वाल्मीकजी वणायो है, ने वी भी आज काल अठे हीज विराजे है। अणीमें आपरो पूरो चरित लिख्यो है।' या के' वी दोई भाई मुनिराज रे पास चल्या गया। राम भगवान् अबे तो समझ गया, के ई दोई जरूर सीता रा हीज बालक है। कुछ विचार ने मुनिराज ने अरज कराई के, 'अगर सीता सौगन खाय ने सबां ने विशास कराय देवे तो म्हूं वणीने पाछी बुलावा ने तयार हूं।' या शुण ने मुनिराज घणा राजी व्हिया, ने केवाई के 'काल परभाते सब ठीक व्हे' जायगा।' रात बीत'गई। परभाते भरी सभामें जाय ने मुनिराज किधो, के, 'हे राम, थें लोगां रा अपवाद रा डर शूं सीता ने मनमें छोड दीधी। या बिलकुल शुद्ध है। आज तक पतिव्रत धरम रो पालन कीधो है। म्हूं सौगन खाय ने केऊं हूं के

अगर सीतां में कोई तरे' रो पाप व्हे' ने म्हूं चणी ने छुपावतो व्हेऊं, तो म्हारा आज तक रा कीधा थका तीरथ व्रत चरथा है। म्हने तपस्या रो फळ मिलो मती। अब सीता भी अणी वात री साखी देवाय देवेगा। सावधान व्हे' ने शुणो। ई दोई बाळक पण सीता रा हीज है।'

राम भगवान् अरज कीधी, के 'आपरो हुकम सांचो हीज है। लंकामें अणी, अगनी रे सामने सौगन खाधा, जदी तो म्हें राखी। परंतु मूंडो कणीरो पकड्यो जाय। अब फेर सबां रे शुणतां सौगन खाय लेवे तो म्हूं पाछी अंगीकार कर लूंगा।' या शुण सीतामाता भरी सभामें ऊभी व्हे' ने केवा लागा' के 'हे धरती माता, अगर म्हें राम भगवान् सिवाय दूजा कणी रो ही मनमें विचार नी कीधो व्हे' तो थूं म्हने थारा में समाय लेवे। अगर म्हे' मन-वचन-काया शूं अणां रो हीज आसरो जाण्यो व्हे' तो हे मां थूं म्हने थारा में जगा' दे दे। हे मां अगर म्हूं बिल्कुल शुद्ध हूं तो अबे देर करे मती, झट ही ले लेव।' या केतां ही धरती व्यार दे दीधो, ने सीतामाता वणीमें समाय गी'। सब जणा दंग रे' गया ने धन धन करवा लागा।

सीताजी धरतीमें समाय गया। या देख राम भगवान् रो मन उदास व्हे' गयो। वी के'वा लागा 'धरती माता, थें म्हारी सीताने समाय लीधी है, तो पाछी निकाळ दे। अथवा

म्हने पण वणीरे पास पोंचाय दे। अणी तरे' शूं घररावता थका देख ब्रह्माजी केवाई, के 'आप कूण हो, ने क्यूं आया हो, अणी रो विचार करने शोचने छोड दो। रोवां रींकवा शूं कई व्हे'गा नी। अरे तो जो करणो व्हे' वो करलेणो चावे दिन नजीक होज है।' ब्रह्माजी रा वचन शूं राम भगवान् ने कुछ धीरज बंधी। अणी तरे' रामजीने राज करतां करतां इग्यारा हजार वरष वीत गया।

एक दिन काळ तपसी रो रूप धर ने आयो ने एकांतमें वात करणो चायो। तपसी कियो, 'आपां दोयां रा वात करतां अगर कोई आय जावेगा, तो वणी रो माथो उटाय दियो जायगा।' जदी राम भगवान् लक्ष्मणजीने दरवाजा पर वैठाय ने हुकम कीधो, के 'कोई आवा नीं पावे। अगर आय जावेगा, तो वणीरो माथो उड़ाय दियो जायगा।' पछे एकांत में राम भगवान् तपसी शूं वातां करवा लागा। तपसी कियो, 'म्हूं काळई, ने ब्रह्माजी रो भेज्यो थको आयो हूं। वणां केवायो है, के आप जणी काम पृथ्वी पर पधारया, वो काम सब व्हे' गयो। पाछो आपने आपणा धाममें पधारणो चावे।'

होणहार मिटे नी है। अतराक में महाक्रोधी मुनिराज दुर्वासाजी आय ने लक्ष्मणजीने कियो के 'अबार-री-अबार म्हने राम शूं मिलाय दे, नी तो श्राप देने थारा सारा राज ने नाश कर दूंगा।' लक्ष्मणजी दुविधा में पड़ गया। भाई रे

पास जावे, तो खुद मारथा जावे, ने नी जावे तो आखो राज नाश व्हे' जावे । जदी तो आपणो मरणो हीज ठीक समझ लक्ष्मणजी राम भगवान् रे पास गया। वणी वगत वातां व्हे' चुकी ही। राम भगवान् काळ ने विदा कर "लक्ष्मणजी ने हुकम कीधो, 'भाई अब आपां ने बिछड़णो पड़ेगा। म्हूं कई करूं। या धरम री वात है। आज म्हारा हाथ शूं यो अनर्थ व्हे'णो चावे है। ईश्वर री अशी हीज मरजी है। या के' भगवान् हुकम कीधो, के बड़ा आदमी ने मारणो ने देश-निकाळो दे देणो दोई बराबर है, सो म्हूं देशनिकाळो थने देऊं हूं।' या शुणतां ही लक्ष्मणजी घर में पगनी गया ने सूधा सरजू नदी रा तीर पर जाय समाधि लगाय ने बैठ गया। वणी वगत इंद्र आपणो विमान लेने आया ने लक्ष्मण जीने स्वर्ग में ले गया। पछे राम भगवान् दोई भायां ने बुलाय ने हुकम कीधो, के 'भाई लक्ष्मण री तरे' अब म्हूं पण जाणो चाऊं हूं। यो थांरो राज थां समाळजो।' दो ही भायां अरज कीधी, 'दादाजी साहब! आप परा पधारो तो म्हां अठे कई करां? आप ज्यूं म्हां भी।' पछे सब भायां रा ने आपणा लडकांने अलग अलग देशां रो राज दे, राम भगवान् दोही भायां ने, ने सारी प्रजाने साथ विमानमें बैठाय स्वर्ग धाममें पधार गया।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

शुद्धि पत्र

पानारी	ओळमें	है	चावे
३	११	क्षाणा	क्षणा
३	१८	झाग	मांग
४	२	देखाती	देखती
८	६	केता	के'ता
८	१०	ई ध्रू	ई
११	३	नार	ना' र
११	८	वादां	वातां
१२	७	मोटा नार	म्होटा ना' र
१४	६	नार	ना' र
१४	२०	धीरक	धीरप
१८	१३	मती	पती
१९	१९	मोटा	म्होटा
२०	८	मोटा	म्होटा
२३	१३	ग्रुण	गुण
२४	८	वे	व्हे'
२७	१६	म्हेल	मे ल
२७	१०	मोटी	म्होटी
२८	४	मोटो	म्होटो
३४	१	ह्रार्यरि सामो	हाथ्यां रे सामो
३६	१०	राजा जनक	राजा जनक नै
३६	१४	क्षाणा	क्षणो
३८	१५	नार	ना' र

पानारी	ओळमें	है	चावे
३८	१७	नार	ना'र
३९	१५	नारी	ना'री
४०	६	वे'तो	व्हे'तो
४८	१५	बालणो	•बोलणो
६२	११	आदयो	अदयो
६७	१७	आपर	आपरे
७७	२	फिर वा	फिरवा
७९	६	व्हे वारी	व्हेवारी
८०	९	मोटी	म्होटी
८३	१४	माचा	माचा
८९	२०	अरण्य	अणा
९३	११	बटो	बेटो
११०	१०•	दवा	देवा
११९	१७	वगा	वणो
११८	१२	मूं	म्हूं
११९	१	लका	रका
१२९	१६	मा	भो
१३२	१२	वे'ता	व्हे'ता
१३७	१३	रो	रा
१४४	१३	माथ रा	माया रा
१६४	१२	धीर धीर•	धीरे धीरे
१६८	१५	कळो	काळो
१७१	८	जाद	जदी
१७२	१७	भायो	मायो
,,	१८	,,	,,

पानागी	ओळमें	है	द
१७३	६	भायो	मा
,,	७	व्ही	वी
,,	१४	भाथो	मा
१७५	२१	ही	हो
१७७	१७	क्षर्णा	क्षणा
१८०	८	मिट नी'	मिट गी'
१८२	१३	दावन	दानव
१८६	११	व्हेवाय गया	व्हेय गया
१८८	२१	दौड़ाया	दौड़ायो

श्री दुर्गाजी याने समश्लोकी दुर्गासप्तशति ।

सज्जनों ! आपको विदित है कि संस्कृत ग्रन्थागार उदयपुर मेवाड़ द्वारा प्रकाशित पुस्तकें कितनी उपयुक्त हैं हमारे कार्यालयसे "द्विवेदी ग्रन्थमाला","कर्मकाण्ड ग्रन्थमाला", 'मेवाड़ी ग्रन्थमाला' द्वारा कई छोटे बड़े ग्रन्थ बराबर प्रकाशित होते रहते हैं और अल्प मूल्य में पाठकों को दिये जाते हैं वैसे ही छपाई शुद्ध व सुन्दर होती है। यदि इन ग्रन्थों के पढ़ने व देखने की इच्छा हो तुरन्त स्थायी ग्राहक श्रेणी में नाम लिखवा लीजिये। हमारे नये तथा पुराने स्थायी ग्राहकों को सब पुस्तकें पौने मूल्य में दी जाती हैं। जानकारी के लिये नियम तथा बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखें। तथा निर्णयसागर, वेंकटेश्वर, मुम्बई, कलकत्ता, मद्रास, पूना, मुरादाबाद, बनारस, लाहोर, बड़ौदा, प्रयाग लखनऊ तथा गीता प्रेस गोरखपुर आदि सभी पुस्तक प्रकाशकों की पुस्तकें हर समय उचित मूल्य पर तय्यार रहती हैं।

इसके अतिरिक्त नित्य कर्मोपयोगी सन्ध्या पूजा का सब प्रकार का जर्मन सिल्वर पीतल तथा ताम्र का सामान पंच हवनकुण्ड कुशासन, धूपबत्ती रुद्राक्षमाला खड़ाऊ राम तथा शिव नामी पछेवड़ी मुकटा पीताम्बर आदि हर समय तय्यार रहते हैं।

बहुत शीघ्र प्रकाशित होनेवाले ग्रन्थ।

उपनयन पद्धति।	अभिनव काव्यप्रकाश द्वितीयो भाग।
विवाह पद्धति।	शिवार्चन पद्धति सहिता रुद्राष्टाध्यायी।
समन्त्रक दशकर्मपद्धति।	न्यासध्यानसहितादुर्गासप्तशती।
अन्येष्टि कर्म पद्धति।	समयोचित पद्यसंग्रह।
हेमाद्रीप्रयोग।	मण्डलब्राह्मणम् टीकाद्वयोपेतम्।
समन्त्रक नवग्रहमख प्रयोग।	ब्रह्मनित्यकर्म प्रयोग।
वेदोक्त सर्वदेवपूजा प्रयोग।	वेदमाहात्म्यम् भाषाटीकोपेतम्।

संस्कृत ग्रन्थागार उदयपुर से प्रकाशित कुछ पुस्तकें।

काव्य प्रकाशः सटिप्पणः प्रथमो भागः पं० गिरिधर
नित्यानुष्ठान कर्म प्रयोग पद्धतिः पं० श्रीधनलाल शर्मा
त्रिकाल सन्ध्या प्रयोगः ,,
दानखण्डोक्त पुण्याहवाचन प्रयोगः ,,
क्षत्रिय त्रिकाल सन्ध्या प्रयोगः ,,
भूतशुद्धि प्राणप्रतिष्ठा सूत्रोक्त सन्ध्या ,,
सप्तशती न्यास ध्यान विधिः ,,
पितृतर्पण वैश्वदेव प्रयोगः ,,
क्षत्रिय गायत्री ,,
दुर्गासप्तशती (मेवाड़ी भाषा) पं गिरिधरलाल शास्
चन्द्रशेखर स्तोत्रम् मेवाड़ीसमश्लोकी सहित
स्व महाराज श्री चतुरसिंह जी कृत
चतुर चिन्तामणी तीनों भाग साधारण ,,
चतुर चिन्तामणी तीनों भाग उत्तम सचित्र ,,
श्री गीता जी मेवाड़ी समश्लोकी भाषाभाष्य ,,
महिम्न समश्लोकी ,,
अलख पचीसी ,,
मानव मित्र रामचरित्र वारता में सात काण्ड ,,
योगसूत्र टीका समेत ,,
परमार्थ विचार अनुभव प्रकाश ने हृदय रहस्य ,,

मिलने का पता—

१ संस्कृत ग्रन्थागार, चाँदपोल, उदयपुर (मेवाड़)
२ द्विवेदी भवन रायजी की ब्रह्मपुरी, उदयपुर (मेवाड़